संजीव नेवर

मांस नहीं माँ

गोहत्या पर हिन्दू प्रतिकार

HINDU'S FIGHT FOR MOTHER COW

(NOW IN HINDI)

मांस नहीं माँ
गोहत्या पर हिन्दू प्रतिकार

हिन्दू मांस नहीं माँ

गोहत्या पर हिन्दू प्रतिकार

जानकारी के लिए संपर्क करें

books@agniveer.com

पुस्तक आकार एवं संयोजन – रोनक त्रिवेदी

प्रथम संस्करण: मार्च २०१८

मांस नहीं माँ
गोहत्या पर हिन्दू प्रतिकार

: लेखक :

संजीव नेवर

: अनुवाद :

मृदुला

अनुवादक की कलम से...

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।

यजुवेद ३६/१८

हे परमात्मन्! आपकी कृपा से मैं भी निर्वैर होके सब भूत - प्राणी और अप्राणी - चराचर को मित्र की दृष्टि से देखूं, स्वात्म, स्व प्राणवत् प्रिय जानूं।

सृष्टि के उषः काल में मनुष्यों को दिया गया ईश्वर का अनुपम वरदान - वेद - हमसे कहते हैं कि हम सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखें, उन्हें स्व प्राणवत् प्रिय जानें। शायद काल के अन्तराल में हम ईश्वर की शिक्षाओं को भुला बैठे और इंसान की बजाए पिशाच बन बैठे।

आज जब सुबह होने से पहले ही लाखों-करोड़ों प्राणियों की जिंदगी की ड़ोर काट दी जाती है तो अपने मासूम निरीह बच्चों को यूं कत्ल होता देख धरती माँ का हृदय चीत्कार कर उठता है। उसके रुदन की सिसकियां, और उसके आक्रोश का क्रंदन कहीं बाढ़, तूफ़ान, भूकंप, सुनामी, ज्वालामुखी या कहीं किसी और रूप में बाहर आता है। क्या हो गया है हमें? ये कहां जा रहे हैं हम? अपने स्वार्थ की अंधी दौड़ में हम पशु-पक्षी, पर्यावरण और धरती का विनाश किए जा रहे हैं। महज़ अपनी जीभ के चोंचले पूरे करने के लिए हम इंसान के मुखौटे में राक्षस बन बैठे हैं।

मांस खाने वालों को जानवरों की तड़प, उसके दर्द, और उनकी आखों में दिखने वाले डर से क्या मतलब? उनको तो सिर्फ अपने स्वाद से मतलब है। शायद उनका दिल पत्थर हो गया है। किसी ने सही कहा है कि "कत्ल-खानों की दीवारें अगर शीशे की होतीं तो दुनिया शाकाहारी होती"।

मांस खाने वालों में भी गौमांस खाने वालों की एक अलग जमात है। अपनी

जिव्हा लोलुपता के पीछे पागल ये आधुनिक राक्षस, लाखों-लाखों लोगों की माँ - गौमाता - को निगलने के पीछे पड़े हैं। गौमाता को देखते ही इनकी लार टपकने लगती है। और इस प्रक्रिया में वे विशाल बहुमत वाले हिन्दूओं की आस्था पर प्रहार करने में शैतानी ख़ुशी का अनुभव करते हैं।

लेकिन अब इन राक्षसों का संहार करने के लिए हम ने भी कमर कस ली है और प्रतिकार स्वरूप इस किताब लिखी है। यह अब तक की पहली ऐसी किताब है, जिसने गौमांस प्रेमियों और मांस प्रेमियों को चारों खाने चित करने में कोई भी कसर नहीं छोड़ी है।

संजीव भाई के प्रबुद्ध मस्तिष्क से सृजित यह किताब इस संसार में अनन्य है। लेखक ने अपने बुद्धि कौशल, तर्क संगति और वैज्ञानिकता से मांस और गौमांस को ना कहने के सही कारण हमें बताये है और इंसानों को अपना इस जन्म ही नहीं बल्कि जन्म-जन्मांतर तक सफ़ल करने के उपाय बताए हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह किताब अपने लक्ष्य को सार्थक करेगी और गौभक्षकों के मुंह पर ताले जड़ते हुए तहलका मचा देगी। इस किताब का अनुवादन करने पर मुझे खुद पे गर्व है और मैं सभी से इस किताब को पढ़ने की और उसका प्रचार करने का निवेदन करती हूं।

मृदुला
वड़ोदरा

नोट: इस किताब में ‘गौमांस’ और ‘बीफ़’ दोनों ही शब्द प्रयोग किए गए हैं।

भूमिका

हमारी आत्मशक्ति का अक़्स कमज़ोरों के साथ किए गए हमारे व्यवहार में दिखता है। हिन्दू धर्म की आधारशिला 'वेद' कहते हैं कि "पशु हमारे मित्र हैं, भोजन नहीं"। यजुर्वेद के सबसे पहले मंत्र का अंतिम शब्द है – "पशून् पाहि" इसका अर्थ है कि पशुओं को मत मारो! वह प्राणी जो हमारी ही तरह हंसते हैं, रोते हैं, हमारे साथ खेलते हैं, हमारी ही तरह सुख और दुःख का अनुभव करते हैं, वे इस दुनिया में मांस, चमड़ा, फ़र, दांत, हड्डी आदि के लिए मारे न जाएं। ये जानवर भी अपना पूरा जीवन जीने का अधिकार रखते हैं।

वह प्राणी जो हमें अमृत जैसा दूध देते हैं, माँ की तरह हमारा पालन करते हैं, वे माँ के सामान ही प्रेम और रक्षा किए जाने योग्य हैं। इसलिए हिन्दू धर्म गाय को माँ के स्थान पर रखता है। पर दुर्भाग्य से मतान्ध उन्मादियों द्वारा गौमांस भक्षण के समर्थन में एक नफरत से भरी मुहीम चलाई जा रही है। उनके अनुसार गौमांस (बीफ़) इसलिए खाना चाहिए क्योंकि हिन्दू हमेशा से ही गौमांस खाते आए हैं और हिन्दुओं के धर्मग्रंथ भी गौमांस खाने का समर्थन करते हैं। कुछ की दलील है कि गौमांस का निर्यात हमारी अर्थव्यवस्था के लिए बहुत जरुरी हैं। कुछ का कहना है कि चूंकि ऐसे तो पेड़-पौधे भी दर्द महसूस करते हैं इसलिए गायों को भी मार कर खाया जा सकता हैं।

ऐसी बेवकूफ़ी भरी दलीलों और खोखले आरोपों की लिस्ट काफ़ी लंबी है। अगर एक झूठ को सौ बार बोला जाए तो वह सच तो लगने लगता है, पर वह सच नहीं होता।

इस किताब में पशुवध और गौमांस भक्षण से संबंधित सभी प्रश्नों, आरोपों

और दलीलों को बारीकी और गहराई से जांचा गया है। इस में वेदों से दिए प्रमाण और अचूक तर्क इसे अपनी तरह की एक अलग ही किताब बनाते हैं। इस किताब से आप लोग हिन्दू धर्म के सच्चे सन्देश को समझ पाओगे और हिन्दू धर्म को गलत तरीके से दिखाने वालों का मुंह भी बंद कर सकोगे।

यह किताब पिछले दस वर्षों के हमारी महेनत का नतीजा है, जिस का कुछ भाग समय-समय पर हमारे ब्लॉग पर प्रकाशित हो चुका है। आज तक कोई भी इस विषय पर हमारे तर्कों का जवाब नहीं दे पाया है।

"हिन्दू धर्म को जानें" इस श्रृंखला की यह पहेली किताब है, जो गौमांस भक्षण के सारे झूठे दावों को ख़त्म करती है। इस किताब के बाद हिन्दू धर्म के सच्चे स्वरुप को स्थापित करती कई और किताबे भी आने वाली हैं। हिन्दू धर्म के बारे में फैली हुई ग़लतफ़हमी को दूर करने में यह श्रृंखला पूरी तरह से मददगार साबित होगी और साथ ही यह आपको विश्वास भी दिलाएगी कि हिन्दू धर्म आपके और दुनिया के लिए सर्वश्रेष्ठ और अनमोल उपहार है।

हिंदुत्व ही एक मात्र ऐसा धार्मिक दर्शन है जो असहिष्णुता से रहित है, साथ ही चुनने की आज़ादी को भी बढ़ावा देता है। किसी मज़हब की रूढियों में खुद को ढ़ालने की बजाए हिंदुत्व आपको आज़ादी देता है कि तुम धर्म को खुद के अनुरूप बना लो। हिन्दू धर्म दो अनिवार्य आधारों पर टिका हुआ है –

- खुद के अन्दर बसने वाले सत्य की ख़ोज।
- दूसरी आत्माए जो अपने अन्दर छुपे सत्य की खोज करना चाहती है उसके प्रति उदारता दिखाना और उनकी सहायता करना।

हिन्दू धर्म में न कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती है, न कोई विवशता। न ईमान से डिगने का डर है, न मज़हब से बहिष्कृत होने का भय। न दोज़ख की आग है, न ईसाईकरण जैसा कोई एजेंडा। और न ही हिन्दू धर्म मानवजाति को ईमान वालों और गैर-ईमान वालों में बाटता है।

हिंदुत्व तो बस उदारता, करुणा और एक अच्छा इंसान बनने की तीव्र चाहना का नाम है। हिन्दू धर्म आपको हिन्दू या मुस्लिम बनने के लिए नहीं पर सिर्फ एक अच्छा इंसान बनने के लिए कहता है।

हमें आशा है कि यह श्रृंखला मानवता के सच्चे फ़लसफ़े को सबके सामने लाएगी, जिसे दुनिया आज भुला बैठी है। भौतिकवाद की अंधी दौड़, असहिष्णुता और उन्मत्तता के इस युग में यह समय की पुकार है। हमें विश्वास है कि आप को मानवता के उद्गम - हिन्दू धर्म - से एक नई दिशा मिलेगी।

इस किताब की बिक्री से मिलाने वाली धनराशी का उपयोग सच्चे हिन्दू धर्म के विस्तार के लिए किया जाएगा। इस किताब को लोगों में बांटें, उपहार में दें और मानवता की इस सेवा में हमें सहयोग दे।

“अगर हम धर्म की रक्षा करेंगे तो धर्म हमारी रक्षा करेगा”।

संजीव नेवर
नई दिल्ली, भारत

विषय सूची

भाग १: हिन्दू धर्म में गौमांस न होने के प्रमाण

अध्याय १

हिन्दू धर्म में गौमांस नहीं

मनुष्य से पशुताका व्यवहार है अधर्म। पशु से मनावताका व्यवहार है धर्म।

- अग्निवीर

इस किताब के पहले दो अध्याय वैदिक शब्दों के आद्योपांत और वस्तुनिष्ठ विश्लेषण पर आधारित है, जिस संदर्भ में वे वैदिक शब्द-कोष, शब्दशास्त्र, व्याकरण और वैदिक मंत्रों के यथार्थ निरूपण के लिए जरुरी कई और साधनों में प्रयुक्त हुए हैं। मतलब कि यह दो अध्याय मैक्समूलर, ग्रिफ़िथ, विल्सन, विलियम्स् और कुछ भारतीय विचारकों के वेद और वैदिक भाषा के कार्य का अन्धानुकरण नहीं है। पश्चिम के वर्तमान शिक्षा जगत में ये लोग काफ़ी मसहुर हैं। पर इन लोगों का कार्य सच्चाई से कोसों दूर है। और ये साबित करने के लिए हमारे पास कई कारण हैं।

उनके कार्य सिर्फ इसलिए प्रचलित हैं क्योंकि भारत के ब्रिटिश शासन काल में उनके कार्यों का बहुत प्रचार किया गया और क्योंकि जो भारतीय विद्वान संस्कृत जानते थे, वे अंग्रेजी नहीं जानते थे। हम इस पहलू पर भी यहां विस्तार से प्रकाश डालेंगे।

वेदों पर लांछन

हिन्दूओं के प्रमुख और पवित्र धर्मग्रंथ 'वेदों' में अपवित्र बातों के भरे होने का लांछन सदियों से लगाया जा रहा है। अगर इन आक्षेपों को सही मान लिया जाए तो पूरी हिन्दू संस्कृति, और उसकी परंपराएं और मान्यताएं सिवाय वहशीपन, जंगलीयत और क्रूरता के इलावा कुछ नहीं रह जाएंगी। वेद इस पृथ्वी पर ज्ञान के प्रथम स्रोत होने के साथ-साथ हिन्दू धर्म के मूल आधार भी हैं, जो सारी मानवजाति को कल्याणमय जीवन जीने के लिए मार्गदर्शित करते हैं।

वेदों की झूठी निंदा करने की यह मुहीम उन विकृत तत्वों ने चला रखी है जो अपने निजी स्वार्थ के लिए वेदों से कुछ चुनिंदा सन्दर्भों का हवाला देकर हिन्दुओं को दुनिया के सामने नीचा दिखाना चाहते हैं। हिन्दुओं के मूल ग्रन्थ वेदों में नारी की अवमानना, मांस भक्षण, बहुविवाह, जातिवाद और यहां तक की गौमांस भक्षण जैसे सभी अमानवीय तत्व मौजूद हैं एसा बता कर ये विकृत तत्व गरीब और अशिक्षित हिन्दुओं से उनकी मान्यता-ओं को छुड़वाने में काफ़ी हद तक कामियाब होते हैं।

इन लोगों को वेदों में आए त्याग और दान के अनुष्ठान के सन्दर्भों में, जिसे 'यज्ञ' भी कहा गया है, पशुबलि दिखती है। चौकाने वाली बात है कि भारत में पैदा हुए और पले-बढे बुद्धिजीवियों का एक वर्ग एक तरफ तो भारत की प्राचीन संस्कृति का गहन अध्ययन का दावा करता है, और

दूसरी तरफ वेदों में इन अपवित्र तत्वों को सिद्ध करने के लिए तथाकथित पश्चिमी विद्वानों का सहारा भी लेता है।

वेदों द्वारा गौहत्या और गौमांस को स्वीकृत बताना हिन्दुओं की आत्मा पर सीधा प्रहार है। गाय का सम्मान हिन्दू धर्म का केंद्र बिंदू है। जब कोई 'धर्मांतरण का विषाणु' हिन्दू को उसकी मान्यताओं और मूल सिद्धांतों में दोष या खोट दिखाने में सफल हो जता है, तब उस हिन्दू के मन में अपने ही धर्म को लेकर हीन भाव पैदा होता है और फिर उसे हिन्दू धर्म छोड़ने के लिए आसानी से बहकाया जा सकता है। भारत में ऐसे करोडो नादान हिन्दू हैं जिनको वेदों के बारे में कुछ नहीं पता। इसलिए वह वेदों पर लगाये गये लांछनों का जवाब नहीं दे पाते और धर्मांतरण के विषाणुओं के आगे समर्पण कर देते हैं।

जो वेदों को बदनाम कर रहे हैं वे सिर्फ पश्चिमी और भारतीय विशेषज्ञों तक ही सीमित नहीं हैं। हिन्दुओं में एक खास जमात ऐसी है जो जनसंख्या के सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े तबकों का शोषण कर उनको अपनी बात मानने और उस पर अमल करने पर मजबूर करती है। और अगर एसा न किया जाय तो उसके दुष्परिणाम भुगतने की धमकी देती है।

वेदों के नाम पर थोपी गई इन सारी जूठी बातों के लिए मध्यकालीन वेद-भाष्यकार महीधर, उव्वट और सायण द्वारा की गई व्याख्याओं और वाम मार्गियों या तंत्र मार्गियों द्वारा वेदों के नाम से अपनी पुस्तकों में चलाई गई कुप्रथाओं को जिम्मेदार ठहराना होगा।

एक समयकाल दरमियान यह जूठ सब जगह फैला और अपनी जड़ें गहराई तक ज़माने में तब कामियाब हुआ जब पश्चिमी विद्वानों ने संस्कृत की अधकचरी जानकारी से वेदों के अनुवाद के नाम पर सायण और

महीधर के वेद-भाष्य की व्याख्याओं का वैसा का वैसा अपनी लिपि में रूपांतरण कर लिया। जबकि वे वेदों के मूल अभिप्राय को सही अर्थ में समझने के लिए जरुरी:

- शिक्षा (स्वर विज्ञान)
- व्याकरण
- निरुक्त (शब्द व्युत्पत्ति शास्त्र)
- निघण्टु (वैदिक कोष)
- छंद
- ज्योतिष और
- कल्प के ज्ञान से पूरी तरह से शून्य थे।

अग्निवीर के आन्दोलन का उद्देश्य वेदों के बारे में ऐसी मिथ्या धारणाओं का वास्तविक मूल्यांकन कर उनकी पवित्रता, शुद्धता, महान संकल्पना और मान्यता की फिर से स्थापना करना है। जो सिर्फ हिन्दुओं के लिए ही नहीं बल्कि सारी मानवजाति के लिए बिना किसी बंधन, पक्षपात या भेदभाव के समान रूप से उपलब्ध हैं।

आइए जानते हैं कि वेद गौमांस और यज्ञ में पशुबलि के विषय में क्या कहते हैं-

वेदों में कोई पशु-हिंसा नहीं

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानत:

तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यत:

यजुर्वेद ४०/ ७

जो सभी प्राणियों में अपनी ही आत्मा को देखते हैं, उन्हें कहीं पर भी शोक या मोह नहीं रह जाता क्योंकि वे उनके साथ अपनेपन की अनुभूति करते हैं। जो आत्मा को अविनाशी समजते हों और पुनर्जन्म में विश्वास रखते हों, वे कैसे यज्ञों में पशुओं का वध करने की सोच भी सकते हैं? वे तो अपने पिछले दिनों के प्रिय और नजदीकी लोगों को उन जिन्दा प्राणियों में देखते हैं।

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रयविक्रयी

संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः

मनुस्मृति ५/५१

जानवर को मारने की आज्ञा देने वाला, उसको मारने के लिए लेने वाला, उसे बेचने वाला, उसे मारने वाला, उसके मांस को खरीदने और बेचने वाला, मांस को पकाने वाला और मांस खाने वाला, यह सभी हत्यारे हैं।

ब्रीहिमत्तं यवमत्तमथो माषमथो तिलम्

एष वां भागो निहितो रत्नधेयाय दान्तौ मा हिंसिष्टं पितरं मातरं च

अथर्ववेद ६/१४०/२

हे दांतों की दोनों पंक्तियों! चावल खाओ, जौ खाओ, उड़द खाओ और तिल खाओ। यह अनाज तुम्हारे लिए ही बनाए गए हैं। उन्हें मत मारो जो माता- पिता बनने की योग्यता रखते हैं।

य आमं समदन्ति पौरुषेयं च ये क्रविः
गर्भान्खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि

अथर्ववेद ८/ ६/२३

वह लोग जो नर और मादा, भ्रूण और अंड़ों के नाश से पैदा हुए मांस को कच्चा या पकाकर खातें हैं, हमें उन्हें नष्ट कर देना चाहिए।

अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये
मा नो गामश्वं पुरुषं वधीः

अथर्ववेद १०/१/२९

निर्दोषों को मारना महा पाप है। हमारे गाय, घोड़े और पुरुषों को मत मार। वेदों में गाय और दुसरे पशुओं के वध का स्पष्ट रूप से निषेध होते हुए, इसे वेदों के नाम पर कैसे सही ठहराया जा सकता है?

अघ्न्या यजमानस्य पशून्पाहि

यजुर्वेद १/१

हे मनुष्यों! पशु अघ्न्य हैं - कभी न मारने योग्य, पशुओं की रक्षा करो।

पशूंस्त्रायेथां

यजुर्वेद ६/११

पशुओं का पालन करो।

द्विपादव चतुष्पात पाहि

यजुर्वेद १४/८

हे मनुष्य! दो पैर वाले की रक्षा कर और चार पैर वाले की भी रक्षा कर।

वेदों में शैतान, दुष्टात्माओं के लिए प्रयुक्त कई शब्द ऐसे हैं जो कि मांस--भक्षक चाल चलन से उत्पन्न हुए हैं। उनमें से कुछ को देखते हैं -

- क्रव्य दा – क्रव्य (वध से प्राप्त मांस)+अदा (खानेवाला) = मांस भक्षक।
- पिशाच – पिशित (मांस) + अस (खानेवाला) = मांस खाने वाला।
- असुतृपा – असू (प्राण) +तृ पा (पर तृप्त होने वाला) = अपने भोजन के लिए दूसरों के प्राण हरने वाला।
- गर्भ दा और अंड़ दा = भ्रूण और अंड़े खाने वाले।
- मांस दा = मांस खाने वाले।

वैदिक साहित्य में मांस खाने वालो का तिरस्कार किया गया है। उन्हें राक्षस, पिशाच जैसी संज्ञा दी गई है जो दरिन्दे और हैवान माने गए हैं। और जिनकी गिनती सभ्य मानव समाज में नहीं होती।

ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे

यजुर्वेद ११/८३

“सभी दो पाए और चौपाए प्राणियों को बल और पोषण प्राप्त हो।”

हिन्दुओं द्वारा भोजन ग्रहण करने से पहले बोले जाने वाले इस मंत्र में प्रत्येक जीव के लिए पोषण उपलब्ध होने की कामना की गई है। जो दर्शन प्रत्येक प्राणी के लिए जीवन के हर क्षण में कल्याण ही चाहता हो, वह पशुओं के वध को मान्यता कैसे देगा?

वैदिक यज्ञ में कोई हिंसा नहीं

जैसी की कुछ लोगों की प्रचलित मान्यता है कि यज्ञ में प्राणियों कि जाती है वैसा बिलकुल नहीं है। वेदों में यज्ञ को "श्रेष्ठतम कर्म" या एक ऐसी क्रिया कहा गया है जो वातावरण को शुद्ध करती है।

अध्वर इति यज्ञानाम – ध्वरतिहिंसा कर्मा तत्प्रतिषेधः

निरुक्त २/७

निरुक्त या वैदिक शब्द व्युत्पत्ति शास्त्र में यास्काचार्य के अनुसार यज्ञ का एक नाम 'अध्वर' भी है। 'ध्वर' का मतलब है - हिंसा से किया गया कर्म। इसलिए 'अध्वर' का अर्थ अहिंसा से किया गया कर्म। वेदों में अध्वर के ऐसे प्रयोग बहुत देखने को मिलते हैं।

महाभारत के परवर्ती काल में वेदों के गलत अर्थ किए गए और दुसरे कई धर्म ग्रंथों के विविध तथ्यों को भी प्रक्षिप्त किया गया। आचार्य शंकर वैदिक मूल्यों की पुनः स्थापना में एक सीमा तक सफल रहे। वर्तमान समय में स्वामी दयानंद सरस्वती - आधुनिक भारत के समाज संस्कारक - ने वेदों की व्याख्या वैदिक भाषा के सही नियमों और योग्य प्रमाणों के आधार पर की। उन्होंने वेद-भाष्य, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका और दुसरे कई ग्रंथों की रचना कि। उनके इस साहित्य से वैदिक मान्यताओं पर आधारित व्यापक सामाजिक सुधारणा हुई और वेदों के बारे में फैली हुई

भ्रांतियों का निराकरण हुआ।

आइए यज्ञ के बारे में वेदों के मंतव्य को जानें –

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वत: परि भूरसि
स इद देवेषु गच्छति

ऋग्वेद १ /१/४

“हे दैदीप्यमान प्रभु! तुम्हारे द्वारा व्याप्त हिंसा रहित यज्ञ सभी के लिए लाभप्रद दिव्य गुणों से युक्त है और विद्वान मनुष्यों द्वारा स्वीकार किया गया है।”

ऋग्वेद में सर्वत्र यज्ञ को हिंसा रहित कहा गया है इसी तरह बाकी तीनों वेद में भी यज्ञ को हिंसा रहित कहा गया हैं। फिर यह कैसे माना जा सकता है कि वेदों में हिंसा या पशु वध की आज्ञा है?

यज्ञों में पशु वध की अवधारणा उनके यज्ञों के विविध प्रकार के नामों के कारण आई है जैसे अश्वमेध यज्ञ, गौमेध यज्ञ और नरमेध यज्ञ। किसी अतिरंजित कल्पना से भी इस संदर्भ में ‘मेध’ का अर्थ वध संभव नहीं हो सकता।

यजुर्वेद अश्व का वर्णन करते हुए कहता है –

इमं मा हिंसीरेकशफं पशुं कनिक्रदं वाजिनं वाजिनेषु

यजुर्वेद १३/४८

“इस एक खुर वाले, हिनहिनाने वाले और बहुत से पशुओं में अत्यंत वेगवान प्राणी का वध मत कर।”

अश्वमेधका मतलब यज्ञ में घोड़े की बलि देना नहीं है। इसके विपरीत यजुर्वेद में अश्व को नहीं मारने का स्पष्ट उल्लेख है।

शतपथ में अश्व शब्द 'राष्ट्र' या 'साम्राज्य' के लिए आया है।

अश्वमेध, गौमेध और नरमेध यज्ञ

'मेध' शब्द का अर्थ वध नहीं होता। मेध शब्द बुद्धिपूर्वक किये गए कर्म को व्यक्त करता है। प्रकारांतर से उसका अर्थ मनुष्यों में संगतीकरण का भी है। जैसा कि मेध शब्द के धातु (मूल) मेधृ -सं -ग -मे के अर्थ से स्पष्ट होता है।

राष्ट्रं वा अश्वमेध:

अन्नं हि गौ:

अग्निर्वा अश्व:

आज्यं मेधा:

शतपथ १३/१/६/३

स्वामी दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं -

"राष्ट्र या साम्राज्य के वैभव, कल्याण और समृद्धि के लिए समर्पित यज्ञ ही अश्वमेध यज्ञ है।"

"अन्न, इन्द्रियां, किरण, पृथ्वी, आदि को पवित्र रखना गोमेध।"

'गौ' शब्द का अर्थ पृथ्वी भी है। इसलिए पृथ्वी और पर्यावरण की शुद्धता के लिए समर्पित यज्ञ गौमेध कहलाता है।

“जब मनुष्य मर जाए, तब उसके शरीर का विधिपूर्वक दाह करना नरमेध कहाता है।”

वेदों में गौमांस का निषेध

वेदों में पशुओं की हत्या का विरोध तो है ही बल्कि गौहत्या पर तो तीव्र आपत्ति करते हुए उसे निषिद्ध माना गया है। यजुर्वेद में गाय को जीवनदा-यी पोषण दाता मानते हुए गौ हत्या को वर्जित किया गया है।

घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हिंसी:

यजुर्वेद १३/४९

“सदा ही रक्षा के पात्र गाय और बैल को मत मार।”

आरे गोहा नृहा वधो वो अस्तु

ऋग्वेद ७ /५६/१७

“ऋग्वेद गौहत्या को जघन्य अपराध बताते हुए उसे मनुष्य हत्या के तुल्य मानता है और ऐसा महापाप करने वाले के लिये दण्ड का विधान करता है।”

सूयवसाद भगवती हि भूया अथो वयं भगवन्तः स्याम

अद्धि तर्णमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती

ऋग्वेद १/१६४/४० अथवा अथर्ववेद ७/७३/११ अथवा अथर्ववेद ९/१०/२०

“अघ्न्या गौ - जो किसी भी अवस्था में नहीं मारने योग्य हैं, हरी घास और

शुद्ध जल के सेवन से स्वस्थ रहें जिससे कि हम उत्तम सद् गुण, ज्ञान और ऐश्वर्य से युक्त हों।"

वैदिक कोष निघण्टु में गौ या गाय के पर्यायवाची शब्दों में 'अघ्न्या', 'अहि' और 'अदिति' का भी समावेश है। निघण्टु के भाष्यकार यास्क इनकी व्याख्या में कहते हैं:

- अघ्न्या – जिसे कभी न मारना चाहिए।
- अहि – जिसका कभी वध नहीं होना चाहिए।
- अदिति – जिसके खंड नहीं करने चाहिए।

इन तीन शब्दों से यह साबित होता है कि गाय को किसी भी प्रकार से पीड़ित नहीं करना चाहिए।वेदों में गाय इन्हीं नामों से पुकारी गई है।

अघ्न्येयं सा वर्द्धतां महते सौभगाय

ऋग्वेद १/१६४/२७

"अघ्न्या गौ-हमारे लिये आरोग्य और सौभाग्य लाती हैं।"

सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्य:

ऋग्वेद ५/८३/८

"अघ्न्या गौ के लिए शुद्ध जल अति उत्तमता से उपलब्ध हो।"

यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधानः
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च

ऋग्वेद १०/८७/१६

“मनुष्य, अश्व या दुसरे पशुओं के मांस से पेट भरने वाले और दूध देने वाली अघ्न्या गायों का विनाश करने वालों को कडा दण्ड देना चाहिए।”

विमुच्यध्वमघ्न्या देवयाना अगन्म

यजुर्वेद १२/७३

“अघ्न्या गाय और बैल तुम्हें समृद्धि दे ते हैं।”

मा गामनागामदितिं वधिष्ट

ऋग्वेद ८/१०१/१५

“गाय को मत मारो। गाय निष्पाप और अदिति – अखंडनीया है।”

अन्तकाय गोघातं

यजुर्वेद ३०/१८

“गौ हत्यारे का संहार किया जाये।”

यदि नो गां हंसि यद्यश्वम् यदि पूरुषं

तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नो सो अवीरहा

अर्थववेद १/१६/४

“अगर कोई हमारे गाय, घोड़े और पुरुषों की हत्या करता है, तो उसे सीसे की गोली से उड़ा दो।”

वत्सं जातमिवाघ्न्या

अथर्ववेद ३/३०/१

"आपस में उसी प्रकार प्रेम करो, जैसे अघ्न्या – कभी न मारने योग्य गाय – अपने बछड़े से करती है।"

धेनुं सदनं रयीणाम्

अथर्ववेद ११/१/४

"गाय सभी ऐश्वर्यों का उद्गम है।"

ऋग्वेद का ६ठा मंडल

ऋग्वेद के ६ वें मंडल का सम्पूर्ण २८ वां सूक्त गाय की महिमा बखान रहा है:

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु

भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति

न ता अर्वा रेनुककाटो अश्नुते न संस्कृत्रमुप यन्ति ता अभि

गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छन्

यूयं गावो मेदयथा

मा वः स्तेन ईशत माघशंस:

- हर कोई यह सुनिश्चित करें कि गौएं यातनाओं से दूर और स्वस्थ रहें।

- गाय की देख-भाल करने वाले को ईश्वर का आशीर्वाद मिलता है।
- गाय पर शत्रु भी शस्त्र का प्रयोग न करें।
- कोइ भी गाय का वध न करे।
- गाय बल और समृद्धि लाती हैं।
- गाय अगर स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगी तो पुरुष और स्त्रियां भी निरोग और समृद्ध होंगे।
- गाय हरी घास और शुद्ध जल का सेवन करें। वे मारी न जाएं और हमारे लिए समृद्धि लाएं।

वेदों में गौमांस का कहीं कोई विधान नहीं है।

दावे और तथ्य:

उन विभिन्न स्रोतों से तीखी प्रतिक्रिया हुई है, जिनके गले से यह सच्चाई नहीं उतर सकती कि उनकी आधुनिक साम्यवादी विचारधारा के सामने हमारे वेद और राष्ट्र की प्राचीन संस्कृति ज्यादा आदर्शस्वरूप हैं। मुझे कई ई-मेल मिले है जिनमें इस सच को झुठलाने के प्रयास में अतिरिक्त हवाले देकर गौमांस का समर्थन दिखाया गया है। जिनमें ऋग्वेद से दो मंत्र, मनुस्मृति के कुछ श्लोक और कुछ और उदाहरण दिए गए हैं। इन दावों पर मैं निम्न बातें कहना चाहूंगा –

१

मनुस्मृति में गौमांस भक्षण और पशुबलि की अनुमति है।

अग्निवीर:

इस अध्याय में प्रस्तुत मनुस्मृति के साक्ष्य में वध की मंजूरी देने वाले तक को हत्यारा कहा गया है। इसलिए यह सभी अतिरिक्त श्लोक मनुस्मृति में प्रक्षेपित (मिलावट किये गए) हैं या इनके अर्थ को बिगाड़ कर गलत तरीके से दिखाया गया है।

२

प्राचीन साहित्य में मांस का अर्थ मीट(गोश्त) है।

अग्निवीर:

प्राचीन साहित्य में गौमांस को सिद्ध करने के उनके अड़ियल रवैये के कपट का एक प्रतीक यह है कि वह मांस शब्द का अर्थ हमेशा मीट (गोश्त) के संदर्भ में ही लेते हैं। दरअसल, मांस शब्द की परिभाषा किसी भी 'गूदेदार वस्तु' के रूप में की जाती है। मीट को मांस कहा जाता है क्योंकि वह गूदेदार होता है। इसी से, सिर्फ मांस शब्द के प्रयोग को देखकर ही मीट नहीं समझा जा सकता।

वेदों से संबंधित जिन दो मंत्रों को प्रस्तुत कर वे गौमांस भक्षण को सिद्ध मान रहे हैं। आइए उनकी पड़ताल करें –

३

ऋग्वेद (१०/८५/१३) – "कन्या के विवाह अवसर पर गाय और बैल का वध किया जाए।"

अग्निवीर:

मंत्र में बताया गया है कि ठंडी ऋतु में मद्धिम हो चुकी सूर्य किरणें फिरसे वसंत ऋतु में प्रखर हो जाती हैं। यहां सूर्य -किरणों के लिए प्रयुक्त शब्द 'गो' है, जिसका एक अर्थ 'गाय' भी होता है और इसीलिए मंत्र का अर्थ

करते समय सूर्य किरणों के बजाए गाय को विषय रूप में लेकर भी किया जा सकता है। 'मद्धिम' को सूचित करने के लिए 'हन्यते' शब्द का प्रयोग किया गया है, जिसका मतलब हत्या भी हो सकता है। लेकिन अगर ऐसा मान भी लें, तब भी मंत्र की अगली पंक्ति (जिसका अनुवाद जानबूझ कर छोड़ा गया है) कहती है कि - वसंत ऋतु में वे अपने वास्तविक स्वरुप को दुबारा प्राप्त होती हैं।

भला सर्दियों में मारी गई गाय दोबारा वसंत ऋतु में पुष्ट कैसे हो सकती है? इस से यही साबित होता है कि ज्ञान से कोरे कम्युनिस्ट किस प्रकार वेदों के साथ पक्षपात कर उसे कलंकित करते हैं।

४

ऋग्वेद (६/१७/१) – "इन्द्र - गाय, बछड़े, घोड़े और भैंस का मांस खाया करते थे।"

अग्निवीर:

मंत्र में वर्णन है कि प्रतिभाशाली विद्वान, यज्ञ की अग्नि को प्रज्वलित करने वाली समिधा की भांति विश्व को दीप्तिमान कर देते हैं। किसी को इस मंत्र में इन्द्र, गाय, बछड़ा, घोड़ा और भैंस कहां से मिल गए, यह मेरी समझ से बाहर है।

५

दुसरे संस्कृत ग्रंथों में किए गए दावों का क्या?

अग्निवीर:

उनके द्वारा दिए गए दुसरे उद्धरण संदेहास्पद और लचर हैं जो प्रमाण नहीं माने जा सकते। उनका तरीका बहुत आसान है – संस्कृत में लिखा हुआ

किसी भी वाक्य को हिन्दू धर्म मानकर अपनी इच्छा अनुसार उसका अर्थ निकालो। ठीक ऐसा ही हमारी पाठ्य पुस्तकों के साथ में हो रहा हैं।

सारांश

वेदों में मात्र गाय ही नहीं बल्कि हर प्राणी के लिए प्रदर्शित उच्च भावना को समझने के लिए और कितने प्रमाण दिएं जाएं ?

प्रस्तुत प्रमाणों से आप खुद यह निर्णय कर सकते हैं कि वेद किसी भी प्रकार कि अमानवीयता के सख्त ख़िलाफ़ हैं और जिस में गौवध और गौमांस का तो पूरी तरह से निषेध है।

मेरी ये चेलेंज है कि अगर कोई वेदों में गौमांस भक्षण के समर्थक एक भी मंत्र मुझे दिखा दे तो मैं वो जो कहेगा वो करने के लिए तैयार हूँ पर अगर एसा न हुआ तो उसे वैदिक धर्म की और लौटना होगा।

हिन्दू धर्म में गौमांस और पशु बलि का पूरी तरह से निषेध है।

अध्याय २

आरोप और उनका खण्डन

अपने अज्ञान को स्वीकार करना सत्य की खोज में पहला कदम है।

-अग्निवीर

पहले अध्याय में हम ने वेदों पर लगाए गए गौमांसाहार और पशुबलि के आरोपों की गहराई से जांच की। हमने प्रमाणों से साथ ये साबित किया कि-

- वेद पशुओं और निर्दोष प्राणियों की हिंसा के सख्त खिलाफ हैं।
- वेद में यज्ञ की परिभाषा ही अहिंसा से होने वाला अनुष्ठान है और वैदिक मूल्य पशु बलि के सख्त खिलाफ हैं।

- गौमांसाहार के विपरीत, वेद गाय की रक्षा करने और उसके हत्यारों को अत्यंत कठोर सज़ा देने के निर्देश देते हैं।

हमारे इस कार्य को अग्निवीर की वेबसाईट पर प्रकाशित करने के बाद वेदों को बदनाम करने की मुहिम पर लगाम लगी है। इसके प्रमाणों के प्रतिवाद में आज तक कोई संतोषकारी जवाब नहीं मिला। फिर भी कुछ लोग छुट-पुट आरोप लगाते रहते हैं। अपने पक्ष में यह लोग अज्ञानी और वेदों के अनुवाद में अक्षम पाश्चात्य लोगों के वैदिक साहित्य के अनुवादों से अपमानजनक और बेहूदे अवतरणों को लेकर आ जाते हैं।

यहां हम ऐसे ही कुछ आरोपों का जवाब देंगे ताकि आगे भी कोई गुमराह न कर सके।

१

यज्ञ में पशुबलि अनिवार्य है।

यह सभी जानते हैं कि यज्ञों में पशु बलि दी जाती थी। और वेद में यज्ञों का बहुत गुणगान किया गया है।

अग्निवीर:

यज्ञ शब्द ‘यज’ धातु में ‘ नङ्.‘ प्रत्यय जोड कर बनता है। यज धातु के तीन अर्थ होते है –

- देव पूजा – आस-पास के सभी भूतों(पदार्थों) का जतन करना और यथायोग्य उपयोग लेना, ईश्वर की पूजा, माता-पिता का सम्मान, पर्यावरण को साफ़ रखना इत्यादि इस के कुछ उदाहरण हैं।

- संगतिकरण(एकता) और
- दान

वेदों के अनुसार इन में मनुष्यों के सभी कर्तव्य आ जाते हैं। इसलिए सिर्फ वेद ही नहीं बल्कि प्राचीन सारे भारतीय ग्रन्थ यज्ञ की महिमा गाते हैं। मुख्य बात यह है कि यज्ञ में पशु हिंसा का कहीं कोई प्रमाण नहीं मिलता। वैदिक कोष - निरुक्त २.७ यज्ञ को ‘अध्वर‘ कहता है अर्थात हिंसा से रहित (ध्वर=हिंसा)।

पशु हिंसा ही क्या, यज्ञ में तो शरीर, मन, वाणी से भी की जाने वाली किसी हिंसा के लिए स्थान नहीं है। वेदों के अनेक मन्त्र यज्ञ के लिए ‘अध्वर’ शब्द का प्रयोग करते हैं।

उदाहरण -

ऋग्वेद – १.१/४, १/१/८, १/१४/२१, १/१२८/४, १/१९/१

अथर्ववेद- ४/२४/३, १८/२/२, १/४/२, ५/१२/२, १९/४२/४

यजुर्वेद के लगभग ४३ मन्त्रों में यज्ञ के लिए अध्वर शब्द आया है।

यजुर्वेद ३६/१८ तो कहता है कि “मैं सभी प्राणियों- सर्वाणि भूतानि (सिर्फ मनुष्यों को नहीं बल्कि जीव मात्र) को मित्र की दृष्टि से देखूं।”

इस से पता चलता है कि वेद कहीं भी पशु हिंसा का समर्थन नहीं करता बल्कि उसका निषेध करता है।

भारतवर्ष के मध्य काल में वैदिक मूल्यों का पतन होने के कारण पशु हिंसा चला दी गई। इस का दोष वेदों को नहीं दिया जा सकता। जैसे आज कई

फ़िल्मी सितारे और मॉडल्स मुस्लिम हैं जो अश्लीलता परोसते हैं, क्या इस से कुरान अश्लीलता की समर्थक कही जाएगी? इसी तरह, ईसाई देशों में विवाह पूर्व सम्बन्ध और व्याभिचार का बोलबाला है, तो क्या बाइबिल को इस का आधार कहा जायेगा? हमारी चुनौती है उन सब को, जो यज्ञों में पशु बलि बताते हैं कि वे इस का एक भी प्रमाण वेदों से निकाल कर दिखाएं।

२

'अश्वमेध' और 'गोमेध' में पशुहत्या

अगर ऐसा ही है तो वेदों में आए – अश्वमेध, गोमेध क्या हैं? 'मेध' का मतलब है – 'मारना'

अग्निवीर:

पहले अध्याय में हम चर्चा कर चुके हैं कि 'मेध' शब्द का अर्थ, 'हिंसा' ही नहीं है। 'मेध' शब्द, बुद्धि पूर्वक कार्य करने को दर्शाता है। मेध - 'मेधृ – सं – ग – मे' से बना है। इसलिए इस का अर्थ – मिलाप करना, सशक्त करना या पोषित करना भी है। (देखें, धातु पाठ)

जब यज्ञ को अध्वर, 'हिंसा रहित', कहा गया है, तो उस के सन्दर्भ में 'मेध' का अर्थ हिंसा क्यों लिया जाए? बुद्धिमान इंसान 'मेधावी' कहे जाते हैं और इसी तरह, लड़कियों के नाम मेधा, सुमेधा इत्यादि रखे जाते हैं, तो ये नाम क्या उनके हिंसक होने के कारण रखे जाते हैं या बुद्धिमान होने के कारण?

शतपथ १३/१/६/३ और १३/२/२/३ स्पष्ट कहता है कि राष्ट्र के गौरव, कल्याण और विकास के लिए किए जाने वाले कार्य 'अश्वमेध' हैं। राम

प्रसाद बिस्मिल, अशफाक, नेताजी, शिवाजी, तिलक आदि हमारे महान देश भक्त, क्रांतिकारी वीरों ने राष्ट्र रक्षा के लिए अपने जीवन आहूत करके अश्वमेध यज्ञ ही किया था।

अन्न को दूषित होने से बचाना, अपनी इन्द्रियों को वश में रखना, सूर्य की किरणों से उचित उपयोग लेना, धरती को पवित्र या साफ़ रखना, 'गोमेध' यज्ञ है। 'गो' शब्द का एक अर्थ, 'पृथ्वी' भी है। पृथ्वी और उसके पर्यावरण को स्वच्छ रखना 'गोमेध' है।(देखें, निघण्टू १/१, शतपथ १३/१५/३)

३

नरमेध और अजमेध यज्ञों में हत्या

वेद तो नरमेध यज्ञ में मनुष्य हत्या की बात भी करते हैं। और यह अजमेध यज्ञ क्या है?

अग्निवीर:

मनुष्य की मृत्यु के बाद, उसके शरीर का वैदिक रीति से दाह संस्कार करना – नरमेध यज्ञ है।

मनुष्यों को उत्तम कार्यों के लिए प्रशिक्षित और संगठित करना भी नरमेध या पुरुषमेध या नृमेध यज्ञ कहलाता है।

'अज' कहते हैं – बीज या अनाज या धान्य को। इसलिए, कृषि की पैदावार बढ़ाना – अजमेध। सीमित अर्थों में – अग्निहोत्र में धान्य से आहुति देना। (देखें, महाभारत शांतिपर्व ३३७/४-५)

विष्णु शर्मा, सुप्रसिद्ध पचतंत्र(काकोलूकीयम्) में कहते हैं कि जो लोग यज्ञ में हिंसा करते हैं, वे मूर्ख हैं। क्योंकि वे वेद के वास्तविक अर्थ को नहीं

समझते। अगर जानवरों को मार कर स्वर्ग में जा सकते हैं, तो फ़िर नरक में जाने का मार्ग कौन-सा है?

महाभारत शांतिपर्व (२६३/६, २६५/९) के अनुसार यज्ञ में शराब, मछली, मांस को चलाने वाले लोग धूर्त, नास्तिक और शास्त्र ज्ञान से रहित हैं।

४

'हस्तिन आलम्भते' अर्थात् – हाथियों को मारना

यजुर्वेद मन्त्र २४/२९ में आए 'हस्तिन आलम्भते' का अर्थ तो हाथियों को मारना ही है?

अग्निवीर:

यह सच नहीं कि 'लभ्' धातु से बनने वाले 'आलम्भ' शब्द का अर्थ मारना है। लभ् =अर्जित करना या पाना। हर भारतीय इससे परिचित है। वे अपनी दुकानों पर भी "शुभ-लाभ" लिखते हैं। जबकि 'हस्तिन' शब्द का 'हाथी' के आलावा और गहन अर्थ भी निकलता है, तब भी अगर हम इस मंत्र में 'हाथी' अर्थ लें, तो इससे यही पता चलता है कि राजा को अपने राज्य के विकास हेतु हाथिओं को प्राप्त करना चाहिए या अर्जित करना चाहिए। इसमें हिंसा कहां है?

'आलम्भ' शब्द अनेकों स्थानों पर 'अर्जित करने' या 'प्राप्त करने' के लिए आया है। उदाहरण के लिए मनुस्मृति ब्रह्मचारियों के लिए स्त्रियों को पाने का निषेध करते हुए कहती है: 'वर्जयेत स्त्रीना आलम्भं'। अतः आलम्भते का अर्थ 'मारना' पूरी तरह से गलत है। जिन लोगों की जीभ को मांस खाने की लत पड़ गई है, उन्हें पशुओं का उपयोग 'खाना' ही समझ में आता है और इसलिए वेद मन्त्रों में 'आलम्भते' का अर्थ मारना, उन्होंने अपने

मन से गढ़ लिया।

५

‘संज्ञपन’ अर्थात बलिदान

ब्राह्मण ग्रंथों और श्रौत सूत्रों में ‘संज्ञपन’ शब्द आया है, जिसका मतलब बलिदान है?

अग्निवीर:

अथर्ववेद ६/७४/१-२ कहता है कि हम अपने मन, शरीर और हृदयों का ‘संज्ञपन’ करें, तो क्या इस से यह समझा जाये कि हम खुद को मार दें! संज्ञपन का वास्तविक अर्थ है – ‘मेल करना या पोषण करना’। मन्त्र का अर्थ है – हम अपने मन, शरीर और हृदयों को बलवान बनाएं, जिससे वे एक साथ मिलकर काम करें। संज्ञपन का एक अर्थ – ‘जताना’ भी होता है।

६

यजुर्वेद और ऋग्वेद में घोड़े की बलि

तुम हर बार पकड़ में आने से बच जाते हो, पर अब नहीं भाग सकते। देखो, यजुर्वेद २५/३४-३५ और ऋग्वेद १/१६२/११-१२ में घोड़े की बलि का वर्णन है –

“अग्नि से पकाए, मरे हुए तेरे अवयवों से जो मांस-रस उठता है वह वह भूमि या घास पर न गिरे, वह चाहते हुए देवों को प्राप्त हो।”

“जो घोड़े को अग्नि में पका हुआ देखते हैं और जो कहते हैं कि इस मरे हुए घोड़े से बड़ी अच्छी गंध आ रही है और जो घोड़े के मांस की लालसा करते

हैं, उनका उद्यम हमें मिले।”

अग्निवीर:

लगता है कि तुमने ग्रिफिथ की नक़ल की है।

पहले मन्त्र का घोड़े से कोई वास्ता नहीं है। वहां सिर्फ यह कहा गया है कि ज्वर या बुखार से पीड़ित इंसान का वैद्य लोग उपचार करें।

दूसरे मन्त्र में ‘वाजिनम्’ को घोड़ा समझा गया है। ‘वाजिनम्’ का अर्थ है – शूर / बलवान / गतिशील / तेज। इसीलिए घोड़ा ‘वाजिनम्’ कहलाता है। इस मन्त्र के अनेक अर्थ हो सकते हैं पर कहीं से भी घोड़े की बलि का अर्थ नहीं निकलता।

अगर वाजिनम् का अर्थ घोड़ा ही लिया जाये तब भी अर्थ होगा कि – घोड़ों(वाजिनम्) को मारने से रोका जाये। इन मन्त्रों के सही अर्थ जानने के लिए ऋषि दयानंद का भाष्य पढ़ें। साथ ही, पशु हिंसा निषेध और पशु हत्यारे खासकर गाय और घोड़े के हत्यारों के लिए कठोर दंड के मन्त्रों को जानने के लिए पहले अध्याय में दिए कई मंत्र देखें।

७

अतिथिग्वा - अतिथियों को गाय का मांस परोसने वाला

वेदों में ‘गोघ्न‘ या गायों के वध के संदर्भ हैं और गाय का मांस परोसने वाले को अतिथिग्वा या अतिथिग्ना कहा गया है। तुम इन्हें कैसे स्पष्ट करोगे?

अग्निवीर:

पहले अध्याय में हम काफी सबूत दे चुके हैं कि वेदों में गाय को अघन्या या

अदिती - कभी न मारने योग्य - कहा गया है और गोहत्यारे के लिए अत्यंत कठोर दण्ड के विधान को भी दिखा चुके हैं।

'गम्' धातु का अर्थ है–'जाना'। इसलिए गतिशील होने के कारण ग्रहों को भी 'गो' कहते हैं। 'अतिथिग्वा' या 'अतिथिग्ना' का अर्थ अतिथियों की ओर या अतिथियों की सेवा के लिए जाने वाले है।

'गोघ्न' के अनेक अर्थ होते हैं। अगर 'गो' से मतलब गाय लिया जाए तब भी 'गो+हन्' = गाय के पास जाना, ऐसा अर्थ होगा। 'हन्' धातु का अर्थ हिंसा के अलावा गति, ज्ञान इत्यादि भी होते हैं। वेदों के कई उदाहरणों से पता चलता है कि 'हन्' का प्रयोग किसी के निकट जाने या पास पहुंचने के लिए भी किया जाता है। उदाहरण के लिए अथर्ववेद 'हन्' का प्रयोग करते हुए पति को पत्नी के पास जाने का उपदेश देता है।

इसलिए, इन दावों में कोई दम नहीं है।

८

बांझ गाय को मारने की आज्ञा

वेद जवान गायों को मारने केलिए नहीं कहते पर बूढ़ी, बांझ ('वशा') गाय को मारने की आज्ञा देते हैं। इसी तरह, 'उक्षा' या बैल को मारने की आज्ञा भी है।

अग्निवीर:

इस मनघडंत कहानी के आधुनिक प्रचारक डी.एन झा हैं। वह गौमांस भक्षण के अपने दावे को वेदों से दिखाने में सफल न हो सके। क्योंकि वेदों में इस के बिलकुल विपरीत बात ही कही गयी है और गौ हत्या का सख्त निषेध मौजूद है। इसलिए इस के बचाव में उन्होंने लाल बुझक्कड़ी कल्पना

का सहारा लिया।

दरअसल 'उक्षा' एक औषधीय पौधा है, जिसे 'सोम' भी कहते हैं। यहां तक कि मोनिअर विलियम्स भी अपने संस्कृत-इंग्लिश कोष में 'उक्षा' का यही अर्थ करते हैं। 'वशा' का अर्थ ईश्वर की संसार को 'वश' में रखने वाली शक्ति है। अगर 'वशा' का मतलब बांझ गाय कर लिया जाए तो कई वेद मन्त्र अपने अर्थ खो देंगे।

उदाहरणत: अथर्ववेद १०/१०/४ यहां 'वशा' के साथ सहस्र धारा(सहस्रों पदार्थों को धारण करने वाली) का प्रयोग हुआ है। अन्न, दूध और जल की प्रचुरता दर्शाने वाली सहस्र धारा के साथ एक बांझ गाय की तुलना कैसे हो सकती है? ऋग्वेद १०/१९०/२ में ईश्वर की नियामक शक्ति को 'वशी' कहा गया है और प्रतिदिन दो बार की जानेवाली वैदिक संध्या में इस मन्त्र को बोला जाता है।

अथर्ववेद २०/१०३/१५ संतान सहित उत्तम पत्नी को 'वशा' कहता है। दुसरे कुछ मन्त्रों में 'वशा' शब्द उपजाऊ जमीन या औषधीय पौधे के लिए भी आया है। मोनिअर विलियम्स के कोष में भी 'वशा' औषधीय पौधे के सन्दर्भ में प्रयुक्त हुआ है।

इन लोगों ने किस आधार पर 'वशा' का अर्थ 'बांझ' किया है, यह समझ से परे है।

९

दंपत्ति को मांस का सेवन करना चाहिए।

बृहदारण्यक उपनिषद ६/४/१८ के अनुसार उत्तम संतान चाहने वाले दंपत्ति को चावल में मांस मिलाकर खाना चाहिए, साथ ही बैल(अर्षभ)

और बछड़े(उक्षा) के मांस का सेवन भी करना चाहिए।

अग्निवीर:

वेदों से थककर अब उपनिषदों पर आ गए, पर अगर कोई उपनिषदों में गौ साहार दिखा भी दे, तब भी इस से वेदों में गोस सिद्ध नहीं हो जाता।

हिन्दुओं के सभी धार्मिक ग्रन्थ वेदों को ही अपना आदि स्रोत मानते हैं। इसलिए हिन्दू धर्म में वेदों का प्रमाण ही सर्वोच्च है। पूर्व मीसा १/३/३, मनुस्मृति २/१३, १२/९५, जाबालस्मृति, भविष्य पुराण इत्यादि ग्रंथों के अनुसार वेद और दुसरे ग्रंथों में मतभेद होने पर वेदों को ही सही माना जाए।

बृहदारण्यकोपनिषत् पर किया गया यह बेहूदा आरोप दरअसल गलत समझ का नतीजा है।

पहले 'मांसौदनम्' को लें – यहां इस श्लोक से पूर्व ४ ऐसे श्लोक हैं, जिनमें बच्चों में विविध वैदिक ज्ञान पाने के लिए चावल को विशिष्ट खाद्य पदार्थों के साथ खाने के लिए कहा है। मांसोदनं के अलावा जो दुसरे विशिष्ट खाद्य पदार्थ बताये गए हैं वे हैं:

- क्षीरोदनं (चावल के साथ दूध),
- दध्योदनं (चावल के साथ दही),
- चावल के साथ पानी और
- चावल के साथ तिल(दलहन)।

ये सब इतर वेदों में निपुणता प्राप्त करने के लिए बताये गए हैं। इस

श्लोक में सिर्फ अर्थववेद में निपुणता प्राप्त करने के लिए मांसोदनं (चावल के साथ मांस) का उल्लेख है। यहीं इस सन्दर्भ में असंगति साफ़ दिखाई देती है।

सच तो यह है कि वहां शब्द – 'माषौदनम्' है, 'मांसौदनम्' नहीं। 'माष' एक तरह की दाल है। इसलिए यहां मांस का तो सवाल ही नहीं उठता। आयुर्वेद गर्भवती स्त्रियों के लिए मांसाहार को सख्त मना करता है और उत्तम संतान पाने के लिए 'माष' सेवन को हितकारी कहता है (देखें, सुश्रुतसंहिता)। इससे ये साफ़ है कि बृहदारण्यक भी वैसा ही मानता है जैसा सुश्रुत में है। इन दोनों में सिर्फ 'माष' और 'मांस' का ही फर्क होने का कोई कारण नहीं।

फिर भी अगर कोई माष को मांस ही कहना चाहे, तब भी मांस तो 'गूदे' (pulp) को भी कहते हैं सिर्फ गोश्त (meat) को ही नहीं। प्राचीन ग्रंथों में मांस अर्थात गूदा के ढेरों प्रमाण मिलते हैं – चरकसंहिता देखें- वहां शब्द हैं – आम्रसं = आम का गूदा ,खजूरसं = खजूर का गूदा। तैत्तरीय संहिता २/३२/८ – दही, शहद और धान को मांस कहता है।

मोनिअर विलियम्स का शब्द कोष उक्षा अर्थात सोम और ऋषभ (जिससे अर्षभ शब्द बना) दोनों को औषधीय पौधा बताता है। ऋषभ का वैज्ञानिक नाम Carpopogan pruriens है। चरक संहिता १/४-१३, सुश्रुत संहिता ३/८ और भावप्रकाश पूर्ण खंड भी यही कहते हैं।

अर्षभ (ऋषभ)और उक्षा दोनों का अर्थ बैल है - बछड़ा नहीं, तो एक ही बात बताने के लिए पर्यायवाची शब्दों का उपयोग क्यों किया जायेगा? यह ऐसा ही है कि तुम या तो चावल खाओ या भात खाओ।

स्पष्ट ही दोनों शब्दों के अर्थ अलग हैं। और क्योंकि दुसरे सभी श्लोक

जड़ी-बूटी और दलहनों का उल्लेख करते है, ये शब्द भी इसी ओर इंगित करते हैं। सिर्फ डी.एन. झा या काटजू को गौ हत्या पसंद है इसलिए हम इनका अर्थ गौ मांस या मांस क्यों लें?

१०

महाभारत वन पर्व २०७ में गौ वध

महाभारत वन पर्व २०७ में राजा रन्तिदेव के यज्ञों में बड़ी संख्या में गायों के वध का वर्णन आता है।

अग्निवीर:

हम यह पहले ही बता चुके हैं कि वेद और दुसरे शास्त्रों में अगर कहीं विरोध हो तो वेद ही प्रामाणिक माने जाएंगे। महाभारत मिलावटों से इतना दूषित हो चुका है कि उसे प्रमाण मानना भी मुश्किल हो गया है।

महाराजा रन्तिदेव के महलों में गौ हत्या के झूठे आरोप का खंडन दशकों पहले ही कई विद्वान कर चुके हैं।

- महाभारत के अनुशासन पर्व ११५ में राजा रन्तिदेव का नाम कभी मांस न खाने वालों राजाओं में है। अगर उनके महल गौमांस से भरे रहते थे तो उनका नाम मांस न खाने वालों में कैसे आया?

- मांस का मतलब हमेशा मीट या गोश्त ही नहीं होता – यह भी साबित हो चुका है।

- जिस श्लोक में गौमांस का आरोप लगाया गया है – उस के अनुसार प्रतिदिन २००० गौएं मारी जाती थीं। इस हिसाब से एक वर्ष में ७,२०,००० से भी अधिक गौओं का वध होता था? क्या ऐसे

श्लोक पर यकीन करना बुद्धिसंगत है?

- महाभारत का शांति पर्व २६२/४७ गाय या बैल के हत्यारे को महापापी घोषित करता है। एक ही किताब में यह विरोधाभास कैसे?

- दरअसल, इन श्लोकों को भ्रष्ट करने का श्रेय राहुल सांकृतायन जैसे महापंडित को है। वे अपनी वेद निंदा के लिए जाने जाते थे। उसने महाभारत द्रोणपर्व ६७ के पहले दो श्लोकों से सिर्फ तीन पंक्तियों को ही उद्धृत किया और जानबूझ कर एक पंक्ति छोड़ दी। द्विशतसहस्र का अर्थ उसने दो हजार किया है जो कि गलत है। इस का सही अर्थ दो सौ हजार होता है (द्वि - दो शत - सौ सहस्र – हजार)। इस से उनके संस्कृत ज्ञान के दर्शन भी हो जाते हैं। इन में से कोई भी पंक्ति गौमांस से सम्बन्ध नहीं रखती और अगर जानबूझ कर छोड़ी गयी पंक्ति भी मिला दें तो अर्थ होगा कि राजा रन्तिदेव के राज्य में उत्तम भोजन पकाने वाले २००,००० रसोइये थे जो प्रतिदिन अतिथियों और विद्वानों को बढ़िया खाना (चावल, दालें, पकवान, मिठाई इत्यादि – निरामिष पदार्थ) खिलाते थे। गौमांस परक अर्थ दिखाने के लिए अगले श्लोक के 'माष' शब्द को बदल कर 'मांस' किया गया है।

- महाभारत में ही इस के विपरीत – हिंसा और गौमांस का निषेध करने वाले सैंकड़ों श्लोक मौजूद हैं। साथ ही, महाभारत गाय के लाभ और उसके उपकार की अत्यंत प्रशंसा भी करता है।

- मूर्ख लोगों ने 'बाध्यते' का अर्थ मारना कर दिया – जो कि संस्कृत की किसी किताब या व्याकरण या प्रयोग के अनुसार नहीं है।

'बाध्यते' का अर्थ है – नियंत्रित करना।

अतः राजा रन्तिदेव के यहां गायों का वध होता था – यह कहीं से भी साबित नहीं होता।

सारांश

अंत में हम यही कहना चाहेंगे कि विश्व की महानतम पुस्तक वेद और दुसरे वैदिक ग्रंथों पर लगाए गए ऐसे कपटपूर्ण आरोपों में अपनी मनमानी थोपने में नाकाम रहे इन बुद्धि भ्रष्ट लोगों की खिसियाहट साफ़ झलकती है।

ईश्वर सबको सद् बुद्धि दे ताकि हम सब मिलकर वेदों की आज्ञा पर चलें और संसार को सुन्दर बनाएं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- ऋग्वेद भाष्य – स्वामी दयानंद सरस्वती
- यजुर्वेद भाष्य -स्वामी दयानंद सरस्वती
- No Beef in Vedas -B D Ukhul
- वेदों का यथार्थ स्वरुप – पंडित धर्मदेव विद्यावाचस्पति
- चारों वेद संहिता – पंडित दामोदर सातवलेकर
- प्राचीन भारत में गौमांस – एक समीक्षा – गीता प्रेस,गोरखपुर
- The Myth of Holy Cow – D N Jha
- Hymns of Atharvaveda – Griffith

- Scared Book of the East – Max Muller
- Rigved Translations – Williams Jones
- Sanskrit – English Dictionary – Moniar Williams
- वेद – भाष्य – दयानंद संस्थान
- Western Indologists – A Study of Motives – Pt.Bhagavadutt
- सत्यार्थ प्रकाश – स्वामी दयानंद सरस्वती
- ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका – स्वामी दयानंद सरस्वती
- Cloud over Understanding of Vedas – B D Ukhul
- शतपथ ब्राह्मण
- निरुक्त – यास्काचार्य
- धातुपाठ – पाणिनि

भाग २: गौमांस प्रेमियों को मुंह तोड़ जवाब

अध्याय ३

गौमांस प्रेमी पूरी तरह गलत क्यों?

सच उसे ही चुभता है जो जूठ की राह पर हो।

- अग्निवीर

भारत के एक राज्य महाराष्ट्र में गौमांस पर लगाए गए प्रतिबंध ने सोशल मीड़िया पर काफ़ी हलचल मचा दी थी। गौमांस प्रेमियों ने इसे अपनी निज़ी स्वतंत्रता पर सीधा प्रहार समझा। इस अध्याय में, मैं गौमांस प्रतिबंध के समर्थन में कई मुद्दे देकर यह साबित करूंगा कि गौमांस प्रतिबंध पूरी तरह लोकतांत्रिक, न्यायिक, सर्वाधिक तार्किक, संविधान सम्मत और भारत के लिए अत्यंत लाभकारी है।

आइए, गौमांस प्रेमियों की दलील देखें –

“मैं क्या खाऊं, ये मेरी मर्ज़ी है। कोई सरकार या नैतिक पुलिस (Moral Police) कौन होती है मुझे ये बताने वाली कि मैं क्या खाऊं और क्या न खाऊं। अगर मुझे बुरा लगे तो क्या वो कल पालक और लौकी खाने पर भी रोक लगाएंगे? यह दांये विंग वाले धर्मांध हिन्दुओं की साम्प्रदायिक राजनीती है, जिसका विरोध होना ही चाहिए।”

अग्निवीर:

ऊपरी तौर पर ठीक और तर्कसंगत लगने वाली उनकी यह मुहीम अन्दर से कितनी सच्ची है, आइए ज़रा कुरेद कर देखें –

मैं यहां इन जेसे लोगों के मुंह बंद करने के तेरह तरीके दे रहा हूं। अगर गौमांस प्रेमी मेरे एक या एक से ज्यादा तर्कों को काटने की कोशिश करते भी हैं, तो उनसे कहिए कि वे अपना पक्ष सही ठहराने के लिए इन सारे तर्कों को गलत साबित करके दिखाएं। वरना यह ऐसे होगा जैसे किसी आदमी पर बीस खून के मुक़दमे चल रहे हैं और वो कहे कि बीस में से तीन खून किसी और ने किए हैं। लेकिन इससे कुछ नहीं होगा, जब तक तुम यह साबित ना करो कि तुमने कोई एक खून भी नहीं किया है, तुम्हें फांसी की सजा तो होगी।

१

गौमांस प्रतिबंध के ख़िलाफ़ पहले कोई मुहीम क्यों नहीं चलाई गई?

भारत के ज्यादातर राज्यों में गाय और दुसरे मवेशियों के क़त्ल पहले से ही प्रतिबंध है। तब ये गौमांस प्रेमी पिछले ६८ वर्षों से क्या कुंभकरण की नींद सो रहे हैं? अब तक ये लोग क्या खा रहे थे? कहीं किसी गैर क़ानूनी गतिविधि में तो सामिल नहीं थे? अब तक उन्होंने अपने गौमांस प्रेम का प्रदर्शन क्यों नहीं किया? पिछले लगभग सात दशकों में उन्होंने गौमांस

प्रतिबंध के ख़िलाफ़ मुहीम क्यों नहीं चलाई?

२

प्रतिबंध गौ हत्या पर लगाया गया है, खाने पर नहीं।

तुम क्या खाते हो क्या नहीं, इससे किसी को कोई लेना-देना नहीं है। लोकतंत्र में तुम्हें पूरी आज़ादी है। चाहो तो अपने कमोड़ से उठाकर भी कुछ खा सकते हो। लेकिन प्रतिबंध खाने पर नहीं, मवेशियों के क़त्ल पर है।

अब मेरे जैसे लोगों को गाय (सामान्य तौर पर मवेशियों) के क़त्ल पर कई आपत्तियां हैं। अगर तुम मेरी माँ की हत्या किए बगैर प्रयोगशाला में बीफ़ बना सकते हो, तो मुझे बिलकुल भी आपत्ति नहीं होगी।

लेकिन अगर लोकतंत्र के नाम पर तुम मेरी माँ की हत्या करना चाहते हो, तो बेहतर होगा कि तुम सोमालिया या आई.एस.आई.एस के इलाकों में जाकर लोकतंत्र की खोज करो। तुम्हारी स्वतंत्रता वहां ख़त्म हो जाती है, जहां से मेरी शुरू होती है।

३

गाय मेरी माँ है।

हां, यह सही है कि गाय के लिए भारत के विशाल बहुमत के मन में भावुक मान्यताएं हैं। वे गाय को अपनी माँ मानते हैं। हिन्दूओं के सबसे लोकप्रिय भगवान श्रीकृष्ण, गाय के प्रति अपने प्रेम के कारण ही ‘गोपाल’ कहलाते हैं। चाहे कोई भी अवसर क्यों न हो, जन्म, मृत्यु, ख़ुशी, गमी कोई भी समारोह या त्यौहार – गाय की पूजा करना और गाय को खिलाना हिन्दू धर्म में बड़ा कर्तव्य समझा जाता है। हिन्दू धर्म में बहुत से उत्सव गाय को समर्पित हैं। हिन्दुओं के एक और परम पूज्य देव - महादेव - का साथी

नंदी (बैल) है।

यह कोई मायने नहीं रखता कि तुम गाय की इस पूजा से सहमत हो या नहीं। लेकिन, जब तक बहुसंख्य भारतीय गाय को अपनी माँ मानते हैं, उसकी हत्या बरदाश्त नहीं की जा सकती। ज़रा सोचो, अगर मैं किसी जानवर को तुम्हारी माँ का नाम देकर क़त्ल कर दूं या मैं किसी हिन्दू देवता, पैगंबर मुहम्मद या ज़ीसस का नाम किसी जानवर पर लिख दूं और फिर उसका गला रेत दूं या मैं किसी मंदिर, मस्जिद या चर्च को दूषित कर दूं तो क्या तुम इसे सह लोगे और उस मेरे इस काम को बढ़ावा दोगे? अगर हां, तो तुम एक विकृत मानस के आदमी हो।

लेकिन यह तो मुद्दे के बाहर की बात है। पहले तुम, मेरी जगह, ऊपर बताये गए कामों को अंजाम दो। फिर उसका विडिओ बना कर यू ट्यूब पर अपने नाम-पते के साथ ड़ाल दो। और फिर लोकतंत्र के नाम पर तुम्हें ऐसी पागलों जैसी हरकतें करने देने की अनुमति मांगने के लिए आन्दोलन करो।

अगर नहीं, तो पूजनीय गौमाता और संबंधित मवेशियों का क़त्ल ऐसे देश में बिलकुल बरदाश्त नहीं किया जा सकता, जहां गाय धार्मिक और सांस्कृतिक लोकाचार का आधार स्तंभ है।

४

गौमांस उत्पादक खुद को चाहे किसी भी धर्म का बताएं, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।

मुझे यह भद्दी दलील देने की कोशिश मत करना कि हमारे देश में गाय और मवेशियों को प्रताड़ित किया जाता है। मेरे सामने यह साबित करने की कोशिश भी मत करना कि गौमांस उत्पादन के लिए गाय बेचने वाले

बहुत से लोग हिन्दू हैं और इसलिए गौमांस पर लगाया गया प्रतिबंध दोहरे मापदंड दर्शाता है।

अगर ऐसा ही है तो मुझे ये बताओ कि तुम इस समस्या का समाधान करने के लिए क्या कर रहे हो? एक सच्चाई यह भी है कि समाज के रवैए के चलते आज भी हमारे देश के कई हिस्सों में महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। लेकिन, इस का मतलब यह नहीं कि बलात्कार की सजा दोहरे मापदंड दर्शाती है। तुम्हारी ये बीमार दलीलें बिलकुल वैसी ही हैं, जैसी की निर्भया काण्ड़ के एक बलात्कारी की सोच।

क्योंकि महिला सुरक्षा हमारे देश में एक विवादित मुद्दा है, तो क्या तुम किसी महिला का बलात्कार कर दोगे? इसके विपरीत ये बताओ कि क्या तुम अपनी व्यक्तिगत हानि की कीमत पर भी किसी महिला के सम्मान की रक्षा कर सकते हो? इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि भारत में गौमांस उत्पादकों का धर्म या मज़हब क्या है? जो चीज़ मायने रखती है वो यह है कि मवेशियों का क़त्ल बहुसंख्य भारतीयों की भावनाओं का अपमान करना है और इसलिए इस पर रोक लगनी चाहिए।

जिस दिन भारत में तुम्हारे जैसे लोग बहुतायत में हो जाएं और तुम लोग उनकी मज़हबी शख्सियतों के नाम या माओं के नाम पशुओं पर लिखकर क़त्ल करना शुरू कर दो और बड़े आराम से अपनी इस कारगुजारी का विडिओ बनाकर यू ट्यूब पर ड़ाल सको, उस दिन इस प्रतिबंध को रद्द कर देना।

लेकिन शुक्र है कि आज ऐसा नहीं है और इसलिए गौमांस पर प्रतिबंध सही है।

५

बहुमत की भावनाओं का आदर करो।

यह बात सच है कि भले ही भारतीय संस्कृति में पशुओं की पूजा का कोई तार्किक आधार ऊपर से नज़र नहीं आता, फिर भी बहुसंख्य लोगों की भावनाओं का आदर करते हुए ही गौमांस पर प्रतिबंध लगाना उचित कहा जाएगा। लेकिन शुक्र है कि सच इसके विपरीत है। भारतीय संस्कृति के आधार बहुत ही तार्किक और वैज्ञानिक हैं। भारत को विश्व गुरु का ख़िताब हमने देश के प्रति अपनी अंधभक्ति को संतुष्ट करने के लिए नहीं दे रखा है। बल्कि इसलिए दिया है क्योंकि भारतीय संस्कृति तर्क और वैज्ञानिकता की दृढ़ बुनियाद पर टिकी हुई है।

अब गाय और दुसरे पशुओं की पूजा के विषय में बात करे तो -

- गाय इस धरा पर मौजूद सबसे उत्पादक पशु है। वह एक चल-ता-फ़िरता औषधालय और कारख़ाना है जिसमें बनने वाला हर एक पदार्थ बहुमूल्य उपयोग रखता है। उसके शरीर में निर्मित हर एक पदार्थ जैसे गाय का गोबर, गोमूत्र, गाय का दूध और यहां तक कि उसका स्वेदजल और सांस भी उपयोगिता का खजाना है। उनसे हमारी अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, ईंधन उत्पादन और स्वास्थ्य सेवाओं को मिलने वाले लाभ कि कोई तुलना नहीं। जब किसी कारखाने या उद्योग को बम से उड़ाने की सज़ा नियत की जा सकती है तो गाय जैसे इतने अनमोल उपयोगिता के प्राणी को मारने पर सज़ा क्यों नहीं?

- गौमांस उत्पादन में पर्यावरण को नुकसान की जो कीमत चुकानी पड़ती है, वह पशुधन की दूसरी उत्पादक गतिविधियों में सबसे

ज्यादा है। मांस उद्योग दुनिया में सबसे ज्यादा प्रदूषण फैलाने वाला उद्योग है और इस में भी गौमांस उद्योग पर्यावरण के लिए सर्वाधिक घातक है।

- गौमांस उत्पादन में दुसरे खाद्य उद्योगों के मुकाबले स्वच्छ पानी की ख़पत सबसे ज्यादा है। एक पौंड गौमांस उत्पादन में अनुमानित पानी का व्यय ४४१ गैलन से १२००८ गैलन तक है। इसकी तुलना में धान या गेहूं का उत्पादन ५० से १०० गुना तक अधिक कार्यक्षम है! भारत ही क्या आज सारी दुनिया में ही लोगों को गौमांस भक्षण से दूर करने की मुहीम चलाई जा रही है ताकि हमारी आने वाली पीढियां पीने के लिए पानी औए खाने के लिए भोजन को न तरसें।
- अश्मीभूत उर्जा का सबसे अक्षम उपयोग है गौमांस उत्पादन। इसमें उर्जा के निवेश और उत्पादन का अनुपात ५४:१ है जबकि चिकन के लिए यह ४:१ है, पोर्क (सूअर का मांस) के लिए २६:१ है, अण्डों के लिए ६:१ है और भारतीय खाद्यान्न के लिए यह अनुपात करीब२:१ है। आशय एकदम स्पष्ट है – जब तुम अनाज़ की बजाए गौमांस खाते हो तब तुम्हारी “जीभ के चोंचलों से वशीभूत इस तथाकथित व्यक्तिगत स्वतंत्रता” के कारण ५४ लोग भुख़मरी का शिकार होते हैं।

हम अपने प्राचीन ऋषियों के प्रति ह्रदय की गहराई से आभार प्रकट करते हैं, जिन्होनें भारतीय संस्कृति की आधार शिला बनाई। उन्होंने अपनी दू-रद्दष्टि से वह चीज़ पहले ही जान ली थी जिसे पहचान कर सही कदम उठा पाने में हुई देरी पर दुनिया आज पछता रही है।

६

गौमांस प्रेमी और उनके दोगले मापदंड।

अगर कोई कहता है कि उसे क्या खाना चाहिए और क्या नहीं यह उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता है और इसलिए उसे गाय और दुसरे मवेशियों को मारने की इज़ाज़त मिलनी चाहिए, तो पहले उसे निचे लिखी गई बातों से प्रतिबंध उठाने की मांग करनी चाहिए:

- राष्ट्रीय और लुप्तप्राय: पशु-पक्षियों का शिकार विश्व के बहुत से सभ्य देशों में प्रतिबंधित है। भारत में तुम बाघ और शेर का अवैध शिकार नहीं कर सकते, यू. एस. में एक विशेष कानून के तहत बॉल्ड और सुनहरे ईगल को मारने पर रोक लगाई गई है। अगर किसी के पास सिर्फ उसके सुनहरे पंख ही बरामद हो जाएं, तब भी जबरदस्त जुर्मना चुकाना पड़ता है। और शिकार कर लेने से तो भारी जुर्माने के साथ लंबी कैद काटनी पड़ती है।

- ऐतिहासिक धरोहरों और संरक्षित इमारतों तोड़ना या उसे बिगड़ना प्रतिबंधित हैं। आखिरकार कुछ इमारतें इतनी विशिष्ट क्यों समझी गई हैं? इन "स्वतंत्रता प्रेमियों" के पास इस बात की स्वतंत्रता क्यों नहीं है कि वे यह तय कर सकें कि कौन सी इमारत विशेष है और कौन सी नहीं?

- राष्ट्रीय चिन्हों जैसे कि राष्ट्रीय ध्वज का अपमान और उसे अपवित्र करना प्रतिबंधित है।

- लाइसेंस रहित हथियार और अस्त्र शस्त्रों को बेचने और ढ़ोने पर प्रतिबंध है।

- बिना कपड़ों के सार्वजानिक स्थानों पर घूमना और खुल्लम खुल्ला सेक्स करना प्रतिबंधित है।
- आपसी सम्मति से होने वाला नर मांस भक्षण पर प्रतिबंध है।
- मादक पदार्थों की सेवन और बिक्री प्रतिबंधित है, इत्यादि, इत्यादि.....

गौमांस प्रतिबंध पर चीख़-पुकार मचा रही उदारवादियों की मण्डली ने ऊपर बताये गए एक भी प्रतिबंध या व्यक्तिगत स्वतंत्रता के दुसरे किसी भी पहलू पर एकजुटता नहीं दिखाई है। बॉलीवुड की बहुत सी हस्तियां गौमांस प्रतिबंध पर ट्वीट कर रही हैं। शिरीन देवी - उर्दू पत्रिका की एक मात्र महिला संपादक - को अपनी पत्रिका में चार्ली हेब्दो के कार्टून छापने पर बरखास्त किया गया, उन्हें गिरफ्तार किया गया और अब वो गुमनामी के अंधेरे में जीने को मजबूर हैं। हालांकि उन्होंने अपनी पत्रिका में यह कार्टून निंदा करने के लिए नहीं छापे थे तब भी उन्हें असनीय मानसिक त्रास झेलना पड़ा। यह मुद्दा अख़बारों की सुर्ख़ियों में भी छाया रहा। वह मुंबई निवासी हैं लेकिन फिर भी किसी बॉलीवुड़ी हस्ती या बीफ़ प्रेमी ने उसके बचाव में खड़े होने की हिम्मत नहीं दिखाई। “बोलने की आज़ादी” के समर्थन में किसी ने भी चार्ली हेब्दो के कार्टून को अपनी फेसबुक वॉल पर पोस्ट नहीं किया या ट्वीट नहीं किए।

इसी से इनके दोगले मानदंड ही जाहिर होते हैं।

मैं सभी बीफ़ प्रेमियों को चुनौती देता हूं कि वे ऊपर लिखित सभी नियमों और प्रतिबंधों के ख़िलाफ़ एकजुटता दिखाएं, जो कि गौमांस प्रतिबंध के पहले से चले आ रहे हैं। इन मुद्दों पर अपनी जानबूझ कर ओढ़ी हुई चुप्पी का जवाब दें।

अश्लील साहित्य की एक नामी लेखिका का कहना है कि महाराष्ट्र में बीफ़ खानेवालों के अधिकारों के पक्ष में वह पांच साल तक जेल की सजा काटने को भी तैयार है। तो उसे कभी प्रकाशकों के अधिकारों का समर्थन करने के लिए चार्ली हेब्दो के कार्टून्स को भी प्रकाशित करके दिखाना चाहिए, कभी बेखुदी के आलम में रहने वालों का साथ देने के लिए मादक द्रव्यों का सेवन भी करना चाहिए, सेक्स के पीछे पागल लोगों का साथ देने के लिए सड़कों पर खुल्लम-खुल्ला नग्न सेक्स क्रियाएं भी करनी चाहिएं। वगैरह, वगैरह ....

लेकिन ये लोग ऐसा करेंगे नहीं। क्योंकि ऐसा करने में उनकी जान पर आ बनेगी। इसकी बजाए, इन लोगों के लिए बहुसंख्य शांतिप्रिय भारतीयों की निर्दोष भावनाओं का अपमान करना दिल बहलाव का आसान और सुरक्षित तरीका है। यह बिलकुल हानिरहित है क्योंकि बहुसंख्य भारतीय दुसरे वर्गों के विपरीत, जो तुम्हारे सिर पर मौत का फ़तवा जारी करने के लिए मशहूर हैं, पलट कर वार नहीं करते।

७

लोकतंत्र में संपूर्ण स्वतंत्रता नहीं हो सकती।

लोकतंत्र में निरंकुश स्वतंत्रता नहीं दी जा सकती। एक प्रबुद्ध लोकतंत्र में कभी स्वच्छंदता नहीं होती, क्योंकि हो सकता है कि तुम्हारी स्वतंत्रता, मेरी स्वतंत्रता में दख़ल दे। स्वतंत्रता और रोक से जुड़े सभी मुद्दों को इन सीमाओं में बांधा हुआ है:

- बहुसंख्य आबादी का सामूहिक ज्ञान जो निर्वाचन के व्यवहार में जाहिर हो जाता है।
- जवाबदेही और परिपक्वता – जिसके साथ इंसान अपनी स्वतंत्रता

का उपयोग कर सके।

- प्रजा की हानिरहित भावनाओं का सम्मान। तुम्हारी स्वतंत्रता वहीं समाप्त हो जाती है, जहां वो मेरी स्वतंत्रता में बाधा डालने लगती है।

गौमांस प्रतिबंध की अगर बात करें तो यह एक लोकतान्त्रिक और क़ानूनी तरीके से लगाया गया प्रतिबंध है। जिस सरकार ने यह कानून लाया है, वे इसे अपने चुनावी घोषणा पत्र में जाहिर कर चुके थे। अपने घोषणा पत्र में गौमांस उत्पादन पर प्रतिबंध लगाने का वादा करके ही वे मतदाताओं के पास गए थे। मतदाताओं ने इस पर उन्हें अपना समर्थन दिया और अनुमति दी कि सत्ता में आ कर सरकार इसे क़ानूनी रूप दे। अब अगर वे मतदाताओं से किए अपने वादे को पूरा नहीं करते हैं, तो यह सरकार बेईमानी कही जाएगी। पर सरकार ने ईमानदारी का रास्ता अपनाते हुए और लोकतांत्रिक प्रक्रिया का सम्मान करते हुए मतदाताओं की इच्छाओं को पूरी करने का वादा किया है।

अगर किसी को लोकतंत्र पर आपत्ति है तो बेहतर होगा कि वह जंगलों में रहने के लिए चला जाए, जहां हर एक प्राणी को पूरी स्वतंत्रता है कि वह जो जी में आए करे।

८

बीफ़ समर्थकों की आतंकी मानसिकता।

ये गौमांस समर्थक कहते हैं कि:

"मुझे इससे कोई मतलब नहीं कि गाय तुम्हारी माँ है। अगर गाय खाने से पर्यावरण को हानि पहुंचती है तो मुझे इसकी कोई परवाह नहीं। अगर

इसका परिणाम ३० लोगों की भूखमरी में होता है तो मुझे क्या? अगर २० लोग इस कारण प्यास से मरते हैं तो मैं क्या करूं? मुझे संस्कृति, अर्थव्य-वस्था, पर्यावरण, ग़रीबी, दूसरों की भावनाएं, ये सब से कोई मतलब नहीं। मुझे कानून और लोकतंत्र की भी कोई फिक्र नहीं। मुझे सिर्फ मेरे जीभ के चटखारे से मतलब है। अगर मुझे तुम्हारी माँ को खाने में मज़े आते हैं चाहे जिन्दा हो या मरी हुई, मुझे खाने दिया जाए। भले ही यह कानून के ख़िलाफ़ हो क्युकी गौमांस मेरा मूलभूत अधिकार है।"

यह बिलकुल वही मानसिकता है जो एक आई.एस.आई.एस का आतंकी, एक बलात्कारी, एक मनोविकृत और एक अपराधी रखता है। इससे कुछ और ही साबित होता है। और वह ये कि गौमांस की आसक्ति मात्र ने ही भारतीयों के मन में इतनी क्रूरता भर दी है, तो फिर गाय खाने से क्या परिणाम होता होगा, यह तो भगवान ही जानें। इसलिए गांधीजी ने गौरक्षा को स्वराज्य के बराबर बताया था।

९

गौमांस प्रतिबंध से बेरोज़गारी नहीं।

गौमांस भक्षण के समर्थन में दी जाने वाली एक और लचर दलील यह है कि इससे बेरोज़गारी बढ़ेगी। गौमांस प्रतिबंध अमानवीय है।

यह दलील फिर से दोहरे मापदंडों को दर्शाती है। सिर्फ कुछ चुनिंदा लोगों के लिए ही अचानक यह प्यार क्यों? अगर तुम चुनिंदा लोगों के लिए इतने संवेदनशील हो, तो इतने विशाल बहुमत के लिए असवेदंशील क्यों? गौमांस भक्षण से पैदा होती भूख और प्यास की अनदेखी क्यों?

यह लचर दलील किसी भी वैध या अवैध धंधे को बंद करते हुए दी जा सकती है। उदाहरण के लिए अवैध हथियार, अवैध शराब, मादक पदार्थ

और अफीम के उत्पादों पर प्रतिबंध लगाने से कुछ लोग बेरोज़गार हो जाएंगे। आखिर, ऐसा कोई उद्योग नहीं जो बिना इंसानों के चलता हो। यहां तक कि आई.एस.आई.एस, अल कायदा, बोकोहराम और दुसरे कई आतंकी संगठन अगर बंद हो गए तो कई आतंकवादी बेरोज़गार हो जायेंगे! तो क्या हम आतंकवाद को रोजगार के विकल्प के रूप में बढ़ावा देना शुरू कर दे? साफ़ है कि यह सिर्फ़ एक "मनोरोगी" की सोच है, जिसके लिए भोगासक्ति ही सब कुछ है, बाकी दुनिया जाए भाड़ में।

जो लोग गौमांस पर प्रतिबंध से बेरोज़गार होंगे, वे दुसरे वैध उद्योगों में काम पा सकते हैं। अगर गौमांस उत्पादक उन्हीं संसाधनों का उपयोग करके अनाज़ उत्पादन शुरू कर दें, तो ३० से १०० गुना ज्यादा बड़े बाज़ार की आवश्यकताएं पूरी कर सकते हैं। इससे रोज़गार बढ़ने के साथ-साथ समृद्धि आएगी और पर्यावरण का भी भला होगा।

गौमांस प्रतिबंध पर हो-हल्ला मचाने की बजाए बीफ़ प्रेमियों को चाहिए कि वे बीफ़ उद्योग में काम कर रहे लोगों के लिए रोज़गार के फायदेमंद विकल्प ढूंढे।

तुम्हारे पास पैसे हैं और तुम जेल जाने के लिए उछल सकते हो तो इन लोगों के पुनर्वास के लिए भी कुछ पैसे खर्च क्यों नहीं कर सकते? आतंकियों के रोज़गारों की सुरक्षा के नाम पर आतंकवाद को वैध करने की मांग क्यों?

१०

मेरी माँ के अपमान को सही ठहराना बंद करो।

अपनी धौंस देना बंद करो। यहां अपने उपदेश की दादागिरी मत झाड़ो। मुझे मत बताओ कि मैं गाय की माता के रूप में पूजा क्यों न करूं? मवेशियों के प्रति मेरी भावनाओं का सम्मान करने वाली, भूख को हटाने वाली,

गरीबी दूर करने वाली और पर्यावरण का संरक्षण करने वाली सरकार चुनने के लिए मेरी हंसी उड़ाना बंद करो। मुझे धमकाना बंद करो कि तुम अपनी जीभ के शौक के लिए मेरी भावनाओं का अपमान करोगे और कानून भी हाथ में लोगे। यह सब आई.एस.आई.एस और तथाकथित नैतिकतावादियों की उन्मादी सोच के दायरे में आता है।

अगर सचमुच तुम स्वतंत्रता और अधिकारों के पीछे इतने ही पागल हो तो सही मसलों के लिए अपनी आवाज़ उठाओ। मेरी माँ के अपमान का समर्थन करना बंद करो। भूख और पर्यावरण के विनाश को न्यौता देना बंद करो। सभी समुदायों की सभी स्त्रियों को समान अधिकार दिलाने के लिए समान नागरिक संहिता की मांग करो। शिरीन देवी के लिए आवाज़ उठाओ, जिनका घर से बाहर निकलना भी मुश्किल हो गया है क्योंकि उन्होनें चार्ली हेब्दो के कार्टून्स अपनी पत्रिका में छापे थे। उन बेज़ुबान जानवरों की आवाज़ बनो जिनकी ज़िंदगी इन जिव्हा लोलुप लोगों के चलते खतरे में पड़ी हुई है। मेरी माँ के पीछे पड़ने की बजाए सैंकड़ों सही मुद्दों के लिए अपनी आवाज़ बुलंद करो। (अगर हिम्मत है तो!)

११

किसी भी चीज़ पर प्रतिबंध का एक उचित तरीका होता है।

कायर बीफ़ प्रेमियों द्वारा दी जाने वाली एक और मूर्खता पूर्ण दलील यह है कि: "मैं लौकी और आलू की पूजा करता हूं। उन्हें खाना मेरी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना है। इसलिए उस पर भी प्रतिबंध लगाओ।"

ठीक है। तो अब जवाब भी सुनो। तुम्हें उन पर प्रतिबंध लगवाने का पूरा अधिकार है। यहां उसका तरीका दे रहा हूं:

- सबसे पहले लौकी, आलू, रोटी, दालें इत्यादि जो भी तुम्हारी

भावनाओं को ठेस पहुंचाता हो, उसे खाना बंद करो।

- उसके बाद, तुम अपने समान विचार वाले लोगों का (जो तुम्हारी ही तरह आलू को पूजते हों) एक संगठन बनाओ।
- उसके बाद चुनाव लड़ो और अपने चुनावी घोषणा पत्र में साफ़ शब्दों में आलू, दालें ... इत्यादि पर प्रतिबंध लगाने की अपनी मंशा ज़ाहिर करो। आलू भक्षकों के लिए मौत की सज़ा का प्राव-धान करने से भी मत चूको।
- चौथी बात यह है कि चुनाव जीतो, फिर एक विधेयक बनाओ, उसे सदन में पारित करवा कर कानून बनाओ।
- फिर अपने मतदाताओं को सहर्ष धन्यवाद दो।
- और उसके बाद अगर मैं आलू खाता हुआ पाया जाऊं, तो मुझे कानूनन फांसी पर चढ़ा देना।

भारत लोकतांत्रिक प्रक्रिया में विश्वास रखने वाला देश है। हर इंसान को इसका आदर करना चाहिए और उसे अपनाना चाहिए। लेकिन अगर लोकतंत्र में जीना तुम्हारे बस की बात नहीं है तो मेरे हिसाब से तुम्हारे लिए सोमालिया, आई.एस.आई.एस के इलाके या अफ्रीकी जंगलों के आश्रय स्थल सबसे बढ़िया रहेंगे।

१२

गौमांस प्रतिबंध पूरी तरह कायदे के दायरे में ही हुआ है।

बीफ़ प्रेमियों की एक बड़ी संख्या कानून तोड़ कर अपनी जिव्हा लोलुपता को शांत करने की धमकी दे रही है। कुछ का कहना है कि अगर बीफ़ रात

को सड़कों पर घूमता नज़र आए, तो ये उसकी गलती है। उसे खा लिया जाएगा। अश्लील साहित्य की एक लेखिका का कहना है कि वह गौमांस खाकर रहेगी, चाहे इसके लिए उसे जेल ही क्यों न जाना पड़े। इस पर हमें ये कहना है कि:

आतंकियों की तरह पेश आना बंद करो। इस दलील के अनुसार तो तुम सुनसान सड़क पर बच्चों को खाने की सिफारिश भी करोगे। इस मानसि-कता को मनोविकृति कहते हैं।

दूसरी बात, अगर तुम्हारे पास अधिकार है कि तुम अपनी "व्यक्तिगत स्वतंत्रता" का दावा करने के लिए कानून तोड़ोगे, तो मेरे पास भी यह अधिकार है कि मैं मेरी माँ पर हमला करने का तुम्हें मज़ा चखाऊं। अगर इन अवैध बीफ़-प्रेमी कार्यकर्ताओं को काबू में लाने के लिए गौभक्तों को कुछ दूसरे तरीके भी अपनाने पड़ गए तो फिर शिकायत मत करना। इसलिए कानून के दायरे में रहो और अराजकता मत फैलाओ।

१३

गौमांस प्रतिबंध लोकतांत्रिक है।

बीफ़ प्रेमियों की एक जमात इस प्रतिबंध को अलोकतांत्रिक और असंवै-धानिक बता रही है।

यह कितना बड़ा मजाक है! शायद वो लोग स्कूल में पढ़े नागरिक-शास्त्र के पाठों को भूल गए हैं। भारतीय संविधान की राज्य नीति, भाग IV के निदेशक सिद्धांतों में 'मवेशियों के कत्ल पर प्रतिबंध' का स्पष्ट उल्लेख है। वहां साफ शब्दों में कहा गया है - "यह राज्य का कर्तव्य होगा कि वह कानून बनाते समय इन सिद्धांतों का प्रयोग करे।" (अनुच्छेद ३७)

"राज्य को यह कोशिश करनी होगी कि कृषि और पशुपालन की योजना आधुनिक और वैज्ञानिक पद्धति से हो। और राज्य को विशेषतः नस्लों के संवर्धन और उन्नतिकरण के लिए कदम उठाने होंगे। और गाय, बछड़ों और दुसरे दुधारु और भार वाहक पशुओं के कत्ल को प्रतिबंधित करना होगा।" (अनुच्छेद ४८)

इसका मतलब यह हुआ की गाय के क़त्ल पर प्रतिबन्ध लगा कर महाराष्ट्र सरकार ने जो किया है वो पूरी तरह से संवैधानिक है। और पूरी प्रक्रिया संवैधानिक ढ़ंग से कि गई है। जिन लोगों को इस पर आपत्ति है, उन्हें संविधान और संविधान निर्माताओं को कोसना चाहिए, बजाए इसके कि वो उन लोगों को बुरा-भला कहें जो कि संविधान का आदर और पालन कर रहे हैं। अगर भारतीय संविधान से आपका बुनियादी तौर पर ही विवाद है तो बेहतर होगा कि तुम भारत छोड़ कर कहीं और जाकर बस जाएं। क्योंकि भारत अपने संविधान के अनुसार ही चलेगा और संविधान के प्रति निष्ठा रखते हुए अपने गणतंत्र दिवस का उत्सव भी मनाएगा।

सारांश

बीफ़ प्रेमी, आलू पूजक और भारतीय संस्कृति के खिलाफ बोलने वाले लोगों को जो करना हो वह करते रहें। हम उन्हें लोकतांत्रिक, बौद्धिक और कानूनी रूप से टक्कर देने की ठान चुके हैं। और अगर वे लोग परोक्ष या अपरोक्ष रूप से अवैध तरीके अपनाते हैं तो फिर वे लोग अपनी करनी का फ़ल भुगतेंगे। और तब उन्हें शिकायत करने का भी कोई अधिकार नहीं होगा।

इसलिए हम उनसे अपील करेंगे कि वे इन दोहरे मापदंडों को छोड़ें और अग्निवीर के साथ मिलकर लाखों-लाखों लोगों की अभिलाषाओं की लो-

कतांत्रिक तरीके से पूर्ति करें।

और अगर वे इस पर राज़ी नहीं होते, तो याद रखिए कि हम वीर शिवाजी पर गर्व करते हैं, जिन्होंने अपनी जान की बाज़ी लगाकर गायों की रक्षा की थी। और हमें अपनी दिव्य संस्कृति पर अभिमान है जिसने हमें भूख, गरीबी, प्रदूषण से बचने का और सद्भाव से जीने का रास्ता दिखाया। किसी भी इंसान की विकृत भोगासक्ति का विचार किए बिना हमें उसका संरक्षण और संवर्धन करना चाहिए। फिर भले ही हमें इसके लिए कुछ भी क्यों न करना पड़े!

अध्याय ४

गौभक्षकों को मुहं तोड़ जवाब

गौहत्या अगर तुम्हारा खेल है, तो तुम्हे तोड़ना मेरा मनोरंजन।

- अग्निवीर

इससे पहले के अध्याय में मैंने ऐसे कई बिन्दुओं की चर्चा की जिससे यह साबित होता है कि गौमांस प्रतिबन्ध के खिलाफ जारी यह आन्दोलन कितना गलत और बेबुनियाद है। यह अध्याय विशेष रूप से गौमांस प्रेमियों के लिए है और हमें दी गई गौ भक्षकों की धमकियों पर आधारित है।

यहां हम अपने तथ्यों और तर्कों से उन्हें मुंह तोड़ जवाब देंगे।

१

गौ हत्या बंदी संविधान के खिलाफ़ है।

गौहत्या बंदी संविधान और लोकतंत्र दोनों के खिलाफ़ है।

अग्निवीर:

- शायद तुम पाकिस्तान का संविधान पढ़ कर आये हो।
- गौहत्या बंदी का कानून लोकतान्त्रिक प्रक्रिया के तहत आया है, जिसमें बहस भी हुई है, चर्चा भी हुई है और जिसके लिए लोगों द्वारा चुनाव में अपना मत या वोट भी दिया गया है।

२

मुम्बई के चिड़ियाघर में बेचारे शेर क्या खाएंगे?

गौ हत्या बंदी के चलते मुम्बई चिड़ियाघर में शेर बेचारों को अब चिकन खिलाया जा रहा है।

अग्निवीर:

- तुम को शेरों से इतना प्यार कब से हो गया? और गाय ने ऐसा क्या जुर्म किया है जो तुम उनसे इतनी नफरत करते हो?
- अगर तुम को उनकी इतनी चिंता हो रही है तो तुम अपना मांस ही क्यों नहीं खिला देते शेरों को? इंसान का मांस तो शेरों को बहुत स्वादिष्ट लगता है। शेरों के लिए मेरी माँ की हत्या क्यों करना चाहते हो?
- उन शहरों के चिड़ियाघरों में शेर क्या खाते हैं जहां गौमांस पिछले

६० वर्षों से बंद है?

- अगर तुम शेरों से सचमुच हमदर्दी रखते हैं तो उन्हें चिकन खिलाये जाने पर चिंतित होने की बजाए पिंजरे से उनकी रिहाई के लिए आवाज क्यों नहीं उठाते? उनके नैसर्गिक वातावरण में वापसी के लिए आन्दोलन शुरू क्यों कही करते? और उनके जाने से जो पिंजरे ख़ाली होंगे उनमें तुम जैसे शिक्षित जानवरों को बिठा देंगे। वहां तुम चिकन खाने का लुत्फ़ भी उठा सकते हैं और जितने लोग शेरों को देखने आते थे उससे कही ज्यादा लोग तुम को देखने पहुंचेंगे। जिससे काफी आमदनी होगी और देश की अर्थव्यवस्था को भी फायदा होगा। और इन पैसों का उपयोग उन लोगों के पेट भरने के लिए हो सकता है जो सरकार द्वारा लाये गए गौहत्या बंदी के कानून के कारण बेरोजगार हो गए हैं। इससे सभी का भला होगा।

३

तुम उदारवादी (liberal) नहीं बन रहे हैं।

पूरी दुनिया उदार(liberal) बन रही है और तुम पीछे जा रहे हैं।

अग्निवीर:

- तो थोड़ी उदारता गाय और बैलों पर भी दिखाओ, सारी उदारता क्या सिर्फ तुम्हारे लिए ही है? क्या पूरी दुनिया तुम पर केन्द्रित है?
- तुम्हारी उदारता की परिभाषा के अनुसार बाकी सब तुम्हारे गुलाम हैं और तुम जब चाहें उन्हें खा भी सकते हो?
- अगर तुम्हारे अनुसार गौहत्या उदारता है, तो इंसान के मांस से

तुम्हे क्या परहेज है? क्योंकि तुम्हारे अनुसार तुम जितने बुद्धिमान प्राणी को मारोंगे उतने ही ज्यादा उदार तुम होंगे! क्योंकि तुम सबसे ज्यादा बुद्धिजीवी होने का दावा करते हो, तो दुनिया को उदार बनाने के लिए तुम को सबसे पहले मारा जाना चाहिए।

४

गौमांस बंदी से विदेशी निवेश को नुकशान होगा।

इस प्रकार के कानून से देश में विदेशी निवेश को हानि पहुंचेगी, आखिर हम विदेशी लोगों को क्या खिलाएंगे?

अग्निवीर:

- क्या तुमने या तुम्हारे जैसे ही बीफ प्रेमियों ने कभी अमेरिका या स्विट्ज़रलैंड जाने से इसलिए इंकार किया है क्योंकि वहां ‘वड़ापाव’ नहीं मिलता?

- क्या विदेशों में मिलने वाले अवसर तुम इसलिए नकारते हो क्योंकि वहां लुंगी नहीं पहन सकते?

- मैंने कभी नहीं सुना कि किसी समझदार विदेशी ने भारत की संस्कृति और खाने की वजह से यहां आने से इंकार किया हो। बल्कि बहुत से विदेशी (जिनका आना सच में मायने रखता है) वो यहां की सांस्कृतिक विविधता के प्रति संवेदनशील होते हैं और यहां के रीति-रिवाजों के प्रति सम्मान प्रकट करते हैं और इससे आनंदित होते हैं। गौमांस के बिना कोई मर नहीं जायेगा। कोई भी समझदार विदेशी भारत में निवेश करने से सिर्फ इसलिए मना नहीं करेगा क्योंकि यहां गौमांस (जो की स्वास्थ्य के लिए अत्यंत

हानिकारक है) नहीं मिलता! अब तो विकसित राष्ट्रों में भी गौमांस के दुसरे स्वस्थ विकल्पों का उपयोग किया जाने लगा है क्योंकि गौमांस सबसे निचले दर्जे का मांस समझा जाता है जो कैंसर पैदा करता है।

- भारत के जिन हिस्सों में गौमांस नहीं मिलता है, वहां भी विदेशी निवेशक आते रहे हैं। गुजरात पूंजीनिवेश का अग्रणी केंद्र बना रहा है। मिड़िल-ईस्ट में सूअर का मांस नहीं मिलता, तब भी वहां लगातार विदेशियों का जाना जारी है। यह तो मैंने कभी नहीं सुना कि खाने की आदतों के कारण कोई इंसान किसी राज्य को निवेश के लिए चुनता हो।

५

मेरी जिंदगी, मेरी मर्जी।

अग्निवीर:

- हाँ, मेरी जिंदगी, मेरी मर्जी। और मेरी मर्जी यह है कि मैं अपने गोधन की रक्षा करूँ।
- मेरी मर्जी है कि मेरे गोधन को मारने की कोशिश करने वाले को विनष्ट कर दूं।
- मेरी मर्जी है कि जो मेरे देश के संविधान और देश की आज़ादी के लिए शहीद हुए वीरों की भावनाओं का सम्मान नहीं करते हैं उनके लिए मैं कोई सहनशीलता न दिखाऊं।
- मेरी मर्जी है कि मैं अपनी माता - भारत माता, गौ माता, वेद माता, संस्कृति माता, धरती माता और मातृभाषा की प्रखरता से

रक्षा करूं। इन सबको माँ मानना भी मेरी मर्जी है और जो मेरी माँ को मारने की बात करेगा उसका नामो-निशान मिटाना भी मेरी ही मर्जी होगी।

- तुम्हारे लिए एक सीख है कि तुम अपनी मर्जी अपनी हद में रखो।

६

इससे बहुत से लोग बेरोजगार हो जायेंगे।

बीफ इंडस्ट्री (गौमांस उद्योग) में बहुत से लोग बेरोजगार हो जायेंगे? उनके परिवारों का पालन-पोषण कैसे होगा?

अग्निवीर:

- उनका पालन-पोषण तुम ही क्यों नहीं करने लगते? आखिर मदद तो घर से ही शुरू होती है।
- तो फिर तुम नशीले पदार्थों के व्यापार, आतंकवाद और इन्सानों की तस्करी को भी क़ानूनी मान्यता दिलाने की मांग करो, इन पर भी लाखों परिवार पलते हैं।
- जैसा कि हम बता चुके हैं, अपने को चिड़ियाघर में रख दो, इस से इन लोगों की मदद के लिए काफी पैसा जमा हो जाएगा।

हमारा सुझाव है कि क्यों न उनको वैकल्पिक रोजगार उपलब्ध कराए जाएं। जैसे कृषि, पशुपालन और ड़ेरी उद्योग। जो कल तक गाय को मारते थे, वही आज मानव बन गाय की सेवा करें।

७

हिन्दू दोषी हैं। अधिकतर क़त्लखानों के मालिक भी हिन्दू ही हैं। यह हिन्दू ही हैं जो अपनी बूढ़ी गायों को कसाइयों को बेचते हैं। अधिकतर क़त्लखानों के मालिक भी हिन्दू ही हैं। उन्हें दोष क्यों नहीं देते?

अग्निवीर:

- हां, हम उन्हें दोष देते हैं। लेकिन इससे यह सच्चाई नहीं बदल जाती कि अधिकांश भारतीय गाय को माँ मानते हैं।
- अगर तुम को बूढ़ी गायों की इतनी ही चिंता है तो अग्निवीर को दान कर दो। हम उनकी सुरक्षा और आश्रय के लिए सक्रीय हैं। हम उनके गोबर और गौमूत्र का उपयोग बिजली बनाने के लिए करते हैं।

८

मैं क्या खाऊं ये बताने वाले तुम कौन हो?

अग्निवीर:

- और मैं किसे माँ मानूं यह बताने वाले तुम कौन हो?
- तुम क्या खाते हो इससे मुझे कोई मतलब नहीं। पर अगर तुम मेरी माँ को मारते हो तो मैं किसी भी हालत में अपनी भावनाओं पर तुम्हारी ज़बरदस्ती बर्दास्त नहीं करूंगा।

९

अगर मैं आलू की पूजा करूं, तो क्या उसपर रोक लगाएंगे?

कल को अगर मैं कहूँ कि मैं आलू की पूजा करता हूं ,तो क्या तुम आलू खाने पर भी रोक लगा दोगे?

अग्निवीर:

- पहले तो तुम इस बात का तय कर लो कि तुमने अपने आलू भगवान को पूरी ज़िन्दगी में कभी भी न खाया हो। लेकिन अगर तुम्हे अभी-अभी इस बात का अहसास हुआ है कि आलू तुम्हारा भगवान है, तो तय कर लो कि तुम अपनी आने वाली जिंदगी में उसे कभी नहीं खाओगे, भले ही आलू खाने पर रोक हो या न हो।
- इस तरह की रोक को लगवाने का प्रयास करके देखिये, लोग तुम को जेल में नहीं बल्कि पागलखाने में डाल देंगे।
- अगर लाखों लोग हजारों पीढ़ियों से आलू को भगवान मानते आ रहे हों तब तुम उस पर रोक लगाने कि कोशिश कर सकते हो। जब तुम जैसे लोग मुंबई में गौस पर रोक के खिलाफ़ 'विशाल' रैली निकालने का ऐलान करते हो तो ख़त्म होते इस व्यवसाय से जुड़े कुछ लोगों के आलावा उसमें शामिल होने के बारे में कोई सोचता भी नहीं। ऋषि कपूर या फ़रहान अख्तर जैसे लोग जो यूं तो मेरी माँ के क़त्ल की तरफ़दारी करते हैं लेकिन उनकी ओर से भी कोई तुम्हारी रैली में शामिल नहीं हुआ।

१०

तुम हिन्दू कट्टरवाद फैला रहे हैं।

अग्निवीर:

- अगर गाय को माँ मानना हिन्दू कट्टरवाद है, तो मेरी माँ को खाने

की बेशर्मी से सिफ़ारिश करना बहुसंख्यकों या हिन्दूओं के खिलाफ 'साम्प्रदायिक विद्वेष' है। इसलिए तुम पर आरोप लगता है कि तुम साम्प्रदायिक विद्वेष फैला रहे हो।

- अगर ये कट्टरवाद है तो तुमने पिछले ६८ वर्षों में भारतीय संविधान को "हिन्दू कट्टरवादी" कहने का साहस क्यों नहीं किया? इस "हिन्दू कट्टरवाद" का मूल भारतीय संविधान के मार्गदर्शक सिद्धांतों में बसता है। इसलिए गौ प्रेमियों को गालियां देने से और उन्हें गौमांस खाने की धमकियाँ देने से तुम सिर्फ साम्प्रदायिक ही नहीं, बल्कि राष्ट्र-द्रोही भी साबित होते हो।

११

बहुत से हिन्दू भी गौमांस खाते हैं।

अग्निवीर:

- बहुत से भारतीय लूट, हत्या और बलात्कार करते हैं, तो क्या?
- बहुत से मुसलमान सूअर का मांस खाते हैं, बहुत से ईसाई दुनिया के सातों महापापों में शामिल रहते हैं, तो उससे क्या?
- कानून हिन्दू या मुसलमान के लिए नहीं है। कानून भारतीयों के लिए है। और भारतीय होने के नाते अगर तुम जहां गौहत्या पर पाबन्दी है वहां परोक्ष या अपरोक्ष तौर से गौहत्या में शामिल हो, तो तुम सीधे जेल जाओगे।

१२

हिन्दू धर्म भी गौमांस खाने की अनुमति देता है।

ऋग्वेद में कई मन्त्र हैं जो गौमांस खाने का समर्थन करते हैं। यज्ञों में गौमांस परोसा जाता था। स्वामी विवेकानंद भी गौमांस खाते थे।

अग्निवीर:

- हिन्दुत्व से अचानक इतना प्यार! सिर्फ एक प्रतिबन्ध के कारण तुम ने हिन्दुत्व पर इतनी खोज कर ली! मुझे उत्साहित करने के लिए धन्यवाद!

- अग्निवीर की खुली चुनौती है कि तुम चार वेदों में कहीं भी गौमांस भक्षण के समर्थन में एक भी मन्त्र निकाल कर दिखाओ। अगर तुम हमें गलत साबित कर देते हैं तो हम भी तुम्हारे साथ गौमांस खाने के लिए तैयार हैं। लेकिन आज तक इस चुनौती में कोई हमें हरा नहीं पाया है।

- इस के विपरीत गौमांस भक्षक को घोर दण्ड देने का विधान करने वाले बहुत से मन्त्र वेदों में है तो क्या अब हम उनका भी पालन करके उम्हे सजा दिलवाए, क्योंकि तुम्हारे अनुसार तुम्हे हिन्दुत्व से भी प्यार है और गौमांस खाना भी पसन्द है।

- स्वामी विवेकानंद भी गौमांस खाते थे? सच में? क्या तुम स्वामी विवेकानंद के रसोइये थे?

१३

ऋग्वेद के मन्त्र क,ख,ग गौमांस का समर्थन करते हैं।

अग्निवीर:

- क्या तुम ऋग्वेद का एक अक्षर पढ़ भी सकते हैं? शायद तुम

डॉ.नाइक और डॉ.झा जैसे मूढ़ लोगों की नक़ल कर रहे हो।

- अग्निवीर इस बकवास का जवाब बहुत पहले ही दे चुका है। अपने इन डॉक्टर्स से कहें कि वे कोई पुख्ता सबूत लेकर आएं।
- हम तुम जैसे विकृत लोगों के दावों पर आधारित हिन्दुत्व का अनुसरण क्यों करें? जिनका हिन्दुत्व के लिए प्यार भी उनकी जीभ की विकृत लालसा के कारण उमड़ता है।

१४

यह देश मुसलमानों का भी है।

यह देश सिर्फ हिन्दुओं का ही नहीं बल्कि मुसलमानों का भी है।

अग्निवीर:

- गौहत्या प्रतिबन्ध इस्लाम के खिलाफ़ कैसे हुआ? कुरान में एक भी हदीस ऐसी दिखाओ जिसके अनुसार गौभक्षण इस्लाम का केंद्र हो।
- कुरान की कई हदीसें कहती हैं कि गाय का दूध लाभदायक है और गाय का मांस सेहत के लिए हानिकारक है। इससे साबित होता है कि गौहत्या प्रतिबन्ध हिन्दू और मुसलमान दोनों के हक़ में है।
- बहुत से मुस्लिम गौमांस नहीं खाते। तो तुम्हारे कहने का मतलब है कि डॉ. ए.पी.जे अब्दुल कलाम जैसे लोग इस्लाम के खिलाफ़ हैं?

१५

तुम मुस्लिम लोगों के खिलाफ़ हैं।

बीफ ट्रेड (गौमांस व्यापार) में अधिकतर मुस्लिम लोग शामिल हैं, तुम उनके खिलाफ़ क्यों हो?

अग्निवीर:

- अभी थोड़ी देर पहले तो तुम हिन्दुओं के इस व्यापार में शामिल होने की बात कर रहे थे, अब तुम सारा दोष मुस्लिमों पर डाल रहे हो!
- सच यह है कि गौमांस के इस व्यापार का हिन्दुत्व या इस्लाम से कोई लेना देना नहीं है। यह एक अवैध कारोबार है जिससे प्रदूषण, बीमारी और गरीबी फैलती है। जिससे हिन्दुत्व और इस्लाम दोनों का अनादर होता है। इसलिए गौहत्या पर प्रतिबन्ध बिलकुल सही है।

१६

तुम गरीबों के प्रति अमानवीय हो।

गौमांस गरीबों का सबसे सस्ता और मुख्य भोजन है। तुम उनके प्रति अमानवीय क्यों हो?

अग्निवीर:

- विष्ठा (मल) तो उससे भी सस्ती चीज़ है। साथ ही फाइबर और प्रोटीन से भरी हुई भी है। अगर तुम्हें दुसरे खाद्य पदार्थ इतने ही महंगे लगते हैं तो उसे ही खाना शुरू कर दो। मुफ्त में खाने की चाह में रेस्तरां के बाहर तुम ख़ाली कूड़ेदान भी खंगाल सकते हो।

- अगर तुम गौमांस को मुख्य भोजन मानते हो तो वह मांसाहारियों में सर्वाधिक लोकप्रिय क्यों नहीं है? उसका निर्यात क्यों होता है, जबकि यहां बहुत से मांसाहारी भूखे रह जाते हैं?
- गौमांस न तो प्रोटीन का सबसे सस्ता स्रोत है न ही गरीबों का मुख्य भोजन। बल्कि यह तो हानिकारक और अस्वास्थ्यकर व्यसन है, जो शरीर में कैंसर पैदा करता है। तुम गरीबों से इतनी नफरत क्यों करते हो कि उन्हें कैंसर पैदा करने वाला भोजन खिलाना चाहते हैं।

१७

गौहत्या बंदी से अर्थव्यवस्था को नुकसान होगा।

भारत गौमांस का सबसे बड़ा निर्यातक है, इस गौहत्या बंदी से अर्थव्यवस्था को नुकसान होगा।

अग्निवीर:

- देह व्यापार तो गौमांस निर्यात से भी बड़ा फायदे का व्यापार है। भारतीय अर्थव्यवस्था की सहायता के लिए तुम अपने घर से इसे शुरू करना चाहेंगे? अगर मैं तुम्हरी माँ को देह व्यापार के आर्थिक फ़ायदे के रूप में देखूं तो तुम को कैसा लगेगा? तब मेरी गौमाता के मांस को पैसों कमाने के तरीके के रूप में क्यों देखते हो?
- गौमांस निर्यात की बजाए अनाज का निर्यात शुरू करें। इस तरह हम ज्यादा लोगों का पेट भर सकेंगे और निर्यात भी ज्यादा कर सकेंगे।
- अगर तुम्हे अर्थव्यवस्था कि इतनी ही पड़ी हैं तो अफ़ीम की खेती

का जो विरोध हो रहा है उसे लेकर चिंता करो! आखिरकार अन्त-र्राष्ट्रीय बाज़ार में नशीले पदार्थों की कीमत गौमांस से भी ज्यादा है। नशीले पदार्थों की खेती पर जो पाबन्दी है उसके खिलाफ़ आन्दोलन करो।

१८

सिर्फ गाय ही क्यों? दुसरे जानवर क्यों नहीं?

दुसरे जानवरों का क्या? सिर्फ गाय ही क्यों? दुसरे जानवरों के लिए यह अमानवीयता क्यों?

अग्निवीर:

- तुम गौमांस प्रेमी हो या पशुअधिकार कार्यकर्त्ता? या फिर तुम एक अवसरवादी हैं जो गिरगिट की तरह रंग बदलता है?
- तुम्हारे कहने का मतलब है कि या तो सभी तरह के मांस बन्द किये जाएं या फ़िर गौमांस को खाने की अनुमति दे दी जाय? इसका मतलब हुआ कि या तो थप्पड़ पर भी पाबन्दी लगा दी जाय या फिर किसी को जान से मारने की भी छूट दे दी जाये। क्योंकि हम आई.एस.आई.एस.के चंगुल से किसी मासूम की जान नहीं बचा सकते हैं इसीलिए हमें खून करने की अनुमति मिलनी चाहिए? चलिए शुरुआत तुम से करें। इस मांग को उठाने के लिए तुम अपनी जान ही कुर्बान क्यों नहीं कर देते?
- गौहत्या बंदी सही दिशा में उठाया गया पहला अच्छा कदम है। अगर सारी दुनिया में ही मांस खाना बन्द हो जाये तो इससे अच्छी बात और क्या होगी? यह पर्यावरण और अर्थव्यवस्था दोनों के

लिए एक वरदान साबित होगा। अगर तुम सचमुच दूसरे जानवरों के लिए चिंतित हैं तो गौहत्या बंदी पर चिल्लाना छोड़ कर पशुअधिकार कार्यकर्त्ता बन जाइए।

१९

गाय के दूध पर भी पाबन्दी होनी चाहिए।

गाय के दूध पर भी पाबन्दी होनी चाहिए क्योंकि दूध निकालते हुए तुम गाय को तकलीफ पहुंचाते हैं।

अग्निवीर:

तुम्हारे मन में गाय के लिए अचानक इतना प्यार कैसे उमड़ आया? कारण कोई भी हो लेकिन अगर तुम सचमुच ऐसा मानते हैं तो तुम पुरे शाकाहारी बन जाओ। और अगर तुम्हारे अन्दर सचमुच जानवरों के लिए दयाभाव हैं, तो सबसे पहले तुम्हे इस गौहत्या बंदी का स्वागत करना चाहिए।

२०

दुनियाभर में हो रही गौहत्या का क्या?

सारी दुनिया में गौहत्या होती है। उन्हें क्यों नहीं रोकते? क्या वो सब तुम्हारी माँ नहीं हैं?

अग्निवीर:

- सार्वजानिक शौचालयों का उपयोग बहुत से लोग करते हैं तो तुम अपने घर को उनकी सुविधा के लिए क्यों नहीं खोल देते?
- बहुत से मासूम आई.एस.आई.एस. द्वारा सीरिया में क़त्ल किये जा रहे हैं ,सऊदी अरेबिया में बहुतों के सिर कलम किये जा रहे हैं

तो क्या इससे हम भारत में हत्या पर से प्रतिबन्ध उठा लें?

- उनको उनके देश की संस्कृति और सभ्यता मुबारक हो। मेरे देश में मेरे लोगों की संस्कृति का पालन होगा।

२१

पर यह सिर्फ तुम्हारा ही देश नहीं है।

यह सिर्फ तुम्हारा ही देश नहीं है। यहां अलग-अलग रस्मों और परम्पराओं वाले करोड़ों लोग रहते हैं।

अग्निवीर:

- और यह सिर्फ तुम्हारा देश भी नहीं है। यहां विविध रस्म और परम्परा के ऐसे भी करोड़ों लोग रहते हैं जो गौमांस नहीं खाते।
- इसीलिए मैं अपनी हर मर्जी को लोगों पर नहीं थोपता। मैं बहुसंख्यक लोगों के दृष्टिकोण के साथ ही रहता हूं जब तक वो किसी के लिए हानिकारक और अहितकर नहीं होते हैं। गौहत्या बंदी से किसी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचती है। उससे सिर्फ कुछ विकृत लोगों की स्वार्थी लालसा और पैसे बनाने वाले कुछ वर्ग के लोगों को ही तकलीफ होती है। इसके विपरीत, गौहत्या से पर्यावरण को नुकसान पहुंचता है और गरीबी बढती है।

२२

अग्निवीर, तुम काफी प्रतिक्रियावादी और उद्दंड लगते हो।

अग्निवीर:

तुम मेरी माँ को मारने की बात करते हो, तो क्या में तेरी आरती उतारू?

२३
अगर गाय तुम्हारी माँ है तो तुम्हारा बाप कौन है?

अग्निवीर:

- यही फर्क है सज्जन और बेशर्म में। जिससे भी हमारा पालन होता हो हम उन्हें माँ मानते हैं। हम हर स्त्री में माँ को देखते हैं। हम धरती, देश, नदी, गाय, संस्कृति, भाषा इन सभी को माँ समझते हैं क्योंकि ये हमें नि:स्वार्थ भाव से बहुत कुछ देती हैं। इन सबकी हिफ़ाजत में हम इन्सान बन कर जी सकते हैं। लेकिन दुर्जन हमेशा से ही हर स्त्री, हर उपकारक पर बुरी नज़र रखता हैं। ये दलाल लोग नि:स्वार्थ भाव से सेवा करने वालों का सबकुछ बेचने से भी नहीं चूकते। उनको मातृशक्ति और मातृत्व का गन्दा मजाक उड़ने में ही मजा आता है। यह लोग स्त्रीत्व का सम्मान कभी कर ही नहीं सकते। तुम्हें शर्म आनी चाहिए ऐसा सवाल पूछते हुए।
- और अब सुन। यहां तक कि तुम्हारी अपनी माँ भी हमारे लिए माँ ही है। अब सोच के बता, तुम्हारा ये बेशर्म सवाल तुम्हारी माँ का कैसा अपमान करता होगा?

२४
मैं एक गौमांस खाने वाला हिन्दू हूं।

मैं एक हिन्दू हूं और गौमांस खाता हूं तो क्या मैं इससे कम धार्मिक हो जाता हूं ? सोचो!! (ऋषि कपूर – अभिनेता)

अग्निवीर:

मैं तुम्हारे लिए क्यों सोचूं? क्या सालों के इस व्यसन से तुम ने अपनी सोचने

समझने की शक्ति को भी खो दिया है? लेकिन इस बीच हमने अपना काम कर दिया और हम गौहत्या पर प्रतिबन्ध लगवाने में कामयाब हो गए।

२५

तो अब तुम किसी के साथ बीफ (गौमांस) नहीं खा सकते।

तो अब तुम महाराष्ट्र में किसी से बीफ़ (बहस) तो कर सकते हैं लेकिन किसी के साथ बीफ (गौमांस) नहीं खा सकते। (फ़रहान अख्तर – अभिनेता)

अग्निवीर:

बिलकुल सही। अच्छा हुआ की सच्चाई तुम्हारी को नजर आ रही है। लेकिन याद रखना कि तुम भूल कर भी हमारे साथ बीफ पर बहस मत करना वर्ना तुम्हें पछताना पड़ेगा।

२६

मिडिया और बॉलीवुड में सभी गौहत्या बंदी के खिलाफ़ हैं।

अग्निवीर:

- गौभक्षकों की मूर्खतापूर्ण दलीलों में उनके दिमाग का दिवालीया-पन दिखाई देता है।
- अगर वो लोग इसके खिलाफ़ हैं तो इससे क्या फर्क पड़ता है? जो बीफ़ इंडस्ट्री के ख़त्म होने से बेरोजगार हो गए हैं, उन्हें कोई वैध रोजगार दिलाने के लिए इन में से कितनों ने कुछ करोड़ भी दिए हैं?

२७

मुझे गौमांस का स्वाद पसन्द है।

मुझे गौमांस का स्वाद पसन्द है। तुम भी खा कर देखो, तुम्हें भी पसन्द आएगा।

अग्निवीर:

मुझे तुम जैसे लोगों का ताडन करने में मजा आता है, तुम भी ऐसा कर के देखो, तुम्हें भी गौभक्षकों को ताड़ने में मजा आएगा।

२८

मैं गौमांस खाता रहूंगा, तुम्हे जो करना हे कर लो।

अग्निवीर:

मैं जहां भी, जब भी, जैसे भी होगा अपनी पूरी ताकत से तुम्हारा विरोध करता रहूंगा, जो चाहे कर लो।

२९

मुझे तुममें नया बाल ठाकरे नज़र आ रहा है।

अग्निवीर की बढती हुई ताकत चिंता का विषय है। मुझे इस के रूप में नया बाल ठाकरे नज़र आ रहा है।

अग्निवीर:

इसके लिए तैयार रहो।

अध्याय ५

अग्नि की हुंकार- गौमांस, हत्या और मीड़िया

औरों की हानिरहित भावनाओं का सम्मान करो। खुद की रक्षा करो।
अगर इनमें टकराव हो तो उसे चुनो जो अधिक उदार और मानवीय हो।

-अग्निवीर

पिछले दिनों मीड़िया, बॉलीवुड़, राजनीति और कॉरपोरेट सेक्टर के विकृत उदारवादियोंने जो नौटंकी की उसे देखकर फ़िल्म “शोले” में असरानी द्वारा अभिनीत अंग्रेजों के जमाने के जेलर की याद ताज़ा हो गई। फिल्म में जेलर अपनी डींगें कुछ इस तरह से मारता है जैसे हिटलर भी उसके सामने कुछ न हो। लेकिन पिछवाड़े पिस्तौल लगाने की बात सुनने भर से ही वह कैदिओं को बाहर निकलने के दरवाजे तक सही सलामत छोड़ आता है।

ये विकृत उदारवादी भी इससे कुछ अलग नहीं हैं। वे जानते हैं कि हिन्दू आस्था को चोट पहुंचाना न तो ख़तरनाक है और न ही किसी मनोरंजन से कम।

लेकिन जब उन्हें दुनिया में खुले घूमते राक्षसों से मुकाबला करना पड़ जाए उस समय वे पतली गली से भागते नज़र आएंगे। 'वीर योद्धा' उत्तर की एक कथा महाभारत में आती है। वह अपने महल में स्त्रियों के बीच तो अपनी वीरता का बख़ान बहुत बढ़ा-चढ़ा कर करता है लेकिन रणभूमि में सामने खड़े शत्रुओं की विशाल सेना को देख उसके होश उड़ जाते हैं। उसकी विचलित अवस्था और कायरता को भांप अर्जुन खुद उस युद्ध की बागड़ोर संभालता हैं।

हम भी यहां इन आधुनिक उत्तरों की नकेल कसेंगे –

१

गाय मेरी तो माँ नहीं है, मैं बीफ़ पार्टी करता रहूंगा।

गाय तुम्हारी माँ होगी मेरी नहीं। आखिर बीफ़ खाने वाले हिन्दुओं के भी कुछ अधिकार हैं। मैं "बीफ़ पार्टी" करता रहूंगा।

अग्निवीर:

तुम्हारी यह दलील मत-मतान्तरों, नामी मजहबी शख्सियतों, पैगम्बरों, मजहबी किताबों, अभिभावकों पर भी लागू होती है। मैं देखना चाहता हूं कि कौनसे सच्चे उदारवादी में इतना दम है कि वे निचे लिखी हुई पार्टियों का आयोजन कर सकें:

- उस इस्लाम मजहब की किताब को जलाना जो 'शांति का मजहब' है।

- उन इस्लामी शख्सियतों, नबियों के कार्टून बनाना जो ‘शांति के मजहब’ से सम्बन्ध रखते हैं।
- उन तीर्थ स्थानों (ज़ियारत या हज़ की जगहों) के फोटो फाड़ना जो ‘शांति के मजहब’ से ताल्लुक रखते हैं।

अगर तुम अपने उदारवादी विचारों के इतने ही पक्के हो और अपने अधिकारों के लिए इतने ही बेताब हो तो ज़रा इस तरह की पार्टियों का आयोजन कर के देखाओ। इन पार्टियों की जगह और पतों को भी खुले तौर पर बताओ। उनके विड़ीयो भी उतारो और इन विड़ीयो और तुम्हारे पतों को उन अमन पसंद लोगों के बीच प्रसारित करने में हम तुम्हारी मदद करेंगे जिनके अधिकारों की रक्षा करने का तुम दिखावा करते हो।

देखते हैं कि कितने मरखंडे काजू, भोसा डे, फ़टेहाल एक्टर, फ़सादउद्दीन वहशी जैसे ‘महान उदारवादी’ इस काम के लिए आगे आते हैं।

२

मैं अपनी थाली में क्या परोसूं ये मेरी मर्ज़ी है।

मैं अपनी थाली में क्या परोसूं ये मेरी मर्ज़ी है, तुम तय करनेवाले कौन हो?

अग्निवीर:

- मैं अपने चूल्हे में क्या जलाऊं ये मेरी मर्ज़ी है। मैं अपनी गन्दगी किससे साफ़ करूं ये मेरी मर्ज़ी है। मैं अपना थूक कौन से कागज़ से साफ़ करूं ये मेरी मर्ज़ी है। इस तरह की सनकी मार्जियों की कोई सीमा नहीं होती। इस में किसी भी मत-मतान्तर की किसी पवित्र किताब का कोई पन्ना, कोई आयत या कोई तस्वीर भी शामिल है जो कि दूसरों के लिए बहुत पवित्र है, पर मेरे लिए नहीं।

- तुम जैसे विकृत उदारवादी जब यह जान लेते हो कि खेल अब ख़तरे से खाली नहीं है, तब पीछे हट जाते हो। तुम लोग हिन्दुओं का अपमान इसलिए करते हो क्योंकि हिन्दू असल में शांतिप्रिय हैं। लेकिन जो शांति दूत होने का दावा करते हैं उनके ख़िलाफ़ मुंह भी खोलने की हिम्मत तुम नहीं रखते। क्योंकि तुम्हें पता है कि ऐसा करने से तुम शांतिदूतों के गुस्से का शिकार बन जाओगे और हो सकता है कि तुम्हारी आत्मा को ही हमेशा के लिए शांति दे दी जाए!

अग्निवीर सच्चे उदारवाद का अनुयाई है। औरों की निर्दोष भावनाओं का सम्मान और खुद की रक्षा, अगर इन दोनों में आपस में कोई टकराव हो, तो जो ज्यादा उदार और मानवीय हो उसका चुनाव हम करते है।

३

दादरी की घटना पर विरोध जताने के लिए मैं बीफ़ खाऊंगा।

अग्निवीर:

कुछ महीनों पहले नागालैंड में एक बलात्कारी को मार ड़ाला गया, अब क्या इस के विरोध में तुम बलात्कार भी करोगे?

४

मैंने अभी-अभी बीफ़ खाया है। आओ और मुझे मार दो। – भोसा डे

अग्निवीर:

तु खुद ही अपने आप को मार दे। बालकनी से कूद जा नहीं तो बहुत ही बुरा होगा।

५

मेरे पास आओ, मैंने बीफ़ खा लिया है।

मैंने बीफ़ खा लिया है। कमज़ोर लोगों को धमकाने की बजाए मेरे पास आओ। मेरे पास जो डंडा है वो तुम लोगों का इंतज़ार कर रहा है और यह डंडा अब बेसब्र हुआ जा रहा है। - मर खंडे काटू

अग्निवीर:

- क्या तुम्हारा ये ट्वीट उस भीड़ के जिसका अपना ट्वीटर अकाउंट भी नहीं है।
- तुम वही हो न, जिस ने ग़ांधी को ब्रिटिश और नेताजी को जापानी एजेंट बताया था?
- तुमने सलमान रश्दी की निंदा करते हुए कहा था कि जनहित से तालमेल रखने के लिए स्वतंत्रता का अधिकार, उचित प्रतिबंधों के साथ दिया जाना चाहिए। उस वक्त कहां था तुम्हारा डंडा?
- मैंने अभी-अभी तुम्हें सूअर कहा है, तुम मेरे पास आओ। मेरे पास तुम्हारे डंडे का इलाज़ है।

६

गाय किसी की माँ नहीं हो सकती। मैं बीफ़ खाता हूं।

गाय किसी की माँ नहीं हो सकती, मैं बीफ़ खाता हूं और खाता रहूंगा।

अग्निवीर:

खुद की तरफ देख। अगर एक सूअर किसी का बेटा हो सकता है, तो गाय

किसी की माँ क्यों नहीं हो सकती?

७

लेकिन मैं सूअर नहीं हूं, एक इंसान हूं।

लेकिन, मैं तो सूअर नहीं हूं। एक इंसान हूं। मैं सोचने, बोलने और लिखने की योग्यता रखता हूं।

अग्निवीर:

इसे कहते हैं असाधारण योग्यताओं वाला सूअर! अपना एक विडियो बनाकर सोशल मीडिया पर डाल दो। जल्दी ही तुम्हारी धूम मच जाएगी।

८

अगर गाय तुम्हारी माँ है, तो क्या बैल तुम्हारा बाप है?

अग्निवीर:

- इसलिए तो मैंने कहा कि तुम सूअर हो। अक्लमंद लोग बात के मर्म को समज लेते हैं। लेकिन तुम्हारे जैसे अड़ियल टट्टू लोग किसी बात का मतलब शब्द-दर-शब्द ही लेते हैं। अगर भारत मेरी माँ है तो क्या इसका यह मतलब हुआ कि एशिया मेरी नानी और दुनिया मेरी पड़ नानी है? इसका मतलब सिर्फ यह है कि मेरे देश के लिए मेरी वही भावनाएं हैं जो मैं अपनी माँ के लिए रखता हूं।

- अगर तुम ऐसे ही अर्थ ही लेना चाहते हो, तो वन्दे मातरम् पर प्रतिबंध की मांग करके दिखाओ। फ़िर हम देखेंगे कि स्वाइन फ्लू फैलाने वाले ऐसे सूअरों से कैसे निपटा जाए।

- क्या तुम शांति के मज़हब के अनुयाईओं से यह पूछ सकते हो कि काबा अगर अल्लाह का घर है तो उसका शौचालय कहां है? मैंने देखा है जब कोई पी.के फ़िल्म का एलियन, हिंदुओं पर इस तरह की छींटा-कशी करता है, तो तुम दिल खोल कर उसका मज़ा लेते हो। यहीं पर तुम्हारी असलियत ज़ाहिर हो जाती है। हमेशा शांतिप्रिय हिन्दुओं पर प्रहार और शांतिदूतों के मज़हब के सामने चुप्पी!

९

अगर मैं सूअर हूं तो मेरी पूंछ कहां है?

अग्निवीर:

- तुम ख़ुद ही ढूंढ़ लो। अपनी माँ से पूछो, शायद उसने उसे हराम समझ कर कचरे में फेंक दिया हो। अभी तुमने ही माना है कि तुम सोचने और बोलने की योग्यताएं रखते हो।

- अगर तुम सूअर नहीं हो तो यहां अपनी मोटी बुद्धि और मुर्खता का प्रदर्शन मत करो। कुछ भी ऊटपटांग बकवास करने की जो तुम्हें आदत पड़ गई है, उस पर लगाम लगाओ। सम्मान पाने के लिए सम्मान देना सीखो।

१०

तुम कट्टरवादी हिन्दू हो।

तुम कट्टरवादी हिन्दू हो। तुम बिना किसी कोर्ट-कचहरी के, बिना किसी मुकदमे के भीड़ द्वारा सड़क पर ही इंसाफ किए जाने को सही ठहराते हो।

अग्निवीर:

- तुम एक नस्लवादी हो, जो मेरे जन्म और धर्म के कारण मुझ से नफ़रत करता है। तुम अश्वेतों के विरोधी संगठन कू क्लूस क्लान से अलग नहीं हो।

- भीड़ द्वारा बेकायदा ही मार दिए जाने का समर्थन कौन कर रहा है? तुम या मैं? बल्कि अग्निवीर तो तुम्हारे जैसे हर एक इन्सान के ख़िलाफ़ है जो गैर कानूनी कचहरियां लगाकर फ़तवे जारी करते रहते हैं।

- हम मारे गए निरपराध लोगों और उनके परिवार वालों के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करते हैं। दोषियों को पकड़ने वाले कानून का हम साथ देते हैं।

- जिसके पास थोड़ी भी अक्ल होगी वह जानता है कि मासूमों का कत्ल गलत है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि बलात्कार को सही ठहराया जाए और गाय के कत्ल को वैध करार दिया जाए।

११

कट्टरवादी हिन्दू, मुस्लिमों का दमन कर रहे हैं।

यह इस बात का सबूत है कि कैसे भारत में कट्टरवादी हिन्दू मुस्लिमों का दमन कर रहे हैं। क्या तुम नहीं जानते कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है?

अग्निवीर:

- यह इस बात का सबूत है कि कैसे तुम जैसे विडियो गेम्स के

लतियल, मुस्लिमों के मन में हिन्दूओं के खिलाफ नफ़रत को बढ़ावा देकर इस्लामिक आतंकवाद के कारण का समर्थन कर रहे हैं।

- ये फ़तवा देने वाले तुम कौन हो कि क्या हुआ, किसने किया, किसने समर्थन किया, और किसका क्या इरादा था? अगर तुम्हारे पास सचमुच ही कुछ अहम जानकारी है तो पुलिस को बताओ और न्यायिक प्रक्रिया में मदद करो। किसी टी.आर.पी या अपना नाम चमकाने के चक्कर में एक छुट-पुट घटना को सांप्रदायिक बदले के रंग में रंगकर सनसनी मत फैलाओ। हो सकता है कि ऐसा करना तुम्हें बहुत महंगा पड़ जाए।
- हमारे जैसे हिन्दूओं की वजह से ही भारत धर्म निरपेक्ष है। क्योकि हमारे जैसे हिन्दू ही हर किसी की निजी भावनाओं का सम्मान करते हैं और दूसरों की भावनाओं का सम्मान करने के लिए अपनी इच्छाओं का दमन करने से भी पीछे नहीं हटते। ए. पी.जे अब्दुल कलाम के मौत पर हमने शोक प्रकट किया न कि याकूब मेमन जैसे आतंकियों की फांसी को लेकर सनसनी फैलाई थी।
- तुम गौ प्रेमियों को दोष देते हो कि वे गैरकानूनी तरीके से सड़क पर पीट-पीट कर मार देते हैं। लेकिन इस सच पर पीठ फेर लेते हो कि वे गौभक्त हिन्दू और अग्निवीर की विचारधारा के समर्थक ही थे, जिन्होंने अपनी जान पर खेलकर मृतक के परिवार को भीड़ से बचाया था।

१२

तुम धर्म निरपेक्ष होने का दिखावा मत करो।

खुद को धर्म निरपेक्ष दिखाने की कोशिश मत करो। तुमने गुजरात और मुम्बई दंगों में लोगों को मारा है। तुमने बाबरी मस्जिद को तोडा है।

अग्निवीर :

- तुम मेरी तरफ़ उंगली क्यों उठा रहे हो? अगर किसी भी तरह के दंगे में मेरा हाथ है तो मुझे जेल भेजो, फांसी पर चढ़ा दो। क्या मैं तुम पर उंगली उठाऊं कि तुमने कश्मीर में नरसंहार किया, तुम और तुम्हारे बाप-दादों ने पिछले १३०० वर्षों तक भारत पर आक्रमण किए, लाखों-लाखों के सर काटे, बलात्कार किए और फ़िर भी तुम बाबर और औरंगज़ेब जैसे आतंकी को महिमामंडित करते हो?
- दंगा-फ़साद कोई भी हो गलत है। असहाय स्त्रियों, बच्चों का कत्ल गलत है, फ़िर चाहे वो किसी भी धर्म, जाति या प्रदेश के हों। अग्निवीर ऐसे हर एक दुष्कर्म के खिलाफ़ दृढ़ता से खड़ा है। हम तुम्हारी तरह नहीं हैं जो कश्मीर, बांग्लादेश, पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल में मानवाधिकार उल्लंघन के गंभीर मामलों के आते ही ऐसे गायब होते हैं जैसे गधे के सिर से सींग।
- बाबर के बारे में सच्चाई यह है कि वह एक नृशंस हत्यारा और बलात्कारी था, जिसका नाम गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रेकॉड्स में अब तक जन्मे सबसे विकृत कामांध के रूप में दर्ज किया जाना चाहिए। बाबरी मस्जिद, बाबर के समलैंगिक यौन साथी - 'बाबरी' की याद में एक भव्य पवित्र मंदिर को ध्वस्त करके बनाई गई थी। बाबर की औलादें भी उसी की तरह नरपिशाच थीं। बाबर, बाबरी या बाबर की औलादों के बारे में कुछ भी इस्लामिक या मानवीय

नहीं है। हिन्दूओं को गालियां देने की बजाए बाबर का 'ज़िन्दगी नामा' पढ़ो।

१३

हम पोर्क (सूअर का मांस) खाने के अधिकार का भी समर्थन करते हैं।

हम बीफ़ खाने के अधिकार का ही समर्थन नहीं करते बल्कि हम पोर्क खाने के अधिकार का समर्थन भी करते हैं। देखो, हम हिन्दू और मुस्लिम दोनों के प्रति निष्पक्ष हैं।

अग्निवीर:

- कम से कम सौ करोड़ हिन्दू (और बहुत से मुस्लिम भी) गाय को माँ समान पवित्र मानते हैं। जब कि सूअर, मुस्लिमों के लिए सबसे घिनौना प्राणी है।

- गाय पूजनीय है। सूअर घृणित है। कोई मूर्ख ही इन दोनों को समान मान सकता है।

- एक मुस्लिम को इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि तुम सूअर को मार रहे हैं या उसे खा रहे हैं। वह सिर्फ़ यह चाहता है कि सूअर उससे दूर रहे। लेकिन गाय के साथ जो कुछ भी होता है, हिन्दू को उससे फ़र्क पड़ता है। ऐसे ही जैसे तुम्हारी माँ को अगर कोई कुछ करता है, तो तुम्हें फर्क पड़ता है।

- मुस्लिम जगत में गाय के समानांतर कुछ हो सकता है, तो वह है क़ुरान शरीफ़ या पैगम्बर मुहम्मद या काबा शरीफ़ की तस्वीर या मस्ज़िद में पोर्क खाने का विचार। हिन्दू धर्म में गाय का कत्ल, इस्लाम-ए-पाक के इन प्रतीकों का अपमान करने के बराबर है।

- हम जानते हैं कि तुम तो इन कामों के बारे में सोचने से भी ड़रते हो! अगर नहीं, तो अपना विडियो और पता साझा करो ताकि और मशहूर होने में हम तुम्हारी मदद कर सकें।

अगर हां, तो मेरी माँ की बेइज्जती करना बंद करो।

१४

हम हर उस मुद्दे को उठाएंगे, जो मानवाधिकारों का उल्लंघन करता हो।

अग्निवीर:

- मानवाधिकारों के प्रति अचानक इतना प्रेम क्यों? या ये सिर्फ हिन्दूओं पर प्रहार करने तक ही सीमित है?

- पिछले दिनों, एक सऊदी राजदूत द्वारा दो नेपाली स्त्रियों को कई महीनों तक अवैध रूप से कैद कर के रखने का और उनके साथ बलात्कार करने का संगीन मामला सामने आया। इसके ख़िलाफ़ किसी बॉलीवुडी हस्ती या किसी मीडिया वाले या किसी भी राजनेता ने अपनी आवाज़ बुलंद नहीं की, क्यों? इस घटना को हुए अभी ज्यादा समय नहीं बीता होगा! एक सूवर ने नारीत्व का इतना भयंकर अपमान कर दिया लेकिन तुम लोगों में से किसी ने भी इसके विरोध में अपना मुंह नहीं खोला। किसी ने सऊदी सरकार को कोई खुला पत्र लिखने की ज़हमत नहीं उठाई। शायद इसलिए क्योंकि ऐसा करना काफ़ी खतरनाक हो सकता है। इससे उन ताकतों के नाराज़ होने का अंदेशा है जो आज आतंकवाद के सबसे बर्बर रूप में फैली हुई हैं। इन विकृत उदारवादियों में से बहुतों के ऐशोआराम का आधार पेट्रोडॉलर्स हैं। एक अरसे से मध्यपूर्व (Middle East) द्वारा बॉलीवुड में जारी पूंजी निवेश

से भी सभी वाकिफ़ हैं। मीडिया के एक बड़े तबके को मिलने वाले पैसे की जडें बलात्कारी राजदूत के देश के निकट हैं। उस देश से कॉरपोरेट सेक्टर के लिए कारोबार की और प्रोफ़ेशनल्स के लिए कैरियर की बड़ी संभावनाएं जुड़ी हुई हैं। ऐसे में किसे पड़ी है कि एक गरीब हिन्दू देश नेपाल की एक गरीब हिन्दू स्त्री के बारे में सोचे? अगर ऐसा नहीं है तो ये विकृत उदारवादी इसे स्त्री अधिकार का सबसे अहम मुद्दा बनाएं और मुझे गलत साबित करें।

इन विकृत उदारवादियों से कुछ सवाल -

- उत्तर प्रदेश में शांति-दूतों की भीड़ के कारण मारे गए पुलिस वाले के लिए कोई भी ट्वीट या मीडिया कवरेज़ क्यों नहीं?
- पिछले वर्ष मेरठ में एक लड़की का अपहरण, बलात्कार और जबरन इस्लाम में धर्मांतरण किया गया, इस पर कोई ट्वीट क्यों नहीं?
- हापुड़ में एक मुस्लिम लड़की ने एक हिन्दू लडके से प्रेम विवाह किया। जिस से चिढ़ कर लड़की के मुस्लिम भाइयों ने दोनों को मार दिया। इस पर कोई गुस्सा क्यों नहीं?
- शामली में जावेद, परवेज़ और मन्नान द्वारा एक नाबालिग लड़की का बलात्कार किया गया, इस पर कोई दुःख क्यों नहीं?
- अमरोहा में ग़ालिब और फ़ीरोज़ ने एक स्कूल टीचर पर हमला किया, इस पर कोई ट्वीट क्यों नहीं? उत्तर प्रदेश के मुजफ्फर नगर में शौक़ीन और राहिल ने एक लड़की का बलात्कार किया। इस

पर भी कोई ट्वीट नहीं?

- मुज्जफर नगर के सीकरी में नौशाद, परवेज़, हसन और नज़र द्वारा एक ३० वर्षीय युवती का बलात्कार और अश्लील फिल्मां-कन किया गया, इस पर कोई हो-हल्ला नहीं?

- आज़ाद मैदान मुम्बई में मज़हबी द्वेष के चलते मुस्लिम भीड़ ने दो लोगों को कत्ल कर दिया और पांच महिला सिपाहियों पर यौन हमला किया। इस पर कोई प्रतिक्रिया क्यों नहीं?

- मुज्जफर नगर में एक मुस्लिम स्त्री की इज्जत उसके अपने ससुर ने तार-तार कर दी। बाद में उस स्त्री को उसके अपने पति की माँ और उस बलात्कारी ससुर की बीवी घोषित किया गया - इस पर कोई भी आवाज़ क्यों नहीं उठी?

- पश्चिम बंगाल में जिहादी गुंडों ने एक हिन्दू नाबालिग लड़की टुकटुकी मंडल का अपहरण किया। इस पर कोई कहानी क्यों नहीं?

- कुछ महीनों पहले जब पश्चिम बंगाल की एक नन का बलात्कार हुआ था, तब तुम लोगों ने काफ़ी हो-हल्ला मचाया था। तुम चिल्ला रहे थे कि देखो कैसे कट्टरवादी हिन्दू अल्पसंख्यकों को रौंद रहे हैं। लेकिन, जैसे ही यह सच्चाई सामने आई कि सभी अपराधी बंगलादेश के इस्लामिक जिहादी थे, अचानक ही सारे ट्वीट्स, प्रेस कवरेज़, टी.वी. रिपोर्टर्स आदि उड़न-छू हो गए। तुम्हारी करतूतें एक के बाद एक अपराध करने में मतान्ध मुस्लिमों को बढ़ावा दे रही हैं। तुम साम्प्रदायिक नफ़रत के सबसे बड़े कारण हो!

१५

दादरी की घटना के खिलाफ़ हमने कई ट्वीट्स किये हैं।

अग्निवीर:

- तुम क्या सोचते हो कि मारने वाले तुम्हारे ट्वीट्स पढ़ते हैं?
- सच्चाई तो यहहै कि तुम ये ट्वीट्स मारने वालों के खिलाफ़ न लिखकर अग्निवीर जैसे सहनशील हिन्दूओं के खिलाफ़ लिख रहे हो, जो गाय को अपनी माँ समान प्यार करते हैं। बड़े आराम से तुमने यह मान लिया कि हम गौ प्रेमी हत्यारे हैं। तुम ये ट्वीट्स इसलिए लिख रहे हो ताकि इस घटना का इस्तेमाल कर के तुम हिन्दू धर्म पर प्रहार कर सको और मेरी माँ को खाने की अपनी पैशाचिक लिप्सा को सही ठहरा सको।
- अगर तुम इतने ही जागरूक हो, तो दयापूर्ण और पर्यावरण हितैषी रास्ते चुनो। सौ करोड़ हिन्दूओं की करुणामय भावनाओं का सम्मान करो।

१६

तुम लोगों को मुसलमानों की हत्या करने के लिए उकसा रहे हो।

तुमने अपनी वेब साईट पर शिवाजी का एक चित्र डाल रखा है, जिस में शिवाजी एक कसाई का हाथ काटते हुए दिख रहे हैं। तुम लोगों को भड़का रहे हो कि वे कानून हाथ में लेकर मुसलमानों को मारें।

अग्निवीर:

- तुम्हारी दलील के मुताबिक तो भारत को भगतसिंह, चंद्रशेखर

आज़ाद और नेताजी की शौर्य परंपरा पर भी प्रतिबंध लगा देना चाहिए। ऐसा ही होता है जब नाज़ुक कमसिन हीरो अपनी नाम-र्दंगी को छिपाने के लिए ऐसी खोखली दलीलें देते हैं।

- शिवाजी ने अपने युग में जो भी किया वो उस समय के लिया सही था, जब मुगलों जैसे आक्रांता भारतवर्ष पर जबरजस्ती कब्ज़ा करके बेठे थे। तुम्हें राणा प्रताप, शिवाजी, गुरु गोबिंद और मंगल पांडे जैसे गौ भक्तों का शुक्रिया अदा करना चाहिए कि उनकी बदौलत आज तुम इतने महफ़ूज़ हो कि गौ प्रेमियों को गालियां दे पा रहे हो वरना तुम भी अफ़ग़ानिस्तान में बामियान बुद्ध जैसे ख़तम हो जाते। हमें अपने आदर्शों पर अभिमान है और उनकी इस परंपरा को बरक़रार रखने की हम शपथ ले चुके हैं।

- हमारी सूचना (disclaimer) ध्यान से पढ़ें। हमने जो भी लिखा है वो हमारी सूचना के दायरे में रह कर ही लिखा है। हम अहिंसा, सांप्रदायिक सौहार्द, करुणा और भारतीय कानून का सम्मान करते हैं।

- तुम्हारी दलील के अनुसार तो नब्बे प्रतिशत बॉलीवुड की फिल्मों पर भी हिंसा को बढ़ावा देने के लिए रोक लगा देनी चाहिए। अगर हां, तो यहां समय बरबाद करने की बजाए उनसे जा कर लड़ो। अगर नहीं, तो हिन्दूओं, उनके आदर्शों और उनके आस्था चिन्हों का अपमान करने का दुस्साहस मत करो। इसका अंजाम जानने के लिए कुछ एक्शन फिल्में देख लो।

- गाय के मामले में हम बहुत स्पष्ट हैं कि हिन्दूओं को उनकी रक्षा के लिए जो भी आवश्यक हो वो सब कुछ करना चाहिए और हर

परिस्थिति में उनकी सुरक्षा को सुनिश्चित करने के हर संभव प्रयास होने चाहिएं।

- सभी कापुरुषों के लिए सख्त चेतावनी: शिवाजी, प्रताप, गुरु गोबिंद, बंदासिंह बहादुर, ए.पी.जे अब्दुल कलाम या हमारे दुसरे आदर्श महापुरुषों का अपमान करने से बाज़ आएं और बेकार की नफ़रत को हवा न दें। नफरत सेहत पर बुरा असर डालती है।

१७

तुम आर.एस.एस जैसे आतंकी संगठनों का समर्थन करते हो।

क्या तुम ऐसे कट्टरवादी दक्षिणपंथी संगठनों का समर्थन करोगे, जैसे - बजरंग दल, शिव सेना, वी.एच.पी और आर.एस.एस जो कि आतंकी हैं?

अग्निवीर:

हिन्दू शांत स्वभाव के, नरम दिल और सीधे होते हैं। हम ऐसे किसी हिन्दू संगठन को नहीं जानते जो कभी भी किसी आतंकी गतिविधि में सामिल रहा हो। लेकिन, हां हम हमेशा सही संगठन और उचित कारण का समर्थन करते हैं। गलत संगठनों और गलत कारणों को महिमामंडित करने के हम सख्त खिलाफ़ हैं।

अगर इस्लामिक कट्टरवाद ऐसे ही बढ़ता रहा और तुम्हारे जैसे उदारवादी हिन्दूओं को अपने दृढ़ धर्मप्रेमियों का समर्थन करने से ऐसे ही रोकते रहे, तो शिवाजी और प्रताप पैदा होंगे ही। आखिर हम अपनी जिम्मेदारी पुतिन पर तो नहीं छोड़ सकते कि वह रशिया से आई.एस.आई.एस पर बमबारी करें।

१८

बाल ठाकरे के बारे में तुम क्या कहेंगे?

अग्निवीर:

जब तक वो जिन्दा थे, बॉलीवुड के किसी ऋषि कपूर में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वो गौमांस भक्षण की अपनी लिप्सा को सही ठहरा सके। बल्कि, ये सारे बॉलीवुडी जोकर उनका आशीर्वाद लेने के लिए उनके बंगले के बाहर लाइन लगाकर खड़े रहा करते थे।

ज़ाहिर है कि, आज भी ऐसे किसी नेता की हिंदुत्व को बेहद जरुरत है, जिनका होना ही ऐसे जोकरों के मुंह सिले रखता है। उनके इस खाली स्थान को जल्दी ही भरना होगा।

१९

गांधी भी गौमांस पर प्रतिबंध के खिलाफ़ थे।

अग्निवीर:

तुम चाहते हो कि मैं गांधी का अनुसरण करूं? या फ़िर तुम्हारे कहने का मतलब है कि तुम गांधी का अनुसरण करते हो?

पहली स्थिति में अगर तुम चाहते हो कि मैं गांधी का अनुसरण करूं तो मैं ये चाहूंगा कि तुम शिवाजी का अनुसरण करो और गौ हत्यारों को खत्म करो।

दूसरी स्थिति में मांस खाना छोड़ो, खादी पहनो, आधुनिक गैजेट्स इस्तेमाल करना बंद करो और स्वच्छता मुहिम के सहभागी बनो। हर जगह अपनी नफ़रत और वासना की गंदगी फ़ैलाना बंद करो।

२०

प्राचीन भारतीय संस्कृति गौमांस का समर्थन करती है।

मैँ गौमांस खाऊंगा क्योंकि प्राचीन भारत में भी गौमांस खाया जाता था, तुम खुद अपनी संस्कृति से अनजान हो।

अग्निवीर:

- प्राचीन भारतीय संस्कृति के लिए अचानक उमड़ आए इस प्रेम को देखकर मैं हैरान हूं। दिलचस्प बात यह है कि ये प्रेम तभी उमड़ता है जब तुम अश्लीलता और नग्नता की अपनी विकृत कामांधता को सही ठहराना चाहते हो या प्राणियों से खाने की थाली सजाकर अपनी पैशाचिक वृत्तियों के चोंचले पूरे करना चाहते हो।

- पाषाण युग में इंसान बिना कपड़ों के घूमा करते था, तो क्या अब तुम भी ये इरादा रखोगे?

- प्राचीन काल में भारत एक हिन्दू राष्ट्र था, तो आइए अब फ़िर से भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित कर दें। क्या? नहीं? क्यों? अगर गौमांस इसलिए खाया जाना चाहिए क्योंकि प्राचीन भारतीय इसे खाया करते थे तो हिन्दू राष्ट्र से आपत्ति क्यों? अब क्या सारे बीफ़ प्रेमी ख़त्म हो गए हैं?

- बहरहाल, हिन्दू धर्म की उद्गम स्थली - वेदों में से कोई भी एक प्रामाणिक मंत्र निकाल कर दिखाओ जो गौमांस भक्षण का समर्थन करता हो, अग्निवीर तुम्हारे समर्थन में साथ खड़ा मिलेगा। और अगर तुम ऐसा नहीं कर पाये, तो अग्निवीर प्रताप और शिवाजी के ही अंदाज़ में तुम्हारा इलाज़ करेगा। मंज़ूर? और अब डी.एन.

झा जेसो की मूर्खतापूर्ण अनुसंधानों का हवाला मत देने लगना।

२१

हिन्दू धर्म शास्त्र गौमांस भक्षण का समर्थन करते हैं।

मैं गौमांस खाऊंगा। हिन्दू धर्म शास्त्र जैसे वेद, गीता, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति भी गौमांस भक्षण का समर्थन करते हैं।

अग्निवीर:

- प्राचीन भारत प्रेमी बनने के बाद, गौमांस प्रेमी अब हिंदुत्व प्रेमी बन गया है। विडंबना की पराकाष्ठा देखिए कि यही गौमांस प्रेमी दक्षिण पंथियों के प्राचीन भारत और हिन्दू धर्म के प्रति प्रेम से जल भुन कर २५ वर्ष की आयु में ही गंजा हो गया था!

- वेदों में तो निरपराध मनुष्यों और पशुओं जैसे - गाय की हत्या करने वाले को गोली मारने का आदेश भी दिया गया है। तो चलो हम एक समझौता करें – तुम अपने पक्ष के वेदों का पालन करो अर्थात् गौमांस भक्षण और मैं वेदों के मेरे पक्ष का पालन करूंगा अर्थात् गौहत्यारे ....! सौदा मंजूर है?

- क्या तुम में यह कहने कि हिम्मत भी है कि कुरान पोर्क (सूअर का स) खाने की और पैगंबर का कार्टून बनाने की इज़ाज़त देती है? जैसे ही बात हिन्दू धर्म से इस्लाम पर आती है अचानक तुम्हारी बोलने की आज़ादी ‘मज़हब के अंदरूनी मामलों में दखलंदाज़ी करने से कतराने लगती है? अब यह मत कहने लगना कि तुम इतनी अरबी जानते हो, जो यह कह सको कि कुरान पोर्क और कार्टून का निषेध करती है और पर्याप्त संस्कृत जानते हो जो वेदों

में गौस समर्थन दिखा सको। तुम्हारी औकात और तुम्हारी अक्ल के पैमाने को देखते हुए मैं जानता हूं कि तुम सिर्फ 'झा' जैसे मूर्ख व्यक्तियों की बकवास (जो कि असल में तुम पूरी तरह से समझ भी नहीं पाते) की नक़ल उतारने वाले एक बोदे आदमी हो,जो शांतिप्रिय हिन्दुओं की भावनाओं का मजाक उड़ाने में ही अपनी शान समझता है।

- अगर तुम यह निश्चित तौर पर जानते हो कि कुरान पोर्क और कार्टून का निषेध करती है, तो जिस तरह तुमने हिन्दू धर्म और भारतवर्ष में बीफ़ और पोर्न के निषेध पर हाय-तौबा मचाई थी, वैसी कुरान के लिए कब मचा रहे हो?

- लेकिन, अगर तुम आश्वस्त हो कि कुरान –पोर्क और कार्टून को अनुमति देती है तो इस बात को प्रबलता से कहो।

- लेकिन, अगर तुम इस बात के प्रति आश्वस्त नहीं हो कि कुरान पोर्क खाने या कार्टून बनाने की अनुमति देती है या नहीं तब तुम वेदों के प्रति इतने आश्वस्त कैसे हो कि वेद गौमांस भक्षण का समर्थन करते हैं? क्या तुम यह कहना चाहते हो कि तुम कुरान की अरबी नहीं जानते लेकिन वैदिक संस्कृत के बड़े ज्ञाता हो? या फिर कहीं ऐसा तो नहीं है कि हिन्दुओं की हानिरहित भावनाओं से खिलवाड़ करना तो विडियो गेम खेलने से भी आसान है। लेकिन शांतिदूतों की किसी बात का ज़रा विरोध भी तुम्हें चिरशांति में पहुंचा सकता है!

तात्पर्य यह है : हिन्दुओं के लिए गौमांस भक्षण के वही मायने हैं जो मु-सलमानों के लिए पैगंबर का कार्टून बनाने के हैं। बल्कि कार्टून बनाने से

भी ज्यादा गंभीर अपराध है – गौमांस भक्षण। क्योंकि कार्टून बनाने में कोई मारा नहीं जाता, लेकिन गौमांस खाने के लिए एक माँ सामान प्राणी का क़त्ल होता है। अतः अग्निवीर की सलाह मानें, अन्यों की हानि रहित भावनाओं का सम्मान करें।

- ऐसा क्यों है कि जब इस्लामिक आतंकवाद की बात आती है, तब तुम 'आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता' – ये राग अलापने लगते हो, जबकि कुरान और हदीसों की उपलब्ध अनुवादित सैंकड़ों आयतें खुले तौर पर हिंसा का प्रचार कर रही हैं। लेकिन जब एक अरब हिन्दू तुम से गाय को न मारने की प्रार्थना कर रहे हैं, तुम अचानक वैदिक साहित्य के विशेषज्ञ बन कर गौमांस के समर्थन में हवाले देने लगते हो? हिन्दुओं के मामले में न तो तुम बहुसंख्य आवाज़ों को सुनते हो और न ही तुम्हें हिन्दू धर्म शास्त्रों का रत्तीभर भी ज्ञान है, लेकिन फिर भी तुम अपने विचारों को ऐसे थोपते हो जैसे वो भगवान के वचन हों। लेकिन जब बात इस्लाम की आती है तब तुम बड़ी धृष्टता से यह कहने लगते हो कि आतंक का कोई धर्म नहीं होता, जबकि न तो बहुमत की आवाज़ और न ही इस्लामिक किताबों के प्रकाशित अनुवाद ही तुम्हारा साथ देते हैं।

२२

स्वामी विवेकानंद ने बीफ़ खाने का समर्थन किया है।

विवेकानंद ने कहा था कि गौमांस प्राचीन हिन्दू संस्कृति का एक आवश्यक अंग था।

अग्निवीर:

- अब अचानक ही तुम स्वामी विवेकानंद के भक्त बन गए हैं? क्या तुम को पता है, स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि गाय के लिए प्यार – हिन्दू, जैन और सिख धर्मों के सभी पक्षों को एक सूत्र में पिरोता है। क्या तुम उस सूत्र तो तोड़ना चाहते हैं? कहीं आपका संबंध आईएसआईएस से तो नहीं?
- तुम किस इंसान का कौन सा हवाला दे रहे हो, इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। गौमांस भक्षण वर्तमान हिन्दुओं की भावनाओं को मर्मान्तक पीड़ा पहुंचाता है। गाय की हत्या अमानवीय, पर्याव-रण विनाशक और स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक दुष्कर्म है, जिसके अनगिनत विकल्प मौजूद हैं जो हिन्दुओं की भावनाओं को चोट भी नहीं पहुंचाते। इसलिए गौमांस खाने का कोई मतलब नहीं है।
- विवेकानंद को संपूर्णता से पढ़िए, जो सही हो उसे अपनाइए और जो किसी की निर्दोष भावनाओं को आहत करता हो, उसे नकारिए। यही धर्म है।

तुम प्राचीन इतिहास का हवाला न ही दें तो अच्छा होगा। उस युग की बात न करें जब यह मानने वाला कोई नहीं था कि मूर्तिपूजक होने के कारण हिन्दू दोज़ख की आग में जलेंगे। उस युग की बात न करें जब ध्वज केसरिया हुआ करता था। उस युग की बात मत कीजिए जब भारत ने अपनी पश्चिमी सीमाओं से सांस्कृतिक आतंकवाद का सामना नहीं किया था। उस युग की बात मत करो जब तक पृथ्वीराज चौहान ने एक इस्ला-मिक आतंकी पर दया दिखाने की भयंकर भूल नहीं की थी। उस युग की

बात मत करो जब तक जयचंद ने शत्रुओं का साथ नहीं दिया था। ऐसी बातें आपको किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा सकतीं।

- तुम विवेकानंद का गलत उद्धरण प्रस्तुत कर रहे हो और इसीसे तुम्हारे बद इरादे जाहिर हो रहे हैं। मूल विषय से भटकने के बजाए मैं तुम्हें बता दूं कि अगर तुम ईश्वर का नाम लेकर भी कहो कि गौमांस भक्षण सही है, उससे भी कुछ अंतर नहीं पड़ेगा। क्योंकि हिंदुत्व ऐसी किसी आसमानी किताब पर आधारित नहीं है जिस पर कोई सवाल न उठा सके। हिंदुत्व तो मनुष्य की बुद्धि और समझ पर आधारित है।

बेहतर होगा कि हम आज पर ध्यान दें, लोगों की भावनाओं का सम्मान करें। इस बात को स्वीकार करें कि हिन्दु धर्म अपने ह्रदय में अत्यंत स्वास्थ्यप्रद, पर्यावरण हितैषी, अर्थव्यवस्था के लिए लाभदायक कार्य प्रणाली को समाहित करता है जो कि वर्तमान युग के लिए नितांत आवश्यक भी है। और करुणाशील बनें, आधुनिक जयचंद बनने की कोशिश न करें।

- प्राचीन हिन्दू धर्म में गौमांस की सच्चाई को जानने के लिए गौमांस पर हमारा विडियो देखें जो कि यू ट्यूब पर उपलब्ध है। जिसमें हिन्दू धर्म और विश्व के पुस्तकालय की सबसे प्राचीनतम पुस्तक – वेद पर लगाए गए गौमांस समर्थन के आरोपों का विस्तार से विश्लेषण किया गया है। गौर से पढ़िए – वेद गौहत्यारे के लिए मौत की सजा का प्रावधान करते हैं। प्राचीन भारत के प्रति आपके प्रेम को देखते हुए क्या तुम इस आदर्श न्याय के लिए तैयार हैं? अगर हां, तो कूद जाइए अपनी बालकनी से।

२३

बीफ़ दुनिया भर में खाया जाता है।

बीफ़ दुनिया में सर्वत्र खाया जा रहा है, क्या तुम सारी दुनिया में बीफ़ पर प्रतिबंध लगाना चाहेंगे?

अग्निवीर:

- मच्छर हर जगह पाए जाते हैं, तो क्या इसका मतलब है कि तुम अपने घर में डेंगू को आमंत्रित कर लें? या फिर तुम यह बात मानना चाहते हैं कि तुम में दिमाग नाम की चीज़ है ही नहीं, जो यह निर्णय ले सके कि तुम्हारे लिए क्या श्रेयस्कर है? और इसलिए तुम बाकी दुनिया के पीछे चलना चाहते हैं?

अगर हां, तो मेरी माँ को अपमानित करने की बजाए ऐसे बेअक्ल दिमाग अपना समय विडियो गेम खेलने में लगाएं।

अगर ना, तो दुनिया का उदाहरण देना बंद करें। मैं खुद अपनी बुद्धि से तय करूंगा कि मेरे घर (मेरे देश) के लिए क्या सबसे लाभदायक है।

प्रत्येक सभ्य देश अपनी भावनाओं को ध्यान में रखकर कुछ प्रजातियों के खात्मे पर रोक लगता है। जिसका एक उदाहरण - अमेरिका में बॉल्ड ईगल के वध पर प्रतिबंध है।

भाग ३ : मांस प्रेमियों को मुंह तोड़ जवाब

अध्याय ६

मांस भक्षण – मिथक और असलियत

मांसखोरों और इंसानों में पैरों की संख्या और पूंछ के आलावा भी कुछ अंतर होना चाहिए।

- अग्निवीर

इस अंतिम अध्याय में, मैं मांसभोजी लोगों द्वारा पूछे जानेवाले कुछ सामान्य सवालों के तर्कसंगत जवाब देने का प्रयास करूंगा। ये लोग मांस भक्षण को इसलिए सही ठहराना चाहते हैं क्योंकि इन लोगो को अपनी शंकाओं के ठोस और विश्वसनीय समाधान नहीं मिलते। लेकिन इससे पहले कि हम सवाल-जवाब का सिलसिला शुरू करें, मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैं मांस क्यों नहीं खाता।

न मैं मांस खाता हूं और न ही अंड़े से बनी कोई भी चीज। मैं चाहता हूं कि

हर मांसाहारी मांस खाना छोड़ कर शाकाहारी बने:

सबसे अधिक प्रदूषित उद्योग

क्योंकि मांस और पशु उद्योग आज विश्व के सर्वाधिक प्रदूषण फैलाने वाले उद्योग हैं। आज दिखनेवाली पर्यावरण की हर समस्याओं का संबंध महत्वपूर्ण रूप से इस गैर-ज़रूरी उद्योग से जुड़ा हुआ है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपने आलेख में मांस उद्योग को मौसमी बदलाव, भूमि प्रदूषण, जल प्रदूषण, पानी की कमी और समाप्त होती जैव विविधता का सबसे बड़ा कारण माना है।

भूख और गरीबी का कारण

क्योंकि मांस दुनिया में भूख और गरीबी का सबसे कारण है। जैसे मैं भूखा और कुपोषित रहना पसंद नहीं करता, ऐसा ही मैं धरती माँ के दुसरे बच्चे, और मेरे भाई-बहनों के लिए भी महसूस करता हूं। अगर मैं खुद को मारकर भी उनकी भूख मिटा सकता तो मैं यह भी बड़ी प्रसन्नता से करता।

लेकिन मैं इतना जानता हूं कि अगर लोग मांस खाना बंद कर दें और शाकाहार अपना लें तो वह उतनी ही उर्जा और मेहनत की लागत में दस गुना अधिक मनुष्यों का पेट भर सकते हैं। इसका आधार उर्जा-स्तूप (Energy Pyramid) का वह सिद्धांत है जिसके अनुसार एक यूनिट (Unit) मांस का उत्पादन करने के लिए मांस उत्पादक पशुओं को कम से कम दस यूनिट (Unit) अनाज खिलाना पड़ता है। भोजन श्रृंखला (Food Chain) या उर्जा-स्तूप (Energy Pyramid) की कोई भी पाठ्य पुस्तक देखें। दरअसल आज अधिकतर व्यवसायिक तौर पर होने वाले मांस उत्पादन के लिए यह उर्जा क्षति कहीं ज्यादा है।

हर वो इंसान जो मांस खाना छोड़ता है, वह अपने अलावा और नौ लोगों के पेट भरने का प्रबंध करता है। मांस न खाने से बड़ा परोपकार और क्या होगा? और इससे बड़ा पाप मुझ से क्या होगा कि मैं अपने जीभ के चटखारे के लिए नौ लोगों को भूख से मरने पर मजबूर कर दूं? और यही नहीं, मांस उद्योग जमीन में पानी का स्तर नीचे ले जाने के लिए भी जिम्मेदार है।

क्योंकि मैं सारी मानवता को ही अपना परिवार मानता हूं, इसलिए अपने विश्वरूपी घर में अपने प्यारे भाई-बहनों और मासूम बच्चों की भूख और प्यास का कारण बनने का अपराध मुझे चैन से जीने नहीं देगा।

शाकाहारी विकल्प मौजूद हैं

क्योंकि आज के आधुनिक युग में मैं किसी को जिंदा रहने के लिए शिकार करता नहीं देखता, जैसा कि अफ्रीका में शेर करते हैं। मांस एक गैर-ज़रू-री व्यसन के इलावा और कुछ नहीं है। ऐसा कोई मांस उत्पाद नहीं कि जिसका कोई स्वास्थ्यप्रद शाकाहारी विकल्प उपलब्ध न हो।

मांस स्वाभाविक रूप से दुबारा पैदा नहीं किया जा सकता

क्योंकि मांस स्वाभाविक तौर से दुबारा पैदा नहीं किया जा सकता। किसी जानवर को एक बार क़त्ल करने के बाद नया जानवर पैदा नहीं होता। लेकिन, पेड़-पौधे, वनस्पति आदि अगर एक बार उखाड़ भी लिए जाएं, तब भी वह अपनी जड़ों, तनों या बीजों से दुबारा उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिए मांस भक्षण से पैदा होने वाली भूख और प्यास की अवधि बहुत लंबी और विकट है।

जीवन खूबसूरत है

क्योंकि मुझे मेरे जिन्दगी सबसे ज्यादा प्यार है और मेरे प्रियजनों का जीवन भी मेरे लिए सबसे अनमोल है। ठीक उसी तरह मैं देखता हूं कि सभी मनुष्य अपने प्रियजनों का जीवन अमूल्य मानते हैं। अगर मैं इन में से किसी को मार दूं, तो मैं एक हत्यारा समझा जाऊंगा क्योंकि मैंने जीवन के सबसे अनमोल उपहार को छीन लिया है।

इसलिए मैं उन दूसरी प्रजातियों के साथ ऐसा जुल्म कैसे कर सकता हूं जो कि मेरी ही तरह एक चेहरा और दिमाग रखते हैं, और मेरी ही तरह उसे भी अपनी जान बहुत प्यारी हैं। वो भी मेरी ही तरह मौत के पास जाते हुए ड़रते हैं और उसी तरह की ख़ुशी और गम प्रदर्शित करते हैं जैसा कि मैं और मेरे प्रियजन। क्या सिर्क इसलिए कि मैं उनकी भाषा नहीं समझता या उन्हें मैं अपने से कम बुद्धिवाला मानता हूं? इस दलील के अनुसार तो मानसिक रोगियों को मारना भी न्याय संगत होगा, कोमा में जा चुके मरीजों और अनाथों को मारना भी ठीक होगा।

और क्योंकि ऐसा नहीं है इसलिए मांस-भक्षण भी मेरे लिए उतना ही बड़ा गुनाह है।

१

पेड़-पौधों में भी जान है।

फिर पेड़-पौधों को खाना भी क्यों बंद नहीं कर देते? आख़िरकार, विज्ञान के अनुसार उन में भी जान है।

अग्निवीर:

विज्ञान ने सिर्फ यह साबित किया है कि वनस्पतियां उसी तरह की रासायनिक प्रक्रियाओं और कोशिकामय संरचनाओं को दर्शाती हैं जैसी कि प्राणियों में पाई जाती हैं। विज्ञान ने यह नहीं कहा कि वनस्पतियों के पास भी प्राणियों की तरह ही एक व्यक्तित्व है। किसी भी तरह यह साबित नहीं होता कि पेड़-पौधे भी उसी तरह का दुख: दर्द या ख़ुशी महसूस करते हैं या उसी तरह की चेष्टाएं करते हैं जैसी कि प्राणियों में पाई जाती हैं। पेड़--पौधे उस तरह से प्रजनित नहीं होते जैसा कि प्राणी करते हैं या प्राणियों की तरह मरने के बाद नए पौधे उत्पन्न करना बंद नहीं करते। वनस्पतियों और प्राणियों में काफ़ी महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है। और इसलिए जीव विज्ञान भी प्राणी विज्ञान और वनस्पति विज्ञान की दो अलग-अलग शाखाओं में बंटा हुआ है।

इसलिए, मैं यह नहीं मानता कि वनस्पतियों में भी ऐसा कोई जीवात्मा है जो यह माने कि "मैं आम का पेड़ हूं।" इसके साथ ही ऊपर बताये दये गये कारणों को जोड़कर यह बात और भी साफ़ हो जाती है कि पेड़ों को खाना न्याय संगत है, प्राणियों को नहीं।

लेकिन, अगर हम यह मान भी लें कि पेड़-पौधे भी प्राणियों की तरह ही दर्द का अनुभव करते हैं, फिर भी हम प्राणियों को खाए बिना तो जी ही सकते हैं। लेकिन, हम वनस्पतियों को खाए बिना नहीं रह सकते। यहां हमारे पास कोई विकल्प नहीं बचता। मांस खाने की बजाए वनस्पति को खाकर हम अपने परिवार के दस और लोगों की भूख और प्यास मिटा सकते हैं, उन्हें भोजन और पानी उपलब्ध करा कर। इसलिए सामान्य बुद्धि और बुनियादी मानवता यह कहती है कि हमें कम से कम उन पर तो दया रखनी चाहिए, जिन्हें हम मारे बिना और हमारे परिवार को यातना दिए बिना जीने

दे सकते हैं। नहीं तो फिर हो सकता है कि यही कारण देकर भविष्य में नरमांस भक्षण को भी सही ठहराया जाए।

२

जानवर मांस खा सकते हैं, तो फिर इंसान क्यों नहीं?

बाघ और शेर भी मांस खाते हैं। तो फिर इंसानों के मांस खाने में क्या बुराई है?

अग्निवीर:

शेर, बाघ, चीते और दुसरे मांसाहारी प्राणी मांस खाते हैं क्योंकि प्रकृति ने उनकी संरचना वैसी की है। अगर वे मांस नहीं खाएंगे तो वे मर जाएंगे। वे इस अवस्था में ही नहीं हैं कि विचार कर सकें, विश्लेषण कर सकें या चुनाव कर सकें कि क्या खाना है और क्या नहीं? वो नहीं जानते कि तश्तरी में खाना खाएं या कटोरे में, खाना पकाएं या न पकाएं, मांस को पांच तरह के मसालों के साथ पकाएं या कच्चा खाएं, तंदूर में पकाएं या आग पर भूनें। लेकिन क्योंकि इंसानों के पास यह कौशल है इसलिए सही और गलत का सवाल भी सिर्फ इंसानों से ही सम्बद्ध है।

इंसानों के पास खाने के दो विकल्प हैं – जानवर और वनस्पति। इस बात का सौ प्रतिशत प्रमाण है कि जानवरों खाना – भूख, प्यास, गरीबी और प्रदूषण का कारण है और इसके इलावा जानवरों को खाना वैकल्पिक भी है। इसलिए मेरे जैसा विवेकशील इंसान जानवरों को नहीं खाएगा। वनस्पतियों के बारे में विवाद है, मेरे जैसे लोग यह मानते हैं कि पेड़- पौधे रासायनिक प्रक्रियाओं का समूह मात्र हैं न कि व्यक्तित्वमय आत्मा। इस पर मतभेद हो सकते हैं। लेकिन, वनस्पतियों के इस विवाद पर कोई नि-र्णायक और अंतिम प्रमाण मौजूद नहीं है, इसलिए फिर भी उन्हें भोजन

के रूप में चुनना ज्यादा समझदारी भरा काम होगा बजाए इसके कि हम जानवरों को भोजन के रूप में चुनें। इस तरह बद से बदतर हालातों में भी हमारा गुनाह कम से कम होगा। और इसके इलावा हमारे पास इस हालात में और कोई विकल्प भी नहीं है।

मान लो कि तुम्हारे सामने दो बोतलें रखी हैं, जिन में से किसी एक को पीना तुम्हारी मज़बूरी है। एक बोतल के बारे में तुम को पक्का पता है कि इसमें जानलेवा जहर भरा हुआ है और उसे खोलने से दस और इंसान मरने वाले हैं। लेकिन दूसरी बोतल के बारे में संदेह की स्थिति है कि यह ज़हर है या नहीं, लेकिन उसे खोलने से कोई और मरने वाला नहीं है, तो तुम क्या चुनोगे?

मैं तो बिना कोई विचार किए दूसरी बोतल का चुनाव करूंगा। यही स्थिति पेड़-पौधों के साथ है जो भोजन का कुदरती और मानवीय उपाय हैं।

३

मैं एक नास्तिक हूं। मैं कुछ भी खा सकता हूं।

लेकिन मैं तो एक नास्तिक हूं। मैं ईश्वर और आत्मा में विश्वास नहीं करता। इसलिए पेड़-पौधे या प्राणी सभी समान रूप से जैव रासायनिक प्रक्रियाएं ही हैं। मैं दोनों में अंतर क्यों करुं?

अग्निवीर:

अगर तुम नास्तिक या अज्ञेयवादी हो तो तुम्हारे पास और भी बहुत से कारण हैं कि तुम वनस्पतियों को खाओ न कि जानवरों को। क्योंकि मैं समझता हूं कि तुम खुद को इंसान मानते हो और इंसान होने के नाते मैं समझता हूं कि तुम यह भी मानते हो कि किसी भी विचारशील समाज में

दूसरे इंसानों को दुःख-दर्द पहुंचाना स्वीकार नहीं किया जा सकता।

मैं मानता हूं कि तुम अपने साथियों से प्रेम करते हो। मैं समझता हूं कि तुम सारी मानव जाति को अपना ही परिवार मानते हो। मैं यह मान कर चल रहा हूं कि तुम हर एक मासूम इंसान की परवाह करते हो और इसलिए मैं समझता हूं कि तुम चिकेन टिक्का के मज़े उड़ाते हुए काम से कम और नौ लोगों को भूखा रखना पसंद नहीं करोगे।

तुम यह भी पसंद नहीं करेंगे कि हमारी आने वाली पीढ़ियां महज़ इसलिए हमेशा के लिए रोगी और गरीब हो जाएं कि हम पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते आ रहे हैं। मैं समझता हूं कि तुम जरुर अपने बच्चों से प्यार करते हो और उन्हें अभिशाप देने की बजाए आशीर्वाद देना पसंद करते हो।

अगर मेरी यह समझ सही है तो एक नास्तिक को मांसाहार के ख़िलाफ़ मुहिम का सबसे प्रधान संदेशवाहक होना चाहिए और अगर मेरे यह अनुमान गलत हैं तो एक नास्तिक को मारकर खा जाना उतना ही ठीक है।

४

फ़िर तो दूध पीना भी अपराध है।

फ़िर पशु-पालन करना और उनका दूध पीना भी अपराध है?

अग्निवीर:

खैर, यह सब अस्पष्ट विषय हैं। इस पर अलग-अलग दृष्टिकोण हो सकते हैं, पक्ष-विपक्ष हो सकते हैं, और जिस पर बहस और चर्चाएं की जा सकती हैं। पर इसके बावजूद यह तो पक्का है कि अगर पशुओं का दूध पीना अपराध है तो उनकी हत्या करना तो उससे भी बड़ा अपराध है। इसलिए भले ही इन कुछ मुद्दों पर हमारी राय अलग-अलग हो, हमें कम से कम

प्रकृति, मानवता और प्राणियों के खिलाफ़ ऐसे गंभीर अपराध करने से बचना चाहिए।

उदाहरण के लिए हम किसी की हत्या को यह कह कर सही नहीं ठहरा सकते कि उससे छोटे जुर्म जैसे - कॉरपोरेट धोखाधड़ी की व्याख्या कानून में अस्पष्ट है। जो लोग यह कहते हैं कि पशु-पालन करना और पशुओं का दूध पीना भी अपराध है, उनके लिए तो और भी ज्यादा और बड़े कारण हैं कि क्यों उन्हें पशुओं के प्रति दयाभाव रखने के आंदोलन का सूत्रधार होना चाहिए और शाकाहार का प्रचार करना चाहिए।

५

मैं ऐसी जगह पर रहता हूं, जहां पर सिर्फ़ मांस ही मिलता है।

अगर मैं ऐसी किसी जगह चला जाऊं, जहां सिर्फ़ मांस ही मिलता है, तो मैं क्या खाऊं? उदाहरण के तौर पर अगर मैं किसी टापू या अंटार्टिका पर फंस जाऊं तो?

अग्निवीर:

यह बड़ा ही दिलचस्प सवाल है! मुझे बताओ कितनी बार तुम अंटार्टिका गए हो या रॉबिंसन क्रूसो की तरह किसी टापू पर कब तुम फंसे? तुम्हारा सवाल बताता है कि तुम मानते हो कि इस के सिवाए कि तुम्हें किसी टापू पर फंसना पड़े या किसी ऐसी जगह जाना पड़े जहां जिन्दा रहने के लिए मांस खाना जरूरी है, बाकी सभी सूरतों में तुम्हें मांस नहीं खाना चाहिए।

ठीक है, चलो हम तुम्हें छूट दे देते हैं। अगर तुम वाकई ऐसा मानते हो तो जब तुम रॉबिंसन क्रूसो बन जाओ, तब मांस खा लेना। लेकिन ९९.९९९ प्रतिशत इंसान की बस्तियां और हालात तुम से रॉबिंसन क्रूसो बनने की

मांग नहीं करते। जहां भी मनुष्य समुदाय पाया जाता है, उन सभी स्थानों पर तुम्हें प्रचुर मात्रा में शाकाहारी या निरामिष भोजन मिल सकता है। आखिरकार, इंसान जिन जानवरों को खाते हैं वह भी तो वनस्पति ही खाते हैं। (सारी भोजन श्रृंखलाएं वनस्पतियों से ही शुरू होती हैं क्योंकि ऐसा कोई प्राणी नहीं है जो सौर ऊर्जा का रूपांतरण जैव ऊर्जा में कर सके, सिर्फ़ पेड़-पौधे ही ऐसा कर सकते हैं।)

६

अंडे सेहत के लिए अच्छे होते हैं।

अंडों के बारे में आपके क्या विचार हैं? अंडे तो सेहत के लिए अच्छे हैं, सरकार भी अंडे खाने का प्रचार करती है।

अग्निवीर:

सरकारें तो घोटालों के आरोपों में भी घिरी होती हैं। क्या सिर्फ इसलिए कि किसी चीज़ का सरकार प्रचार करती है, हमें उसे खा लेना चाहिए? अगर ऐसी बात होती तो घोटालों के खिलाफ़ और सरकारों को बदलने के लिए आंदोलनों की जरूरत न पड़ती!

अब अंडों पर आते हैं - क्या तुम कभी मुर्गी पालन केंद्र या पोल्ट्री फ़ार्म गए हैं? मुर्गी को जिस तरह की बेरहम यातनाएं देकर अंडे उत्पन्न करवाए जाते हैं, उसे देख कर तुम कांप उठेंगे! (अगर तुम में करुणा नाम की चीज़ हो तो!) इसके साथ ही पोल्ट्री फार्म स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक जगह होती है। अगर तुम यह सोचते हो कि मनुष्यों को कमोड से भी गंदगी उठाकर, खूबसूरत तश्तरी में सजाकर खाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए, तब शायद तुम्हारे पास अंडे खाने के समर्थन का कम से कम एक लचर कारण है। क्योंकि सबसे आधुनिक और महंगे एग फार्म्स

(अंडे उत्पन्न करने के फार्म्स) भी कराची के गंदे बस अड्डे की गंदी टॉयलेट से ज्यादा साफ़ नहीं होते हैं! (वैसे, सब से ज्यादा साफ-सुथरे मीट फार्म, उससे भी ज्यादा गंदे हैं!)

साथ ही, अंडों में कोई ऐसा खास पोषक तत्व भी नहीं पाया जाता जो कि पेड़-पौधों में पर्याप्त मात्रा में न हो। असल में सामान्य शाकाहारी भोजन की तुलना में अंडे तो पोषक चीजों की गिनती में भी नहीं आते। दालों का सेवन अधिक बुद्धिमानी भरा और पर्यावरण के अनुकूल विकल्प है बजाए इसके कि हम किसी चिड़िया का भ्रूण खाकर पर्यावरण नष्ट करें।

७

नैसर्गिक संतुलन बनाए रखने के लिए हमें मांस खाना ही चाहिए।

अगर हम प्राणियों को खाना बंद कर दें, तो क्या उनकी संख्या में बढ़ोतरी नहीं हो जाएगी? और पूरी दुनिया ही उनसे नहीं भर जाएगी? कुदरती संतुलन बनाए रखने के लिए हमें प्राणियों को मारना ही चाहिए।

अग्निवीर:

शायद यह सवाल मेरी जिंदगी में अभी तक पूछा गया सबसे प्यारा और क्रूर सवाल है। प्यारा इसलिए क्योंकि ऐसा लगता है जैसे किसी मासूम बच्चे के मन में यह सवाल उठा है, जिसने अभी-अभी बाल विद्यालय में प्रकृति के बारे में पाठ पढ़ा है। क्रूर इसलिए क्योंकि यह सवाल पूछ कर तुम खुद को रॉबिन हुड की तरह पेश कर रहे हो जो धरती को बचाने के लिए ही मारता है!

लेकिन चलो सच्चाई से रूबरू होते हैं। हम में से कितने लोग असल में जानवर इसलिए खाते हैं क्योंकि सच में हमें पृथ्वी की चिंता है? हम में से

कितने वाकई पर्यावरण को लेकर सचेत हैं? हम में से कितने पर्यावरण-वादी हैं? या यह सिर्फ़ हमारी जीभ की लत ही है जिसे हमें किसी भी तरह पूरा करना ही है।

अब तथ्यों पर आते हैं। यह दलील तभी मानी जा सकती थी जब इंसान एक प्रजाति के रूप में शेर-चीतों की तरह शिकार करके सिर्फ मांस ही खाता। कोई भी मांसाहारी प्राणी मसलन शेर-चीते, हिरण और भेड़ पालने के लिए फार्म हाउस नहीं खोलते, जिससे उन्हें भोजन की आपूर्ति में आसानी हो सके।

इसके विपरीत, इंसानों ने मांस देने वाले जानवरों को उत्पन्न करने के लिए और उन्हें मार कर अपनी जीभ के चोंचले पूरे करने के लिए बड़े-बड़े व्य-वसायिक उद्योग खोल लिए हैं। निन्यानवे प्रतिशत लोग असल में जानवरों को मार कर खाने के लिए उन की खेती करते हैं, उनकी पैदावार करवाते हैं। और इस प्रक्रिया में वे पर्यावरण को अंधा-धुंध बरबाद करते हैं।

इसलिए, यह क्रूर सवाल खुद ही इसके पूछने वाले को ओसामा बिन लादेन के बराबर लाकर खड़ा करता है जो अपने आतंकी हमलों को मानवता की सेवा बताया करता था! (यह एक काला और डरावना सच है कि ज्यादातर आतंकी दूसरे लोगों की हत्या को इंसानियत और ख़ुदा के वास्ते की गई सेवा समझते हैं!)

बहरहाल, मनुष्य सभी प्राणियों और पक्षियों को नहीं खाते मिसाल के तौर पर मनुष्य मांसाहारी प्राणियों को नहीं खाते। अधिकांश मनुष्य कौए, गिद्ध, गीदड़ याबिच्छू को नहीं खाते हैं। तब इनकी संख्या से पृथ्वी भर क्यों न गई?

साथ ही, आगे चलकर यह सोच इस दिशा में भी मुड़ सकती है कि हम

बहुत बीमार और उम्रदराज़ लोगों को भी पका कर खाने की अनुमति दे दें! आखिरकार, बचपन से हमें यही तो सिखाया गया है कि जनसंख्या वृद्धि को ही हम हमारी सबसे बड़ी समस्या समझें।

अगर किसी ने परिस्थिति-विज्ञान (Ecology) का अध्ययन बुनियादी स्तर पर भी किया है, तब भी वह इस तरह की अवैज्ञानिक दलीलें देकर खुद का मज़ाक नहीं बनाएगा।

इसके विपरीत, मांस उद्योग ने कई प्रजातियों को लुप्त होने के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। इसलिए अगर प्रकृति संवर्धन और जनसंख्या संतुलन ही आपके निष्काम लक्ष्य हैं, तो शाकाहार अपनाने में एक पल की भी देर न करें।

८

इंसान के लिए मांस खाना प्राकृतिक है।

दुसरे प्राणियों की हत्या करना एक कुदरती घटना है। सभी शक्तिशाली प्राणी, भोजन के लिए शिकार ही करते हैं। तो अगर इंसान ने भी इस प्राकृतिक विधान का पालन कर लिया तो क्या गलत किया?

अग्निवीर:

पहली बात, जैसे कि हमने पहले देखा कोई भी जानवर दुसरे जानवरों को खाने के लिए उनकी पैदावार नहीं करवाता। कोई भी जानवर कत्लखाने या पोल्ट्री फार्म्स नहीं खोलता। वे तो सिर्फ़ अपनी जरूरत के मुताबिक भूख की सहज़ प्रवृत्ति का पालन करते हैं।

दूसरी बात, सबसे ताकतवर प्राणी मुख्यतः शाकाहारी ही हैं चाहे वो हाथी, घोड़ा, दरियाई घोड़ा, जंगली भैंसा, गैंडा या गुरिल्ला हो।

तीसरी बात, जानवर बिना कपड़ों के रहते हैं, कविसम्मेलन नहीं करते, शौच के बाद अंगों की सफाई नहीं करते और भी बहुत सी ऐसी बातें नहीं करते जो इंसान करता है। वो तो खाने से पहले मांस को पकाते भी नहीं। अगर मांस खाना मनुष्य के लिए इतना ही स्वाभाविक होता तो हम में से अधिकांश, कांटें-चम्मच के इस्तेमाल के बिना ही कच्चे मांस का मज़ा लूटते।

मनुष्यों की संरचना बुद्धिमान बनने के लिए हुई है, यह निर्णय और चयन करने के लिए हुई है कि क्या सही है और क्या गलत, करुणाशील बनने के लिए हुई है, सच्चा और विवेकशील बनने के लिए हुई है। अतः अगर मनुष्य सचमुच ही 'स्वाभाविक' या 'प्राकृतिक' बनना चाहता है तो उसे जानवरों को सताना बंद करना होगा और उनकी सुरक्षा करनी होगी।

इस दलील को गंभीरता से लेने पर कल अगर कोई ताकतवर मनुष्य नरमांस भक्षण करने लगे तो उसे भी सही ठहराना होगा। इस में कोई संदेह नहीं कि भ्रष्टाचार के खिलाफ़ किसी भी मुहिम का कोई आधार नहीं बचेगा। आखिरकार, प्रश्नकर्ता के अनुसार यह स्वाभाविक है कि सबसे शक्तिशाली अपने से कम शक्तिशाली को कुचल दे।

आइए, इसे स्वीकार करें कि यह पैशाचिक वृत्ति है न कि मनुष्य की विचार सरणी। मनुष्यता का मतलब है विश्लेषण, प्रेम, करुणा और कमजोरों को बचाने की चाह। यही वो गुण हैं जो मनुष्य को इतना विशिष्ट और जानवरों से अलग बनाते हैं।

९

जैविक या शारीरिक रूप से मनुष्यों की संरचना प्राणियों को खाने के लिए हुई है।

जैविक या शारीरिक रूप से मनुष्यों की संरचना प्राणियों को खाने के लिए हुई है। देखो, हमारे दांत, हमारी आंते। घास खाने वाले प्राणियों की तरह हमारे पास सेल्यूलोज़ पचाने वाले अवयव नहीं हैं। अतः क्या हमारी संरचना जानवरों को खाने के लिए उपयुक्त नहीं है?

अग्निवीर:

अपनी जीभ के चोंचलों को सही ठहराने का यह एक और लचर बहाना है। मानवों की संरचना घास खाने वाले और मांस खाने वाले दोनों तरह के प्राणियों से अलग है। घासखोरों की तरह हम मानव घास नहीं पचा सकते इसलिए हम घास खाने वाले नहीं हैं। परंतु, मांसखोरों की तरह हम कच्चा मांस खाने के लिए भी नहीं बने हैं। इसलिए हमारे पास बाघों और शेरों की तरह बड़े-बड़े नुकीले दांत या कैनाइन (Canines) भी नहीं हैं। मानवों के कैनाइन अधिक से अधिक गन्ना छीलने के लिए उपयुक्त हैं। (ऐसा करने से पहले अपने दंत चिकित्सक की सलाह ले लें। क्योंकि अगर तुम अधिक मात्रा में जंक फ़ूड का सेवन करते हैं तो शायद गन्ना छीलते-छीलते आपके दांत ही आपके हाथों में आ जाएं!)

मांस अगर हमारे लिए इतना ही प्राकृतिक आहार होता, तो हम लोग बिना पका कच्चा मांस ही खा रहे होते, मांसाहारी जानवरों की तरह जो प्राणियों का पीछा कर, उनका शिकार कर, उन्हें अपने दांतों और पंजों के नाखूनों से मार कर खाते हैं। हमें प्राणियों को बांध कर या पिंजरे में बंद कर, किसी विशेष हथियार से मारने की आवश्यकता न पड़ती। कोई भी मांसाहारी प्राणी ऐसा नहीं करता।

इसके विपरीत, फ़ल-सब्जियां कच्ची खाईं जा सकती हैं। असल में कई स्वास्थ्य प्रणालियां या आहार तालिकाएं अपक्व या कच्चे खाने को लक्ष्य में

रख कर ही बनाईं जाती हैं। परंतु, मांस को आग की आवश्यकता होती है ताकि उसे पकाकर शरीर के ग्रहण करने योग्य बनाया जा सके। आजकल कुछ जगहों पर कच्चे मांस की संकल्पना तेज़ी पर है। परंतु वैद्यकीय सलाह के अनुसार मांस को पकाना ही उचित है ताकि संक्रमण से बचा जा सके। वैसे, कच्चे मांस के नाम से ही कुछ लोग मुंह बनाने लगते हैं, आख़िरकार प्रकृति ने हमारी संरचना क्रूर न बनने के लिए की है।

अतः अगर तुम जीव विज्ञान से प्रेरणा लेते हैं तो शाकाहारी बनिए। हमारे दिमाग, शरीर, बुद्धि और भावनाओं की संरचना सिर्फ़ और सिर्फ़ एक करुणाशील और दयावान इंसान बनने के लिए हुई है।

१०

मेरे समाज में मांस प्रमुख भोजन है।

मैं ऐसे समाज और परिवार में रहता हूं, जहां मांस प्रमुख भोजन है। अचानक मांस खाना छोड़ कर मैं अपने समुदाय में बावला कैसे नज़र आऊं?

अग्निवीर:

यह सच में एक योग्य सवाल है। वाकई यह मुद्दा बहुत से सच्चे और ईमानदार लोगों से जुड़ा हुआ है, जो अपने साथियों के दबाव में आकर मांस खाते हैं।

इसका समाधान यह है कि हम इस मुद्दे को दूसरे दृष्टिकोण से देखें। एक पल के लिए मान लीजिए कि तुम उन नरभक्षी लोगों के झुंड का हिस्सा हैं, जो आपके परिवार के सदस्यों को खाना चाहते हैं। क्या तुम उनके साथ दावत करना पसंद करेंगे? अपनी बेटी की टांग, माँ की उंगलियां और

अपने भाई की आंतड़ियां मसाला करी के साथ खाना पसंद करेंगे?

एक विवेकशील इंसान सम्पूर्ण प्राणिमात्र को ही अपने परिवार का हिस्सा मानता है। लेकिन, अगर तुम सिर्फ मनुष्यों को ही अपना परिवार समझते हों, तब भी मांस भक्षण का अर्थ हुआ कि तुम अपने परिवार के कम से कम दस सदस्यों की हत्या कर रहे हैं।

अतः अगर हम ऐसे ही प्रकृति माँ को सचमुच अपनी माँ मानना शुरू कर दें तो समस्या का समाधान हो जाएगा। तब हम प्रकृति माँ का ध्यान उसी तरह रखेंगे, जैसे हम अपनी माँ का रखते हैं। फ़िर हम अपने वैश्विक भाई--बहनों की भूख-प्यास से खुद व्याकुल होंगे और बहुत से मासूमों को भूख से मारने वाली ऐसी किसी भी चीज़ में सहायक नहीं बनेंगे। तब तुम ऐसे इंसान नहीं रहोगे जो अपनी ईमानदारी के लिए शर्मिंदगी महसूस करता हो, बल्कि तुम सकारात्मक बदलाव के प्रतिनिधि बन जाओगे। इस बात से झिझकने की बजाए कि तुम मूर्ख दिखोगे, तुम्हे अपनी समजदारी पर गर्व होगा।

११

तब तो सभी मांसाहारी लोग हत्यारे हुए।

तो इसका मतलब सभी मांसाहारी लोग हत्यारे हुए और उनसे नफरत करनी चाहिए?

अग्निवीर:

पारिभाषिक रूप से इस सवाल का पहला हिस्सा सही है। कोई भी जो कि किसी भी तरह किसी मासूम की जान लेने में सहायक होता है, वह निस्संदेह एक हत्यारा है। लेकिन हम उन से नफ़रत किए जाने के पक्ष में

नहीं हैं। मांस भक्षण आज एक सांस्कृतिक मुद्दा बन चुका है। इस तरह के सांस्कृतिक मुद्दों को सुलझाने के लिए लोगों को संवेदनशील बनाने की और उन्हें जागरूक करने की आवश्यकता है न कि उन से नफ़रत करने की या तालिबानी फ़रमान निकालने की। ध्यान रखें कि मांस भक्षण के विरुद्ध चलाई जाने वाली पूरी मुहिम की बुनियाद ही प्राणी मात्र के प्रति करुणा और सच्ची संवेदना पर टिकी हुई है। अतः हमें इस नृशंस परिपाटी को मिटाने के लिए मानवीय तरीके ही अपनाने होंगे।

इस बात से हम पूरी तरह सहमत हैं कि मांस भक्षण को रोकने के लिए और स्वास्थ्यप्रद और पर्यावरण और मानव हितैषी आदतों जैसे कि शाकाहार को बढ़ावा देने के लिए समुचित कानून बनाए जाने चाहिएं। लेकिन यह किसी के प्रति नफ़रत की भावना को रखते हुए नहीं होना चाहिए। हम सभी मनुष्य एक ही परिवार हैं। हम सब एक-दूसरे से प्यार से बरतें और एक-दूसरे की उन्नति में सहायक बनें। अतः भले ही तुम मांस खाते हों, मैं आपको फिर भी उसी तरह प्यार करूंगा जैसे एक गाय अपने नवजात बछड़े से करती है और इसलिए मैं तुम सब से निवेदन करूंगा कि मांस खाना छोड़ें।

१२

मांस उद्योग बंद होकर बेरोज़गारी बढ़ाएंगे।

मांस उत्पादन के पशु फ़ार्म और उद्योगों में काम करने वाले बहुत से लोगों का क्या होगा? क्या इस से इन उद्योगों में काम करने वाले बेरोज़गार नहीं हो जाएंगे?

अग्निवीर:

नहीं, बल्कि उनकी उत्पादकता और बढ़ेगी। अगर मांस की बजाए वेलोग

पेड़-पौधे, शाक-भाजी उगाना और अनाज की खेती करना शुरू कर दें, तो वे उतने ही पूंजी निवेश में दस गुना अधिक लोगों को खिला सकते हैं। अतः इससे अर्थव्यवस्था को बहुत बढ़ावा मिलेगा और सबके लिए समृद्धि आएगी और आगे आने वाली पीढ़ियां भी उन्हें कम प्रदूषित वातावरण और कम भुखमरी वाला जीवन देने के लिए आपको धन्यवाद देंगी।

१३

मनुष्यों ने मांस भक्षण किसी कारणवश ही शुरू किया है।

अगर मांस भक्षण इतना ही अस्वाभाविक होता तो मनुष्य इसे खाना शुरू करते ही क्यों?

अग्निवीर:

यही सवाल हत्या, धोखाधड़ी, नस्लवाद, लिंगभेद, आतंकवाद और बलात्कार जैसे गुनाहों के लिए भी उठाया जा सकता है। हर बुराई अज्ञानता और शिक्षा के अभाव में पनपती है। अगर तुम ईसाइयों की धर्म पुस्तक बाइबिल का भी अवलोकन करें, तो उसके पहले ही कांड में कहा गया है कि मूलतः सभी मनुष्य शाकाहारी ही थे। (जेनिसिस १।२९)

मानवता और विश्व के पुस्तकालय की सबसे प्राचीन पुस्तक - 'वेद' - प्रबल शब्दों में निरामिष भोजन को ही मनुष्यों की ख़ुराक घोषित करते हैं। यजुर्वेद का सबसे पहला ही मंत्र प्रस्तावित करता है - 'पशुओं की रक्षा करो'।

समय बीतने के साथ ही बुद्धिमत्ता के अभाव, विकास के अभाव और हिंसक कालखंडों के चलते दूरदृष्टि और समझदारी अपनाने की बजाए तत्कालिक जरूरतों को पूरा करने पर अधिक ध्यान दिया गया। धर्म और संस्कृति

के नाम पर आदिम युग के व्यवहार को अपना लिया गया। इसलिए मांस भक्षण भी लिंगभेद और नस्लवाद की तरह ही व्याप्त हो गया।

जब हम अपने वर्तमान और भविष्य की योजना बनाते हैं, तब हम इस बात की परवाह नहीं करते कि हमने यह काम अतीत में क्यों न किया? हम सिर्फ तर्कसंगति से वर्तमान और भविष्य में उससे होने वाले फायदों का मूल्यांकन करते हैं और उसी के अनुसार योजना बनाते हैं। इसलिए हम लैपटॉप का इस्तेमाल करते हैं, मोबाइल पर बात करते हैं, टी.वी देखते हैं और ट्रेन और हवाई जहाज़ में सफ़र करते हैं। फिर भले ही मानव सभ्यता के इतिहास में यह चीजें पहले कभी न रही हों। हमें इन बातों से परेशान नहीं होना चाहिए कि पूर्व काल में ऐसा कुछ क्यों न हुआ। इसकी बजाए इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि हमें अपने सबसे प्यारे सबसे न्यारे ग्रह को बचाने के लिए तुरंत किस चीज़ को करने की आवश्यकता है। और हमारी जीभ के चोंचलों की सज़ा भुगत रहे, भूख से बिलखते असंख्य लोगों को कैसे पोषण पहुंचाया जाए। हमें इस बात पर लक्ष्य केंद्रित करना होगा कि आज क्या कदम उठाने होंगे ताकि हम आने वाले कलमें हमारे अपने प्यारे बच्चों को उत्पीड़ित करने वाले खलनायक न बन जाएं!

१४

पशु अधिकारों की बजाए तुम मानवाधिकारों की बात कर रहे हैं?

मैं तो सोच रहा था कि तुम के तर्क एक पशु अधिकार कार्यकर्ता की तरह होंगे और मैं आपसे यह कहूंगा कि तुम वनस्पतियों के अधिकारों के लिए काम क्यों नहीं करते? लेकिन तुम तो एक मानवाधिकार कार्यकर्ता की तरह तर्क देते हैं, फ़िर मैं आपका प्रतिवाद कैसे करूं?

अग्निवीर:

उस परमपिता परमात्मा ने इस तरह से इस विश्व की रचना की है कि अगर कोई सच्चे मन से सिर्फ़ मनुष्यों की ही परवाह करने लग जाए तब भी बाकी प्राणियों की परवाह उसमें अपने तुम ही समाहित हो जाती है। आख़िरकार, यह एक अद्भुत सहजीवी विश्व है जिस में प्रत्येक चीज़ एक-दूसरे से जुड़ी हुई है। जो तुम दुनिया को देते हैं वही आपके पास लौट कर आता है।

आपको ऐसी किसी चीज़ का प्रतिवाद करने की आवश्यकता ही क्या है, जो बिलकुल स्पष्ट और सहज ज्ञान से युक्त है? आइए, स्वीकार करें कि मांस भक्षण - लिंग भेद और नस्लवाद की तरह ही अन्धकाल में पनपी हुई एक सामाजिक बुराई है। अभी मुश्किल से एक सदी पहले ही हम ने स्त्रियों को मतदान का अधिकार दिया है। नस्लवाद और जातिवाद को कानूनी रूप से कुछ शताब्दियों पहले ही उखाड़ा गया है। और फिर भी इन बुराइयों के खिलाफ़ संघर्ष चल ही रहा है। इसलिए हम अभी तक इतने विकसित नहीं हुए हैं जितना कि तकनीकी उन्नति के कारण हमें लगने लगा है। आइए, पर्यावरण की बिगड़ती हालत और गरीबी के वैश्विक आंकड़ों को देखते हुए, मांस भक्षण को हम अगल बुराई समझें, जिसे तुरंत समाप्त किए जाने की आवश्यकता है। हमें यह अहसास करना होगा कि मांस का हर टुकड़ा जिसे हम चटखारे लेकर खा रहे हैं, दुनिया में कहीं न कहीं किसी एक गरीब की मौत का कारण बन रहा है और हमारे प्यारे बच्चों के रहने के लिए इस धरती को नारकीय बना रहा है।

उन लोगों के लिए जो वाकई बुद्धिमान हैं और करुणा भरा हृदय रखते हैं निस्संदेह यह पशु अधिकार का मुद्दा भी है। कहीं से यह जंगली मानसिकता हम में घर कर गई है कि यह दुनिया सिर्फ हम मनुष्यों के लिए ही बनी है। हमारी इस हवस ने पर्यावरण को बरबाद कर दिया और हम

यह समझने लगे कि सम्पूर्ण धरती ही हमारी निजी मिल्कियत है। पिछली शताब्दी से परिस्थिति इतनी बदतर हो चलीहै कि वैज्ञानिकों को अब यह डर सता रहा है कि आने वाले समय में भोजन, पानी और ज़मीन जैसी हमारी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी कैसे होगी?

मध्य युग में हमारी इस लालसा के चलते ही हमने धर्म के नाम पर स्त्रियों को पुरुषों से कम समझा। कई धर्माचार्य यह मानते थे कि पशुओं की तरह ही स्त्रियों में भी आत्मा नहीं होती। कई दूसरों की मान्यता थी कि स्त्रियां, पुरुषों के मुकाबले आधी अक़्ल वाली और अपवित्र होती हैं। कुछ इंसान जैसे कि 'अश्वेत लोग' सिर्फ गुलाम बनाने के योग्य समझे गए। तब पिछले कुछ दशकों में प्रबुद्ध मनुष्य इस भयंकर भूल को सुधारते हुए, पहला युग वापस लाए। इस तरह हमने नस्लवाद और जातिवाद को जड़ से उखाड़ा। हम ने स्त्रियों को सामाजिक, बौद्धिक और राजनैतिक अधिकार देके पुरुषों के बराबर समझना शुरू किया। और अब वक्त आ गया है कि हम इस यात्रा को एक कदम और आगे बढ़ाकर पशु-पक्षियों के प्रति भी अपना लगाव दर्शाएं। मानवाधिकार, स्त्री-पुरुष समानाधिकार और पशु अधिकार यह सभी एक ही तरह की समस्याएं हैं जो मानव मस्तिष्क की एक सी अज्ञानता से जन्मती हैं। अतः जो उन्नत हो चुके हैं, उन्हें इस अगले कदम को उठाने के लिए आगे आना होगा।

और वह समुदाय भी जो स्त्री-पुरुष समानाधिकार और मानवाधिकारों को अभी पूरी तरह से अपनाने के लिए तैयार नहीं हो पाएं हैं अगर वो इस में पशु अधिकारों को भी शामिल कर लें तो तेज़ी से उन्नति कर सकते हैं।

लेकिन अगर वे ऐसा नहीं करते तब भी आज की ख़तरनाक स्थिति किसी भी समझदार इंसान को प्राणियों के अधिकारों को अपनाने के लिए बाध्य कर देगी। मानवाधिकारों के गंभीर मसले जैसे असंख्य लोगों की भुखमरी

और गरीबी और पर्यावरण को पहुंचते गंभीर नुकसान ने हमारे बच्चों का भविष्य ख़तरे में डाल दिया हैऔर इन समस्याओं को दूर करने के माध्यम के रूप में हमें पशु अधिकारों को अपनाना ही होगा!

निष्कर्ष

सत्य के प्रकाश को झुठलाने की कोशिश ना करें। सत्यनिष्ठ बनें, विनम्र बनें और विवेकशील बनें। दूसरों से प्यार करें क्योंकि तुम अपने लिए भी दूसरों से यही चाहते हैं। अपने भाई-बहनों और बच्चों के प्रति अपने प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए तुम कम से कम इतना तो कर ही सकते हैं कि अपने प्याले में पड़े चिकन सूप को टमाटर सूप से बदल दें।

मनुष्य बनें, मनुष्यों से प्रेम करें। मांस को ना कहें। याद रखें तुम को वही मिलता है, जो तुम दूसरों को देते हैं।

संजीव नेवर – एक परिचय

आज के समय में वेद, गीता, योग और हिंदू धर्म के मर्म को जानने वाले चुनिंदा लोगों में से एक। वेद, आध्यात्म और सनातन धर्म के बारे में फैली भ्रांतियों और हिंदू-विरोधी लोगों के एक-एक आरोप को अपनी अनेक पुस्तकों में धराशायी करने वाले एक मात्र धर्म-रक्षक। देश और विदेशों में लाखों लोगों की प्रेरणा बनने वाले अग्निवीर नामक संगठन के संस्थापक। अग्निवीर के माध्यम से भारत देश में जाति, मज़हब और लिंग के आधार पर होने वाले अन्याय और धर्म परिवर्तन पर कठोर आघात कर बराबरी और न्याय के लिए काम करने वाले। जातियों की एकता के लिए अग्नि-वीर के मशहूर 'हिंदू दलित यज्ञ' कार्यक्रम के प्रेरणास्रोत। जीवन बदल देने वाली दस से भी अधिक पुस्तकों के लेखक, कवि, वक्ता, दार्शनिक और योगी। अपने प्रेरणा भरे शब्दों से आत्महत्या करने के लिए तैयार कुछ युवाओं को मृत्यु के मुँह से खींच लाने वाले जादूगर। विश्व प्रसिद्ध IIT-IIM के स्नातक, वैज्ञानिक और विश्व के २० सबसे प्रतिष्ठित रिस्क मैनेजमेंट गुरुओं में से एक। संजीव नेवर ढलते हुए धर्म में दोबारा प्राण फूँकने वाले कर्मयोगी हैं।

अग्निवीर - एक परिचय

अग्निवीर आईआईटी - आईआईएम शिक्षा प्राप्त, डेटा वैज्ञानिक, और योगी श्री संजीव नेवर द्वारा स्थापित एक आंदोलन है। सत्य, आध्यात्म और पुरुषार्थ से संसार और स्वयं के लिए सुख बढ़ाना इस आंदोलन का उद्देश्य है। वेद, गीता और योग की शक्तियों से आज की समस्याओं के समाधान में अग्निवीर कार्यरत है। 'शिकायत करने वाले कभी नहीं जीतते, कर्म करने वाले कभी नहीं हारते', इस मंत्र को लेकर अग्निवीर ने समाज में धर्म और कर्म की नयी धारा प्रवाहित की है। अग्निवीर के सम्पर्क में आकर हज़ारों प्रशंसकों के अपने जीवन के लिए बदला नज़रिया उनके पत्रों और संदेशों से झलकता है। अग्निवीर के जीवन बदल देने वाले संदेशों को पढ़ कर आत्महत्या के लिए जाने वाले निराश लोगों का वापस जीवन में लौटना इसी चमत्कार का हिस्सा है।

डर, शर्म और अन्य कारणों से समाज में कभी ना उठाए जाने वाले मुद्दों को अग्निवीर के प्रचंड पुरुषार्थ ने इस छोटे से समय में सबके सामने ला खड़ा किया है। सदियों से जात-पात के बंधनों में ख़ुद को जकड़ कर रखने वाले हिंदू समाज में दलित-यज्ञ की शुरुआत करके धार्मिक और जातियों की एकता का बिगुल फूँका। असामाजिक तत्त्वों द्वारा हिंदू महिलाओं को बहला-फुसला कर धर्म-परिवर्तन करके शादी करने के बड़े घिनौने लव जिहाद रैकेट का पर्दाफ़ाश किया। जिहादी चंगुल में फँसी महिलाओं (कई नाबालिग़ बच्चियों समेत) की रक्षा की। मुस्लिम महिलाओं के समान अधिकारों के लिए चार शादी, ३ तलाक़, हलाला, जिस्माना-ग़ुलामी की जंगली प्रथाओं के ख़िलाफ़ ज़बरदस्त संघर्ष किया। इन सभी मुद्दों पर अग्निवीर के अनथक प्रयास निरंतर जारी हैं।

अग्निवीर ने भारत के संवेदनशील क्षेत्रों में निःशस्त्र आत्मरक्षा कार्यक्रम

आयोजित किए हैं ताकि विषम समय में असहाय लोगों की रक्षा की जा सके। भारत और दुनिया में तेज़ी से फैल रहे इस्लामी कट्टरवाद से युवाओं को बचाने के लिए अग्निवीर के Deradicalisation कार्यक्रम देश रक्षा में अहम स्थान रखते हैं। मज़हबी कट्टरवाद से बहुत से युवाओं को छुड़ाकर सनातन धर्म की मुख्यधारा में लाने का श्रेय अग्निवीर को है। भारत के स्कूलों में पढ़ाए जा रहे झूठे इतिहास को अग्निवीर की चुनौती के बाद सच्चे इतिहास को लेकर लोगों की उत्सुकता और माँग सकारात्मक प्रभाव का प्रमाण है।

अग्निवीर की बीस से ज़्यादा किताबें हिंदू धर्म, आध्यात्म, वेद, योग, प्रेरणा, हिंदू धर्म पर आक्षेप और उनके उत्तर, सामाजिक, जाति, स्त्री-पुरुष एकता, मानव अधिकार, भारत में आक्रमणकारियों का सच्चा इतिहास, मत-सम्प्रदाय-मज़हब, कट्टरता और कई झकझोर देने वाले मुद्दों पर छपी हैं जो अपने विषय पर अद्वितीय हैं और पाठकों में अत्यंत लोकप्रिय हैं।

अग्निवीर भविष्य का सूर्य है। आइए, जुड़िए। परिवार, देश और धर्म की सेवा कीजिए। जीवन को एक मतलब दीजिए। मोक्ष मार्ग पर आरूढ़ हो जाइए।

अधिक जानकारी के लिए देखें-

वेबसाइट: http://www.agniveer.com/

फेसबुक: http://www.facebook.com/agniveeragni

यूट्यूब: http://www.youtube.com/agniveer

ट्विटर: http://www.twitter.com/agniveer

अग्निवीर का सदस्य बनने के लिए, यहां सदस्यता फॉर्म भरें:

http://www.agniveer.com/membership-form/

अग्निवीर को सहयोग प्रदान करने के लिए, यहां जाएँ:

पेमेंट पेज : http://www.agniveer.com/pay/

पेपाल : give@agniveer.com

अग्निवीर

राष्ट्र सेवा | धर्म रक्षा